भारत की महान वीरांगनाएँ

-श्रीराम शर्मा आचार्य

ॐ

भारत की महान वीरांगनाएं

卐

लेखक :
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१३ मूल्य : १५.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

लेखक :
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

पुनरावृत्ति सन् **२०१३**।

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो शब्द मातृशक्ति से

नारी को अबला किसने बनाया ? क्या पुरुष समाज पर ही सारा दोष मढ़ा जाना चाहिए ? नहीं, नारी अपनी वर्तमान अधोगति के लिए बहुत कुछ स्वयं उत्तरदायी है । संसार की नारियों का इतिहास इस बात का प्रबल प्रमाण है कि मातृ शक्ति में अनंत शक्तियाँ निहित हैं । वह किसी बात में पुरुषों से कम नहीं है । वीरता, धीरता, शौर्य, पराक्रम, शासन-प्रशासन, त्याग, तप, बलिदान, विद्वता, वक्तृत्व कला, शोध, आविष्कार आदि जीवन के विविध क्षेत्रों में मातृ शक्ति ने कीर्तिमान स्थापित किए हैं । लज्जा, कोमलता, भीरुता आदि नारी के आभूषण हैं अवश्य पर जब जब आवश्यकता पड़ी है उसने अपने इस बानक को उतार फेंका है और ज्वाला बनकर प्रकट हुई है । यदि उसने अपने आपको शृंगारिकता, भोग्या, पिशुनता, पर निंदा आदि के घेरे में कैद कर लिया है तो इसके लिए बहुत कुछ वह स्वयं दोषी है ।

अब नवयुग करवट ले रहा है । इस युग में नारी को महान भूमिका अदा करनी है । नवयुग के आगमन के इस अवसर पर मातृसत्ता अपनी अंतर्निहित शक्ति को पहिचाने और पुरुष समाज भी उसे वारांगना न समझकर वीरांगना समझे तथा अनावश्यक बंधनों से मुक्त कर उसे युग निर्माण में अपनी भूमिका अदा करने का अवसर प्रदान करे, इसी दृष्टि से इस संकलन में भारत की कतिपय वीरांगनाओं की संक्षिप्त गाथा प्रकाशित की जा रही है ।

आशा है पाठकवृंद प्रस्तुत चरित्रों से प्रेरणा ग्रहण करेंगे ।

-प्रकाशक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषयानुक्रम

	विषय	पृष्ठ
१.	वीरांगना वीरमती	५
२.	रानी दुर्गावती	८
३.	महासनी कर्मवती	१३
४.	रानी सारंधा	१५
५.	राजमाता जीजाबाई	१९
६.	महारानी अहिल्याबाई	२३
७.	नारी रत्न–येसुबाई	२८
८.	महाराणा प्रताप की जननी	३३
९.	दुर्ग रक्षिका राजकुमारी रत्ना	३५
१०.	महारानी लक्ष्मीबाई	४०
११.	वीरांगना–वेलु नाचियार	४४
१२.	वीरांगना भीमा बाई	४८
१३.	रानी चैत्रम्मा	५१
१४.	बेगम हजरत महल	५७
१५.	क्रांतिकारिणी कामा	६२
१६.	रानी गिंडालो	६६
१७.	पार्वती देवी	७०
१८.	स्वतंत्रता सेनानी शहीद–प्रीति लता	७५

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वीरांगना वीरमती

भारतीय नारियाँ अपने आदर्श, चरित्र, सतीत्व रक्षा और वीरता के लिए संसार भर में प्रसिद्ध रही हैं । जब भी देश को आवश्यकता पड़ी है उन्होंने हँसते-हँसते अपने प्राण गँवाए हैं । अग्नि शिखाओं का आलिंगन कर जौहर व्रत का पालन किया है । देश और जाति की रक्षा के लिए न केवल अपने को ही उत्सर्ग किया है वरन् पतियों को भी उनके कर्तव्य पालन के लिए पूरी-पूरी प्रेरणाएं दी हैं ।

वीरांगना वीरमती ऐसी ही आदर्श नारियों में से हैं जिन्होंने देश-द्रोही पति के साथ जीवित रहना कलंक समझा । देश-धर्म की कीमत उन्होंने अपने पति के जीवन से भी बढ़कर समझी । फलस्वरूप अपनी ही नंगी तलवार द्वारा उसका प्राणांत कर आप भी स्वर्ग सिधार गईं ।

चौदहवीं सदी में राजा रामदेव अपनी वीरता और प्रजा पालन के लिए प्रख्यात थे । देवगिरि उनकी राजधानी थी । उन्हीं दिनों दिल्ली में अलाउद्दीन खिलजी राज्य करता था । उसकी क्रूरता से सारा देश परिचित हो चुका था । हिंदुओं को नष्ट करने, उनकी बहू-बेटियों की इज्जत लूटने और हिन्दू राजाओं का राज्य हड़प लेने के लिए वह बेतरह तुला हुआ था । इसी उद्देश्य को लेकर उसने चित्तौड़ पर चढ़ाई की थी । चित्तौड़ तो उसे मिल गया पर जिसके लिए इतनी खून खराबी करनी पड़ी वह पद्मिनी उसे न मिल सकी । अपने बचाव का कोई उपाय न देखकर रानी ने जौहर व्रत करके अग्नि माँ की शरण ले ली थी । साथ में बारह हजार क्षत्राणियाँ और भी जल मरी थीं ।

वहाँ से निराश अलाउद्दीन की आँखें देवगिरि पर जा टिकीं । उस छोटे से राज्य ने खिलजी को साफ-साफ बता दिया था कि देवगिरि अपनी स्वाधीनता अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए खून को पानी की तरह बहा सकता है । राजा अपने वीर मराठा सेनापति पर बड़ा भरोसा रखता था । सचमुच ही उसके रहते यवनों की दाल वहाँ न गल सकी । परंतु दुर्भाग्य कि वह एक अन्य लड़ाई में अपना वीरव्रत पालन करते हुए स्वर्ग सिधार गया ।

राजा को अपने इस सुयोग्य और बहादुर सेनापति के निधन का अपार दुःख हुआ । वैसा निष्ठावान, देशभक्त और विश्वासपात्र सेनापति मिलना अब कठिन था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फिर भी उस स्थान की पूर्ति तो किसी तरह करनी ही थी । अतएव उसके ही जामाता श्रीकृष्ण राव को सेना का सेनापति नियुक्त किया गया । कृष्णराव का विवाह मृत सेनापति की उस एकलौती पुत्री से हुआ था जिसका नाम वीरमती था ।

वीरमती जब बहुत छोटी थी तभी उसकी माँ स्वर्ग सिधार गई थी । पिता बराबर लड़ाई के कार्यों में ही व्यस्त रहा करते थे । अतएव उसका पालन-पोषण राजमहल में ही हुआ था । माँ का प्यार तो न मिल सका था परंतु राजा-रानी इसे अपने ही बच्चों की तरह मानते थे । एक राजकुमारी की भाँति उसका पालन-पोषण हुआ था । राजा के परामर्श से ही पिता ने इसका विवाह कृष्णराव के साथ संपन्न किया था ।

कृष्णराव में यों तो वे सभी गुण विद्यमान थे जो एक सेनापति में होना चाहिए । वह बहादुर था, इसमें कोई संदेह नहीं । वह कुशल लड़ाका था यह भी बात सत्य थी । परंतु सबसे बड़ा जो दुर्गुण था वह यह कि वह विश्वासपात्र न था । लोभ, मोह और प्रलोभनों के अवसरों पर वह क्या से क्या कर बैठेगा-यह कुछ भी ठिकाना नहीं था । इससे ही वीरमती दुखित रहा करती थी । कारण कि स्व्यं उसके अपने स्वभाव के यह विपरीत था । पिता के सभी गुण उसमें विद्यमान थे । वह उनके ही जैसी निश्छल, साहसी, पराक्रमी और निर्भीक थी । स्त्री होते हुए भी वह सच्चे शूरवीरों जैसा हृदय रखती थी ।

अवसर देखकर अलाउद्दीन ने देवगिरि पर चढ़ाई कर दी । राजा के नेतृत्व में सैनिक उसका मुँह तोड़ उत्तर देने के लिए चल पड़े । उनके संगठन, शक्ति, वीरता और रण कौशल के कारण अलाउद्दीन को हार खानी पड़ी और वह भाग खड़ा हुआ । भागते हुए उसे इस बात का आभास मिल गया था कि कृष्णराव से उसको पूरी-पूरी मदद मिल सकती है बशर्ते जीत जाने पर उसे राज्य में कोई ऊँचा पद प्रदान किया जावे । खिलजी ने इस बात को मन ही मन स्वीकार कर लिया था ।

कुछ ही दिनों बाद बड़ी तैयारी के साथ अलाउद्दीन ने पुनः देवगिरि पर चढ़ाई कर दी । पहले की अपेक्षा सेना भी इस बार दूनी थी । राजा आश्चर्य में पड़ गया । परंतु वीर सैनिकों ने पुनः उसी बहादुरी से लड़ने का आश्वासन दिया । इसी बीच कृष्णराव ने एक चाल चली । उसने कहा-"यह अच्छा होगा कि पहले शत्रु सेना की ताकत और रसद का पता लगा लिया जाय । इससे अपने मोर्चा बनाने और शत्रु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर फतह पाने में सुविधा होगी ।'' प्रश्न खड़ा हुआ, आखिर यह कठिन काम करे कौन ? शत्रु सेना में घुसकर उसका पता लगाना, प्राणों की बाजी लगाना था । परंतु कृष्णराव ने कहा-''वह स्वयं ही इस कठिन कार्य को करेगा ।''

कृष्णराव की बहादुरी और साहस के लिए सभी लोग शाबाशी देने लगे । किसी को इस बात का भान न हुआ कि वह अपनी फौज का सारा रहस्य शत्रु को देने वाला है । परंतु प्रखर बुद्धि और पति का स्वभाव जानने वाली वीरांगना वीरमती को शक हो गया । उसे दाल में काला दिखाई देने लगा । उसने पति से कहा-''दुश्मन की सेना असंख्य है । मैं यह नहीं चाहती कि जीते जी आप दुश्मन के हाथों पड़ जाएं । अतएव आप इस तरह अकेले न जावें ।''

कृष्णराव तो एक दूसरा ही स्वप्न देख रहा था । उसने कहा-''प्रिये ! आप किसी बात का तनिक भी भय न मानें, मैं सकुशल ही वापस लौट आऊँगा ।'' यह कहते हुए वह चल दिया ।

वीर सरदार की वीर पुत्री वीरमती बहुत ही सोच में पड़ गई । उसे सोच इस बात का न था कि उसका पति वापस न लौट सकेगा वरन् सोच तो इस बात का था कि निश्चय ही अपने राजा और उसकी सैन्य शक्ति का पूरा का पूरा भेद वह दुश्मन को खोल देगा । भेद खुल जाने, रहस्य पा जाने के पश्चात शत्रु तदनुसार अपना मोर्चा बनावेगा, अपनी तैयारियाँ करेगा । फलस्वरूप देवगिरि पर फतह पाने में उसे अधिक कठिनाई न होगी । देवगिरि का राज्य तो जावेगा ही, साथ ही प्रजा भी तबाह होगी ।

वीर रमणी को चैन न पड़ा । तुरंत ही उसने पुरुष वेष धारण किया, तलवार उठाई और घोड़े पर सवार होकर चुपके-चुपके पति के पीछे चल पड़ी कुछ ही दूर गई होगी कि चलते-चलते उसका घोड़ा रुक गया । उसने देखा कि एक झाड़ी में छिपकर अलाउद्दीन का सेनापति कृष्णराव से भेद ले रहा है । अब तो उसके क्रोध का ठिकाना न रहा । उस वीर सिंहनी के संपूर्ण शरीर में रोष की बिजली दौड़ गई । उसे निर्णय करते देर न लगी कि इस समय क्या करना चाहिए । सोचा, ''ऐसे पति की अपेक्षा राष्ट्र के गौरव, मर्यादा और प्रतिष्ठा की कीमत बहुत अधिक है ।''

उसने बिना एक क्षण रुके तेजी से अपना घोड़ा आगे बढ़ाया । कृष्णराव के ऊपर गरजते हुए सिंह की तरह टूट पड़ी और उसके कलेजे में देखते ही देखते तलवार भोंक दी । यह भवावह दृश्य देखकर यवन सेनापति चीखकर भाग गया ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कृष्णराव ने कराहते हुए उसकी तरफ देखा और दीन स्वर में बोला-"प्रिये वीरमती !" तुरंत ही उत्तर मिला, "तुम्हारी प्रिया, तुम्हारी लोभ-लिप्सा है । ऐसे नीच पापी की प्रिया मैं नहीं ।" उसने आगे कहा-"पति के बिना अब संसार भी सूना ही है । अस्तु, मुझे भी अब वही करना चाहिए जो पति के मरने के बाद पत्नी का धर्म-कर्तव्य होता है ।" दूसरे ही क्षण उसने अपने कलेजे में भी तलवार भोंक ली और पति के साथ ही सदा के लिए अनंत की गोद में सो गई ।

जिस देश में ऐसी-ऐसी नारी रत्न हों उस देश का मस्तक कीर्ति, गौरव और यश से सदैव उन्नत बना रह सकता है । वहाँ पहुँच कर दुश्मन को भी परास्त ही होना पड़ेगा ।

रानी दुर्गावती

भारतवर्ष में पृथ्वीराज के पतन से लेकर अकबर के शासन-काल तक की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थिति पर जब हम विचार करते हैं तो हमको अपने समाज का एक पहलू बड़ा ही परस्पर विरोधी और अबुद्धिमत्ता का दिखाई पड़ता है और सच पूछा जाय तो मुसलमानों द्वारा इस देश के पद दलित किए जाने का मुख्य कारण भी वही था । वह था उस समय के क्षत्रिय राजाओं का मिथ्या अहंकार और मूढ़ता । वे लोग नि:संदेह बड़े वीर थे और समर क्षेत्र में पीठ दिखाना सबसे बड़ा पाप और अपमान समझते थे । पर इस विशेषता ने उनके भीतर एक बड़ा दुर्गुण यह पैदा कर दिया था कि वे अपने सामने किसी को कुछ समझते ही नहीं थे, अपने वंश की प्राचीन उच्चता पर मर मिटते थे । जरा-जरा सी बात पर वे केवल अपनी अपनी श्रेष्ठता के आधार पर आपस में बहस करने लगते और अंत में लड़-कट मरते थे । इसका सबसे बड़ा उदारहण आल्हा-ऊदल का इतिहास है । वे लोग बड़े शूरवीर और रणकुशल थे, पर क्षत्रियों की वंशावलियों की निगाह से 'छोटी जाति' के होने के कारण अन्य नरेशों द्वारा हीन समझे जाते थे । परिणाम यह हुआ कि अपने विवाह-शादी तथा अन्य संबंधों में उनको प्राय: अपमान पूर्ण व्यवहार मिलता था और इसके प्रतिकार स्वरूप वे आक्रमण करके अपमानकर्त्ता को दंड देने पहुँच जाते थे ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यद्यपि हम वर्तमान 'आल्ह खंड' की कपोल कल्पित लड़ाइयों पर विश्वास नहीं करते पर इतना जानते हैं कि उन्होंने बुंदेलखंड में वास्तव में बहुत मारकाट की थी और अंत में सम्राट पृथ्वीराज से लड़कर भारतवर्ष को अपरिमित हानि पहुँचाई थी । वे स्वयं तो नष्ट हो ही गये, पर पृथ्वीराज की सेना को भी ऐसा क्षीण कर दिया कि उसके बाद वह काबुल से आने वाले जबर्दस्त दुश्मनों का सामना करने में असमर्थ हो गई । इस प्रकार विचार किया जाय तो भारत को तत्कालीन मुसलमान आक्रमणकारियों के अधीन बना देने के उत्तरदायी भी अधिकांश में ये अदूरदर्शी, हठधर्मी और मिथ्या अहंकार से ग्रस्त क्षत्रिय राजा और सामंत ही थे ।

दुर्गावती का जन्म ऐसे ही समाज में अब से लगभग चार सौ वर्ष पहले हुआ था । वह कालिंजर के राजा कीर्तिराय की एकमात्र संतान थी, जिससे उसका लाड़-प्यार और पालन पुत्र की तरह ही हुआ था । वह बाल्यावस्था से ही अपने पिता के साथ जंगलों में जाती थी और उनसे शिकार के लिए शस्त्र चलाना सीखा करती थी । तेरह-चौदह वर्ष की आयु में ही वह शस्त्र चालन में इतनी कुशल हो गई कि सिंह, तेंदुआ जैसे भयंकर वन्य हिंस्र जंतुओं का शिकार सहज ही कर लेती थी ।

दुर्गावती के विवाह की घटना क्षत्रियों की उसी हठधर्मिता का एक नमूना है, जिसका जिक्र हम ऊपर कर चुके हैं । कालिंजर से कुछ दूर गोंडवाने का राज्य था जिसका शासक दलपति शाह एक बड़ा वीर और सुयोग्य शासक था । उसकी राज्य व्यवस्था इतनी उत्तम थी और सुरक्षा की दृष्टि से अपनी सेना को भी उसने इतना शक्तिशाली बना रखा था कि मुसलमान शासक उस पर आक्रमण करने का साहस नहीं करते थे । जब दलपति शाह ने राजकुमारी दुर्गावती के रूप और वीरता की चर्चा सुनी तो उसी को अपनी पत्नी बनाने का निश्चय किया । इसके लिए उसने अपने पुरोहित तथा दो-एक सरदारों को कालिंजर भेजा । पर कीर्तिराय ने यह कहकर कि दलपति शाह हमारी अपेक्षा निम्न जाति का है उसकी माँग को अस्वीकार कर दिया । इस पर दलपति ने कालिंजर पर चढ़ाई कर दी । कीर्तिराय भी वीर था पर दलपति के साहस तथा प्रबल सेना के आगे उसे दो-चार मुठभेड़ों के बाद ही, जिनमें सैकड़ों वीर मारे गए, पराजय स्वीकार करनी पड़ी । दलपति यद्यपि विजयी हुआ था, पर उसने कीर्तिराय के साथ किसी प्रकार का दुर्व्यवहार नहीं किया, न पुरानी बातों का कोई जिक्र किया । इससे कीर्तिराय को अपनी करनी पर बड़ा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पश्चाताप हुआ और उसने खुशी-खुशी दुर्गावती का विवाह दलपति के साथ कर दिया ।

विवाह के पश्चात वे दोनों अपनी राजधानी गढ़मंडला में सुखपूर्वक रहने लगे । वर्ष भर पश्चात ही उनके एक पुत्र-रत्न का जन्म होने से चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण छा गया । पर यह सौभाग्य क्षण स्थायी रहा क्योंकि दो वर्ष पश्चात ही दलपति शाह एक भयंकर बीमारी के चंगुल में फंसा गया और उसके बचने की कोई आशा न रही । दुर्गावती ने उसके साथ सती हो जाने का निश्चय कर लिया, पर दलपति ने स्वयं ही तीन वर्ष के राजकुमार के अनाथ हो जाने का भय दिखाकर ऐसा काम करने से उसे सर्वथा रोक दिया ।

पति के मरने पर दुर्गावती ने पुत्र वीर नारायण को गद्दी पर बैठाया और स्वयं संरक्षिका के रूप में राज्य की व्यवस्था करने लगी । उसने यह कार्य ऐसे मनोयोग, योग्यता और दक्षता से किया कि थोड़े ही समय में राज्य की पहले से भी दुगुनी उन्नति हो गई । प्रजा के सुखी और संतुष्ट होने से राज्य का वैभव भी बढ़ने लगा और दुर्गावती का नाम चारों तरफ फैल गया ।

पर इस सफलता के पीछे एक नई विपत्ति सिर उठा रही थी । दलपति की मृत्यु के पश्चात आसपास के शासकों ने गोंडवाने के राज्य को लावारिस समझ लिया था और वे सोच रहे थे कि दो-चार वर्ष में निर्बल होकर वह हमारा शिकार हो जायगा । पर दुर्गावती की सुव्यवस्था और शक्ति को देखकर उनका भ्रम दूर हो गया, साथ ही वे उससे ईर्ष्या भी करने लगे । अगर कोई पुरुष शासक ऐसी उन्नति करता तो संभवत: वे उसकी तरफ इतना ध्यान न देते । पर एक स्त्री का इतना आगे बढ़ना और पुरुषों के लिए भी उदाहरण स्वरूप बन जाना उनको खटकने लगा । इसलिए कुछ ही समय पश्चात मालवा के शासक बागबहादुर ने अकस्मात उस पर हमला कर दिया, पर दुर्गावती ने उसको ऐसी करारी हार दी कि उसे जान बचाकर भागना ही पड़ा ।

उस समय दिल्ली के तख्त पर अकबर विराजमान था । अब वह मालवा तथा बंगाल को अपने अधिकार में करके मध्यप्रदेश (गोंडवाना) की तरफ बढ़ने का इरादा कर रहा था । रानी दुर्गावती ने समय से पूर्व ही इसका अनुमान कर लिया । यद्यपि इतने बड़े बादशाह का सामना करने की ताकत गोंडवाना में नहीं थी, तो भी रानी चुपचाप अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाती रही । उसने निश्चय कर लिया कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहे वह एक स्त्री ही है, पर किसी अन्यायपूर्ण आदेश को नहीं मानेगी और अपनी स्वाधीनता को सहज में नष्ट नहीं होने देगी ।

अकबर के आदेश से कड़ा (इलाहाबाद) के सूबेदार आसफ खाँ ने रानी दुर्गावती का भेद लेने को जासूस भेजे और उसके कुछ लालची तथा चरित्रहीन सरदारों को भी लालच देकर फोड़ लिया । इसके बाद अकबर ने यह चाल चली कि दूत के हाथ एक पत्र दुर्गावती के पास भेजा कि वह अपने प्रधानमंत्री आधार सिंह को दिल्ली भेज दे, जहाँ उससे कुछ शासन संबंधी कार्य कराया जाएगा । इसका उद्देश्य यह था कि अगर दुर्गावती ने इस बात से इन्कार किया तो इसी बहाने उस पर चढ़ाई कर दी जाएगी और यदि मंत्री को भेज दिया तो उसे हर तरह का लालच देकर अपनी तरफ मिला लिया जाएगा और उसी को आगे करके गोंडवाने पर आक्रमण किया जाएगा, जिससे प्रजा में फूट पड़ जाए ।

रानी दुर्गावती तो अपने स्वामिभक्त मंत्री को इस प्रकार की विपत्ति में फँसाने को तैयार न हुई, पर आधार सिंह स्वयं ही दिल्ली चला गया कि वहाँ जाकर अकबर की चालों का पता लगा सके । जब वह अकबर के सामने पहुँचा तो पहले उसने उसको गोंडवाने का शासक अथवा अपना मंत्री बनाने का लालच दिखाया, पर जब उस पर इन चालों का कोई प्रभाव न पड़ा तो उसे जेलखाने में बंद करा दिया और आसफ खाँ को गोंडवाने पर हमला करने की आज्ञा दे दी । इस प्रकार अकबर ने 'महान्' कहलाते हुए भी इस मामले में एक नीचता का ही कार्य किया कि अपने वायदे के खिलाफ आधार सिंह को कैद करके धोखे से रानी दुर्गावती पर आक्रमण कर दिया ।

यह सब करने पर भी मुगल शासक रानी दुर्गावती की तरफ से सशंक थे । इसलिए उन्होंने एक तरफ तो बड़ी सेना और तोपखाना लेकर चढ़ाई की और दूसरी तरफ सैकड़ों गुप्तचर गोंडवाना भेज दिए जो रानी के विरुद्ध प्रचार करें और वहाँ के उच्च पदाधिकारियों को अपनी तरफ फोड़ लें और सचमुच उनको कुछ देशद्रोही व्यक्ति मिल ही गए जो चाँदी के टुकड़ों के लिए मातृभूमि के साथ दगा करने को तैयार हो गए । बदनसिंह नामक फौजी अफसर खुल्लमखुल्ला आसफ खाँ से जा मिला और उसे गढ़मंडला के सब सैनिक रहस्य बता दिए ।

पर अकबर बादशाह की इन तमाम तैयारियों और चालों को देखकर भी रानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुर्गावती विचलित न हुई । उसे इस बात का खेद अवश्य था कि उसके साथियों में से ही कुछ लोग 'घर के भेदिया' बनकर शत्रु को आगे बढ़ने में मदद पहुँचा रहे हैं । तो भी वह अपने आदर्श से एक कदम भी पीछे हटने को तैयार न हुई । उसकी दृष्टि अपने कर्तव्य पालन की तरफ थी, फिर चाहे परिणाम कुछ भी निकले ।

जब मुगल-सेना समीप आ पहुँची तो रानी स्वयं अपनी सेना का नेतृत्व करती हुई आगे बढ़ी । उसकी सबसे बड़ी कमी तोपखाने की थी । उस समय तक तोपों का व्यवहार मुगल शासक ही करते थे, देशी राजाओं के यहाँ वे नहीं बनती थीं । पर रानी ने अपना मोर्चा एक ऐसे पहाड़ी स्थान पर लगाया जहाँ तोपों के गोलों का बहुत कम असर पड़ता था । उसने अपने सैनिकों में यह भावना भरी कि हम धर्म युद्ध कर रहे हैं । अपनी मातृभूमि और घरों की रक्षा करना एक पवित्र कर्तव्य है । जो इससे पीछे हटता है वह 'मानव' नाम का अधिकारी नहीं । मुगल लोग आततायी हैं जो बिना किसी कारण के लूटमार के लालच से हमारे राज्य में घुस आए हैं । उन्हें मारकर खदेड़ देना ही हमारा कर्तव्य है । अपने सैनिकों को इस तरह प्रेरणा देकर रानी स्वयं मुगल सेना में घुस पड़ी और ऐसी मार-काट मचाई कि उनके छक्के छूट गए । आसफ खाँ की गिनती मुगल साम्राज्य के प्रमुख सेनाध्यक्षों में की जाती थी, पर उसे कई मील पीछे हटकर अपनी रक्षा करनी पड़ी ।

पहली पराजय के पश्चात एक ओर तो आसफ खाँ ने झूठ-मूँठ संधि का प्रस्ताव करके रानी को धोखे में डालने की चेष्टा की और दूसरी ओर पुन: कुछ नई सेना और तोपें मँगाकर नये आक्रमण की तैयारी में जुट गया । इस बार भी रानी ने ऐसी वीरता दिखलाई कि शत्रु को बहुत दूर भाग जाना पड़ा ।

इस विजय से गढ़मंडला की सेना में बड़ा उल्लास पैदा हो गया और वे राग-रंग मनाने में डूब गए । कुछ विश्वासघातियों ने चुपके से जाकर इसकी सूचना आसफ खाँ को दे दी । आसफ खाँ तो यही चाहता था, बस उसने तीसरी बार आक्रमण कर दिया । इस आकस्मिक आक्रमण से रानी कुछ विचलित अवश्य हुई, पर उसने जितनी भी सेना इकट्ठी हो सकी उसको लेकर युद्ध छेड़ दिया । सिपाहियों को अधिक उत्साहित करने की भावना से उस दिन उसने सेना नायक का पद अपने पुत्र वीर नारायण को दे दिया । पुराने सैनिक अफसरों ने एक लड़के की अध्यक्षता में कार्य करना अपने लिए अपमानजनक समझा और जान-बूझकर सैन्य संचालन में ढील

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डाल दी । यह देखकर रानी को लोगों की हीन भावनाओं पर खेद हुआ । वह घमासान युद्ध के बीच में कूद पड़ी और सैकड़ों मुगलों को गाजर-मूली की तरह काट डाला । इतने में एक तीर आकर उसकी आँख में लगा जिसे उसने अपने हाथ से ही खींच लिया । जरा देर बाद दूसरा तीर गर्दन में घुस गया । जब वह अशक्त होने लगी तो शत्रुओं के हाथ में पड़ना उचित न समझ कर अपनी छाती में कटार मारकर उसी समय प्राण त्याग दिये । वीर नारायण भी युद्ध करते-करते मारा गया ।

इस प्रकार एक महान वीरांगना की जीवन-लीला समाप्त हो गई, पर उसने अकबर की अधीनता स्वीकार करके देश की गरिमा को लजाने वाले बड़े-बड़े क्षत्रिय नरेशों के मुकाबले में दो बार अकबरी सेना को परास्त करके यह सिद्ध कर दिया कि नारी भी यदि दृढ़ निष्ठा से काम ले तो रणक्षेत्र में भी चमत्कार दिखला सकती है । जिस प्रकार सन् १८५७ के भारतीय स्वाधीनता संग्राम की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की अपूर्व वीरता देखकर अंग्रेजों के सबसे बड़े सेनापति 'सर ह्यु रोज' ने यह कहा था कि भारतीय विद्रोही दल में अगर कोई मर्द था तो वह झाँसी की रानी ही थी । उसी प्रकार हम कह सकते हैं कि सबसे बड़े मुस्लिम सम्राट के मुकाबले में अगर किसी ने स्वाधीनता के झंडे को ऊँचा उठाकर रखा तो वह महाराणा प्रताप के पश्चात रानी दुर्गावती ही थी ।

महारानी कर्मवती

आपत्ति के समय जो व्यक्ति कायर की तरह परिस्थितियों के सामने आत्म-समर्पण न कर कर्तव्य-पथ का अनुसरण कर हर बलिदान देने को तत्पर हो जाते हैं, अंततः विजय उन्हीं की होती है । महारानी कर्मवती का जीवन इस सत्य का जीता जागता उदाहरण है ।

राणा समरसिंह की मृत्यु हो जाने के बाद मेवाड़ का शासन-सूत्र उनकी विधवा रानी कर्मवती के हाथों में आया । रानी ने जीवन की हर सुख-सुविधा का त्याग कर अपने कर्तव्य में निष्ठा-स्थापित की । मेवाड़ का राज-काज ठीक तरह से चलने लगा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारत में उन दिनों मोहम्मद गोरी अपनी सत्ता का प्रसार कर रहा था । उसने छोटे निर्बल राज्यों को हड़पने की नीति अपना रक्खी थी । जहाँ भी वह किसी राज्य के कमजोर होने का समाचार सुनता था, वहाँ आक्रमण कर देता था और राज्य छीन कर अपने साम्राज्य में मिला लेता था । इस प्रकार उसने भारत का एक लंबा-चौड़ा क्षेत्र अपने अधीन कर लिया था । मेवाड़ की स्थिति का उसे पता चला तो उसका अहं यह सोचकर हँस उठा-"एक औरत राज करेगी, क्या खूब ! हुकूमतों की जो बागडोर अच्छे-अच्छे मर्दों के हाथों में ठीक से नहीं ठहरती उसे एक औरत ने अपने हाथों में ले रक्खा है ।" अहंकारी अपने सिवाय और किसी को कुछ गिनता ही नहीं । अपने सामने उसे संसार के सारे लोग तुच्छ दीखते हैं । इसी मूर्खता के कारण ही तो मदमत्त घमंडी बात ही बात में नीचा देख कर अपना मुँह काला कर लेता है ।

मुहम्मद गोरी ने धमकियों से भरा पत्र मेवाड़ भेजा जिसमें कहा गया था कि अगर मेवाड़ हमें सौंप दिया गया तो मैं उसकी हर तरह से रक्षा भी करूँगा और उन्नति का प्रयत्न भी । रानी कर्मवती को वजीफा बाँध दूँगा और सभासदों का पद इसी तरह रक्खूँगा और अगर इसका विरोध किया तो मेवाड़ की ईंट से ईंट बजा कर उसे राजपूतों के खून में डुबा दिया जायेगा ।

पत्र पढ़ा गया तो मेवाड़ के राज-दरबार में सन्नाटा छा गया । सब जानते थे कि आत्म-समर्पण के बदले में, गोरी के पत्र में जो हरियाली दिखलाई गई है, वह सिर्फ जाल में फाँसने के लिए एक छल है । सत्य तो पत्र का अंतिम भाग है । आततायी यवन आत्म-समर्पण और संघर्ष दोनों दशाओं में अत्याचार ही करेगा । बल्कि पराधीनता का जीवन तो बलिदानपूर्ण स्वतंत्रता से कहीं अधिक कष्ट कारक एवं अपमानजनक होगा । सारे सरदार और सभासद चिंतित होकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो उठे । किसी की समझ में न आया कि क्या उत्तर दिया जाये । रानी कर्मवती ने उस कायरता पर सबको धिक्कारा और स्वयं उत्तर लिख कर गोरी के पास भेज दिया ।

पत्र गोरी के दरबार में पढ़ा गया । उसमें लिखा था-"मुहम्मद गोरी ! तुम्हारे लोभ ने तुम्हारी बुद्धि नष्ट कर दी है । तुमने मेवाड़ के उस राज्य पर दृष्टि डाली है, जिसमें घर-घर बलिदान की ही वीर-गाथा गाई जाती है । तुम्हारा यह सोचना भूल है कि मेवाड़ का शासन-सूत्र एक अबला नारी के हाथ में है । तुम अच्छी तरह यह समझ लो कि जिसे तुम अबला समझते हो वह एक राजपूतनी है, जिसने सिंहनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का साहस पाया है । अपने मस्तिष्क से मेवाड़ विजय का स्वप्न निकाल दो । इसी में तुम्हारा कल्याण है । अन्यथा अपनी दुर्बुद्धि का फल पाये बिना न रहोगे ।''

देखते ही देखते मेवाड़ यवन सेना से घिर गया । यह देख राजपूत सरदारों का साहस एक बार फिर गिर गया । लेकिन जब महारानी कर्मवती सैनिक वेश में दरबार में गरजीं तो राजपूतों की तलवारें म्यान से बाहर निकल आईं । रानी ने ललकारा- ''यह संघर्ष न्याय और अन्याय, धर्म और अधर्म का संघर्ष है । अब हमें अपना स्वाभिमान और स्वतंत्रता बचाने के लिए बलिदान पथ के सिवाय और कोई मार्ग नहीं है । हम संघर्ष करेंगे, अंतिम श्वास तक ।'' बस फिर क्या था राजपूत वीर भूखे सिंह की तरह शत्रु पर टूट पड़े और इस तेजस्विता से लड़े कि दुश्मन को मेवाड़ छोड़ कर भागना ही पड़ा ।

रानी सारंधा

बुंदेलखंड के महाराज रुद्रप्रताप के वंशज ओरछा नरेश चंपतराय जब से गद्दी पर आसीन हुए अपने बाहुबल से राज्य का विस्तार करते जा रहे थे । उन्होंने मुगल बादशाह शाहजहाँ को कर देना बंद कर दिया था । मुगल सेनाएं आक्रमण करतीं पर उन्हें मुँह की खाकर वापस लौटना पड़ता । नरेश चंपतराय की वीर गाथाएं बुंदेलखंड के बच्चे-बच्चे की जवान पर छायी हुई थीं । उनका विवाह भी टेकड़ी के राजा अनिरुद्ध सिंह की बहन वीरव्रती सारंधा से हुआ था ।

सारंधा नरेश की वीरता से ही उनकी ओर आकर्षित हुई थी । चंपतराय भी ऐसी वीर हृदया पत्नी पाकर बड़े प्रसन्न हुए थे । उतार-चढ़ाव हर व्यक्ति के जीवन में आते हैं । चंपतराय के जीवन में भी कुछ ऐसी परिस्थितियाँ आ गईं कि उन्हें मुगल बादशाह का समर्थक एवं आश्रित बनने का मन बनाना पड़ा । शाहजहाँ तो ऐसे अवसर की ताक में ही था । उसने चंपतराय का दिल्ली में भव्य स्वागत किया । उस समय कुम्हारगढ़ की जागीर स्वतंत्र थी पर शाहजहाँ उसे अपने राज्य में मिलाना चाहता था । उसने इस कार्य हेतु चंपतराय को भेजा । साहसी चंपतराय ने इस कार्य को बड़ी बहादुरी के साथ संपन्न किया । फिर क्या था ? वे थोड़े ही समय में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शाहजहाँ तथा उनके ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह के कृपापात्र बन गए । दारा ने उन्हें नौ लाख रुपये वार्षिक की जागीर पुरस्कार में प्रदान की । वैभव-विलास के जीवन ने नरेश चंपतराय को पतनोन्मुख कर दिया । धन की मादकता में वे स्वाभिमान को छोड़ बैठे । स्वाधीनता के स्थान पर पराधीनता के जीवन में उन्हें आनंद आने लगा, पर सारंधा को यह सुविधाएं मानों काटने को दौड़ रही थीं । उसका सौंदर्य मंडित मुख उदास रहने लगा । एक दिन चंपतराय ने पूछ ही लिया-'प्रिये ! जब से तुम दिल्ली में आई हो तब से प्रसन्न नहीं दिखाई देती । तुम्हारे मुख मंडल की आभा न जाने कहाँ लुप्त होती जा रही है । जब मैं रात-दिन युद्ध में व्यस्त रहता था उस समय तुम सुखी और संतुष्ट दिखाई देतीं थीं और अब सुख-चैन का समय आया तब तुम्हारा चेहरा कुम्हलाया दिखाई देता है । इसका क्या कारण है ?''

सारंधा दुःखी मन से बोली-''उस समय मैं स्वतंत्र थी और अब परतंत्र हूँ । मैं ईश्वर को छोड़कर और किसी की भी दासता स्वीकार करने को तैयार नहीं हूँ । एक दिन मैं स्वाभिमानी राजा की रानी थी और आज एक मुगल बादशाह के सेवक की पत्नी हूँ । मन में बार-बार यही आता है कि स्वाभिमान से परिपूर्ण जीवन कभी लौटेगा या नहीं ? मुझे स्वतंत्रता प्यारी है । मैं सर्वस्व समर्पित करके भी उसे प्राप्त करने की इच्छा रखती हूँ । आज मैं गुलामी की रोटियाँ खा रही हूँ । गुलामी के जीवन की सुविधाओं से स्वतंत्रता का अभावग्रस्त जीवन कहीं अच्छा है । पर न जाने क्यों यह बातें आपके गले नहीं उतरतीं । आपको मातृभूमि की याद नहीं सताती । आप भले ही सुख की नींद सोयें पर सारंधा का हृदय बुंदेले बच्चों के करुण क्रंदन से फटा जा रहा है ।''

सारंधा की दर्द भरी वाणी चंपतराय को बेचैन करने लगी । मातृभूमि के उद्धार के लिए उनका मन तड़पने लगा । दारा शिकोह भी उनसे असंतुष्ट हो गया और अपनी जागीर वापस ले ली । चंपतराय अपने अपमान को न सह सके । वह ओरछा वापस लौट आए और बिखरी हुई शक्ति को संगठित करने लगे ।

शाहजहाँ पुत्र औरंगजेब जब शासक बना तब वह चंपतराय और रानी सारंधा को अपने मार्ग का कांटा समझकर इनके विरुद्ध षडयंत्र रचने लगा । उसने विशाल सेना बुंदेलखंड में भेजी । घमासान युद्ध हुआ । सारंधा स्वयं सैन्य वेशभूषा में हाथ में नंगी तलवार ले दुर्गा की तरह मुसलमान शत्रुओं को गाजर-मूली की तरह काटने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगी । समरांगण में भगदड़ मच गई । सीमित साधन होते हुए भी दोनों के पराक्रम ने चंपतराय को विजयी बना दिया ।

औरंगजेब भला अपनी पराजय को कैसे सहन करता । दूसरी बार उससे भी अधिक शक्तिशाली सेना बुंदेलों को हराने के लिए भेजी । चंपतराय को अपनी जीवन रक्षा के लिए भूखे-प्यासे जंगलों में भटकना पड़ा । विपन्नवस्था में जब चंपतराय निराश हो जाते उस समय सारंधा ही शक्ति का संचार कर उन्हें आशा बँधाती और उज्ज्वल भविष्य के सुहावने सपने सामने रखकर संघर्ष को जारी रखने की प्रेरणा देती ।

आपत्ति की इन घड़ियों में उन्होंने सोचा कि सहरा के जमींदार इंद्रमणि के यहाँ आश्रय लिया जाये और वहाँ भूमिगत होकर सेना का पुन: संगठन करके सुरक्षा पंक्ति को सुदृढ़ किया जाये । वहाँ दोनों को सम्मानपूर्वक आश्रय तो मिलगया पर मुगल शासन से यह बात छिपी न रह सकी । शीघ्र ही दुर्ग पर घेरा डाल दिया गया । युद्ध प्रारंभ हो गया । आश्रयदाता इद्रमणि बेमौत मारा गया । दुर्ग में हाहाकार मच गया । वहाँ केवल स्त्रियाँ और बच्चे ही शेष रह गए थे । रसद के न आने से सबके बुरे हाल थे । ऐसे में चंपतराय का भी स्वास्थ्य खराब हो गया । उठने-बैठने की भी शक्ति उनमें न रही । ऐसी अवस्था में सारंधा ने अपने पति को यही सलाह दी-"हम लोगों की वजह से ही दुर्ग में रहने वाले निरपराध मनुष्यों की दुर्दशा हो रही है । मुझसे तो इनके दु:ख अब देखे नहीं जाते । यदि हम लोग इस स्थान को छोड़ दें तो सेना का घेरा उठा लिया जाएगा और ये लोग मरने से बच जाएंगे ।"

चंपतराय को सारंधा का सुझाव बहुत पसंद आया । सारंधा अपने पति को पालकी में बिठाकर कुछ सैनिकों के साथ दुर्ग से बाहर निकल गई । उस समय युद्ध चल रहा था, अत: किसी का ध्यान इस ओर न गया । ऐसी विपत्ति के समय चंपतराय ने अपने बहनोई से सहायता माँगी पर उन्होंने मना कर दिया । 'विपत्ति काल में अपने भी पराये हो जाते हैं'-वाली कहावत उन्हें सही होती दिखाई दी ।

दुर्ग से बच निकलने की बात मुस्लिम सेना से छिपी न रह सकी । उसने पीछा किया और कुछ मील जाकर पुन: घेर लिया । सारंधा के साथी सैनिकों ने यह अच्छी तरह जान लिया कि अब अंतिम अवसर है । अत: पूरी शक्ति से शत्रु सेना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का सामना किया गया । मुट्ठी भर सैनिक कब तक लोहा लेते । अस्वस्थ होते-होते हुए भी चंपतराय अपने को रोके न रह सके । वह भी बीमार शेर की तरह प्रतिशोध की भावना से भरकर पालकी से बाहर निकले । पर कमजोरी के कारण उनके हाथ से तलवार जमीन पर गिर पड़ी और वह मूर्छित होकर गिर गए । सारंधा ने दौड़कर उनका सिर अपनी गोद में रख लिया । अब चंपतराय रानी से उन पर तलवार चलाने को कहने लगे जिससे वे बंदी होने के अपमान से बच सकें ।

सारंधा चीख पड़ी । उसे अपने कानों पर विश्वास न हो रहा था । वह अपने ही हाथों से यह अनर्थ कैसे करेगी ? जिस हृदय के लिए वह अपना सर्वस्व समर्पित करने को तैयार रहती थी उसी पर तलवार का वार वह कर सकेगी, यह कैसे संभव है ? अंतिम बुंदेला लड़ते-लड़ते जमीन पर गिर पड़ा । मुगल सैनिक चंपतराय को पकड़ने के लिए लपके । नरेश ने अपनी रानी सारंधा की ओर आशा भरे सजल नेत्रों से देखा । मानों वह कह रहे हों 'इस जीवन पर तुम्हें गर्व था ? आन की रक्षा के लिए तुम मुझे समय-समय पर उत्साहित करती रहती थीं और जब परीक्षा की घड़ी आई तब तुम्हीं विचलित होना चाहती हो । देख लिया तुम्हें । साहस करो ।'

बढ़ते हुए मुगल सैनिकों ने जैसे ही चंपतराय को पकड़ने का प्रयास किया कि बिजली की तरह लपक कर सारंधा ने अपनी तलवार अपने प्रियतम के उस हृदय में भोंक दी जिससे उसे अविरल प्रेम प्राप्त होता था, आलिंगन की सुखानुभूति उसे आत्म विभोर कर देती थी । आज उसी हृदय से रक्त की धारा प्रवाहित हो रही थी । चंपतराय सदैव के लिए सो गए थे ।

सेनापति इस मर्मांतक दृश्य को देखकर स्तब्ध रह गया । उसने आगे कहा- "रानी साहिबा ! खुदा गवाह है । आखरी समय आपका जो हुक्म हो उसे बजाने के लिए तैयार हूँ ।"

"यदि हमारे पुत्रों में से कोई भी जीवित हो तो हमारी दोनों लाशें उन्हें सौंप देना । बस यही सबसे बड़ी मेहरबानी होगी ।" सारंधा ने इतना कहकर उसी तलवार की नोंक अपने हृदय में भोंक ली और अपने पति से जा मिली ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजमाता जीजाबाई

महापुरुष हर युग में हुए हैं, हर देश में पैदा हुए हैं और अपने जीवन की वे अमर गाथाएं छोड़ गए हैं जो भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरक पदचिह्न बन गए हैं, जिनका अंशत: व पूर्णत: लाभ मानव संतति उठाती रही है । उनके बारे में बहुत कुछ जानकारियाँ उपलब्ध हैं । किंतु उन महाशक्तियों के बारे में इतिहास प्राय: मौन ही रहता है जिन्होंने उन महानुभावों को महामानव बनाया था । वे उस अज्ञात-अनाम शिल्पी की तरह विस्मृत रही हैं जो अनगढ़ शिलाओं को अपनी पैनी छेनी से तराशकर एक सुंदर मायामयी देवमूर्ति का निर्माण कर देते हैं । उनकी कृतियाँ पूजी जाती हैं, संग्रहीत की जाती हैं पर उनके बारे में किसी को कुछ ज्ञात नहीं होता । मातृ शक्ति के साथ भी यही हुआ है । उनके द्वारा निर्मित महापुरुष तो अनेक महत्वपूर्ण कार्यों के द्वारा जग जाहिर ही नहीं हुए वरन् युगों-युगों तक उनका नाम अमर हो गया पर वे स्वयं अतीत के गर्भ में खो गयीं । इस बात का नारी जाति को तो कभी मलाल नहीं रहा पर यह अवश्य है कि यदि उनके बारे में जानकारियाँ उपलब्ध होतीं तो उनसे समाज का बड़ा हित होता ।

उपरोक्त कथन के अपवाद स्वरूप कुछ ऐसी माताओं के बारे में जो जानकारी उपलब्ध है वह अधूरी होते हुए भी कितनी प्रेरक और उपयोगी है, इसका एक उदाहरण है छत्रपति शिवाजी की माता जीजाबाई का जीवन चरित्र । उन्होंने बचपन और कैशौर्य में शिवाजी को धीर, वीर, नीति कुशल और चरित्र बल समन्वित आदर्श पुरुष के रूप में गढ़ा ही नहीं वरन् वे आजीवन उनके सिर पर सघन तरुवर की तरह छाया बनकर भी खड़ी रहीं ।

माता जीजाबाई मात्र उनकी माता ही नहीं मार्गदर्शक, राजनीतिक सलाहकार और राज्य प्रबंध में उनकी मुख्य सहायिका भी रही थीं । शिवाजी जब औरंगजेब से मिलने के लिए आगरा गए तो वे अण्णाजी दत्तो, मोरोपंत पिंगले और सोनदत्त आदि मुख्य सरदारों को माता जीजाबाई के मार्गदर्शन में राज्य प्रबंध करने की सम्मति देकर गए थे । इससे स्पष्ट हो जाता है कि माता जीजाबाई का प्रेमपूर्ण अनुशासन सर्वमान्य था । सरदार उनके वात्सल्य की सत्ता में बँधे हुए थे । महाराष्ट्र को उन्होंने अपने स्नेहयुक्त परिवार भाव से ही पुष्ट और विकसित किया था । शिवाजी वहाँ रहे हों या न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहे हों, उनके किसी सरदार ने उनसे विद्रोह नहीं किया । यह उस सामंतवादी युग में आश्चर्य की बात थी । इसके पीछे बहुत कुछ जीजाबाई का हाथ था ।

जीजाबाई के पिता जाधवराव बीजापुर सुल्तान के प्रतिष्ठित सरदारों में से एक थे । शाहजी के पिता मालोजी भी उसी दरबार में एक छोटे सरदार थे । उनके पिता ने पहले तो जीजाबाई का संबंध मालो जी के पुत्र शाहजी के साथ कर दिया पर आगे चलकर वह मालोजी के उत्कर्ष से जलने लगे । यह संबंध विवाह के रूप में परिणत तो हुआ पर मालोजी के बार-बार आग्रह करने और बीजापुर सुल्तान की मध्यस्थता के कारण जाधवराय की ईर्ष्या प्रकट में स्थगित हो जाने पर भी बढ़ती ही गयी । वह मुगल बादशाह के साथ मिलकर शाहजी को नीचा दिखाने का प्रयास करते रहे । उस समय के हिंदू राजाओं की इस पारस्परिक अहमन्यता के कारण उनकी पुत्री और जमाता को कई विपत्तियों का सामना करना पड़ा ।

अपने पिता की इस स्वभावगत दुर्बलता का सबसे अधिक दंड निरपराध जीजाबाई को ही भोगना पड़ा । शाहजी और जाधवराव की खींचतान के कारण शाहजी को जो विपत्तियाँ झेलनी पड़ीं उसका कारण वे जीजाबाई के साथ हुए अपने विवाह संबंध को मानते थे । न यह विवाह संबंध होता और न उन्हें विपत्तियाँ सहनी पड़तीं, सो वे जीजाबाई से विरक्त रहने लगे । उधर स्वाभिमानिनी जीजाबाई को पति पक्ष में रहने के कारण उन्हें अपने पिता का भी कोप सहना पड़ा ।

इस प्रकार युवावस्था में ही उन्हें पति प्रेम से वंचित होना पड़ा । शाहजी उन्हें पूना की छोटी सी जागीर देकर स्वयं बीजापुर रहने लगे । उन्होंने दूसरा विवाह भी कर लिया । जीजाबाई शिवनेरी दुर्ग में रहकर दादाजी कोणदेव नामक एक वृद्ध राजनीति कुशल ब्राह्मण की सहायता से पूना की जागीर का प्रबंध करने लगीं ।

जो विषम परिस्थितियाँ उनके सामने आयीं उन परिस्थितियों में कोई सामान्य नारी होती तो विचलित होकर इस जीवन से ही निराश व हताश हो जाती, पर जीजाबाई ऐसी नहीं थीं । पिता के घर उन्होंने थोड़ी शिक्षा भी पायी थी । रामायण, महाभारत, गीता आदि धर्म ग्रंथों का स्वाध्याय वे बड़ी लगन से किया करती थीं । आस्तिक तो वे थीं ही । इन धर्म ग्रंथों ने उन्हें इस मनुष्य जीवन का अर्थ और उसके सदुपयोग की राह भी सुझा दी । उन्होंने कर्म में रस लेना आरंभ किया और जो कुछ उनके पास था उसी को सँवारना बुद्धिमानी समझा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसे उन्होंने ईश्वर की कृपा माना कि उनके पास अनुपजाऊ ही सही, पूना की छोटी-मोटी जागीर तो थी, दादा जी कोणदेव जैसे सलाहकार तो थे, शंभू जी और शिवाजी ये दो पुत्र रत्न तो थे । इतना सब क्या कम था । इसी से उन्होंने अपने मन में उठ रही आशाओं को पूर्ण करने का उद्योग करना आरंभ किया ।

उन्हें अपनी हिंदू जाति के पराभव का बड़ा दु:ख था । वह रामायण और महाभारत में वर्णित भारत भूमि के गौरव को पुन: प्रतिष्ठापित हुआ देखना चाहती थीं । वे चाहती थीं कि आततायी मुगल और बीजापुर की सल्तनतों का खात्मा हो जाय और ऐसे राज्य की स्थापना हो जिसमें लोगों को सुख-शांति और सुशासन, धर्म सम्मत शासन मिल सके ।

इन्हीं दिनों उन्होंने एक संन्यासी को भी ऐसा ही एक व्यापक अभियान उठाते देखा जिससे कि हिंदू जाति अपने दासता के बंधनों को काट फेंके और धर्म राज्य की स्थापना करे । यह संन्यासी थे रामदास समर्थ जो पलायन का नहीं, समाजोत्थान का महामंत्र फूँक रहे थे । जीजाबाई उस अदृष्ट के स्पष्ट संकेत को समझ रही थीं । जो भावनाएं उनके भीतर उठ रही थीं उन्हीं का प्रचार समर्थ भी कर रहे थे तो अन्य अनेकानेक महाराष्ट्रवासियों के मन में वैसी ही भावनाएं क्यों न उठ रहीं होंगी, यह सोचकर उन्होंने भविष्य में संगठित होने वाले महाराष्ट्र में अपनी भूमिका का निर्धारण कर लिया ।

अपने छोटे पुत्र के लक्षणों को वे देख-समझ रही थीं । उन्होंने इसे अपना पुत्र न मानकर भवानी का पुत्र समझा और उसका नाम रखा शिवा । वे शिवाजी के निर्माण में जुट गयीं । उनके पति शाहजी वीर थे । वीर तो उनके पिताजी भी थे और हिंदू राजा भी थे पर उनमें वह स्वाभिमान और कष्ट सहिष्णुता नहीं थी कि वे एक समर्थ राष्ट्र का निर्माण करने की जोखिम उठाने का साहस कर सकते । उनकी दृष्टि छोटी थी । वे अपना ही स्वार्थ देखते थे । इसी कारण उनकी यह वीरता निरर्थक जा रही थी । जीजाबाई अपने पुत्र में वह दुर्बलता नहीं आने देना चाहती थीं ।

बचपन से ही उन्होंने महापुरुषों की वीरता पूर्ण कहानियाँ सुना-सुना कर शिवाजी में भावी महाराष्ट्र के निर्माता के अपेक्षित गुण भरने आरंभ कर दिए थे । चरित्र निष्ठा, अनुशासन, कष्ट सहिष्णुता, बुद्धिमत्ता, कर्तव्य आदि की भावनाओं को उन्होंने शिवाजी के मानस में कूट-कूट कर भर दिया । उनके शारीरिक, मानसिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और बौद्धिक विकास के सभी साधन उन्होंने जुटाए । दादाजी कोंणदेव जैसे बुद्धिमान व स्वाभिमानी व्यक्ति शिवाजी के शिक्षक नियुक्त किए गए ।

समर्थ गुरु रामदास पर जीजाबाई की बड़ी श्रद्धा थी । वे कई बार उनके दर्शन भी कर चुकी थीं । वे शिवाजी का निर्माण करके उन्हें उनके हाथों में सौंप देना चाहती थीं ताकि उनसे मनवांछित कार्य ले सकें । स्वाभिमानिनी धर्मपरायण जीजाबाई के रक्त-माँस से ही शिवाजी का शरीर बना था उनकी कामनाएं और भावनाएं भी उनमें आ गयी थीं । रही-सही कमी की पूर्ति उनकी वीरतापूर्ण कहानियों और मार्गदर्शन ने कर दी ।

तेरह वर्ष के शिवाजी को वे समर्थ के आश्रम चाफल जाकर उन्हें सौंप आयीं । समर्थ ने उन्हें दीक्षा दी, उन्हें एक आदर्श दिया और जीजाबाई द्वारा निर्मित एक प्रखर व्यक्तित्व को एक धर्म मिला युग चेतना का नेतृत्व करने के रूप में ।

शिवाजी को जीजाबाई ने अपने आदर्शों पर ढाला था । अत: जब वे अपने पिताजी के साथ बीजापुर दरबार में गए तो उन्होंने 'मुजरा' व 'कोर्निश' कुछ नहीं किया । यह जीजाबाई की शिक्षाओं का ही परिणाम था । उन्होंने भारत को शिवाजी जैसा ऐसा महान व्यक्तित्व दिया जिसकी प्रभा आज दिन तक फीकी नहीं पड़ी है ।

जीजाबाई ने मात्र शिवाजी का निर्माण नहीं किया वरन् उनके सहायकों का भी निर्माण किया । शिवाजी के बाल्य बंधु ताना जी मालसरे को वे अपने पुत्र की तरह ही रखती थीं । उनका यह भाव केवल ताना जी के साथ ही नहीं अन्य सरदारों के साथ भी था । ताना जी माता जीजाबाई के प्रति अनन्य निष्ठा रखते थे । समर्थ के आदेश पर जब शिवाजी ने कोंकाड़ दुर्ग को जीतने के लिए अपने सरदारों से कहा तो उनमें से किसी की हिम्मत नहीं पड़ी । तब जीजाबाई ने अपने इसी मानस पुत्र तानाजी का नाम इस दुष्कर कार्य के लिए प्रस्तावित किया । ताना जी अपने पुत्र के विवाह में सम्मिलित होना छोड़ कर इस मुहीम पर गए और विजय प्राप्त करते हुए बलिदान हो गए ।

कर्नाटक विजय के बाद शिवाजी के एक सरदार बजाजी निंबलकर को अपनी कुछ पारिवारिक परिस्थितियों व निजाम के दबाव के कारण विवशतापूर्वक इस्लाम धर्म स्वीकार करना पड़ गया । इसके कुछ समय बाद वह शिवाजी के सामने प्रस्तुत हुआ । सर्व सम्मति से शुद्धि का निर्णय लिया गया । दूरदर्शी जीजाबाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हिंदू जाति के स्वभाव से परिचित थीं । वे बोलीं-''शुद्धि ही पर्याप्त नहीं है संबंध भी होना चाहिए ।'' संबंध के लिए किसी से क्या कहें, यह तो अपने घर से ही संभव था । सो उन्होंने शिवाजी को बजाजी निंबलकर के पुत्र के साथ अपनी पुत्री के विवाह के लिए तैयार किया । कितनी सुधारवादी और विवेकशील थीं वे-इसका परिचय उनके इस निर्णय से ज्ञात हो जाता है ।

जीजाबाई की छत्रछाया में शिवाजी का युद्धों, संधियों व राज्यकार्यों में थका मन कभी श्रांत और क्लांत नहीं हो सका । वे उनके लिए शक्ति स्रोत कार्य करती रहीं थीं । जीजाबाई यों कहलाने को राजमाता थीं पर उनका जीवन किसी तपस्विनी से कम नहीं था । एक ध्येय को समर्पित होकर अहर्निश निष्काम कर्म योगिनी की तरह उन्होंने जो कार्य किया वह नारी शक्ति की सामर्थ्य का परिचायक और अनुकरणीय है । ऐसी माताएं जिस देश में होती हैं वह देश धन्य हो जाता है ।

महारानी अहिल्याबाई

अपने अलौकिक व्यक्तित्व के कारण एक साधारण परिवार में जन्मीं अहिल्याबाई एक दिन इंदौर की महारानी बनीं । उनका जन्म १७३५ में महाराष्ट्र प्रदेश के पाथडरी नामक गाँव में हुआ था । उनके पिता का नाम मनकोजी सिंधिया था । मनकोजी सिंधिया एक साधारण ही नहीं बल्कि गरीब आदमी थे ।

उनकी बेटी अहिल्याबाई कोई अपूर्व सुंदरी न थीं । उसका रंग साँवला था किंतु वह अत्यधिक सरल तथा भोली थीं । स्वभाव की सरलता तो उसे अपने उस संतोष से मिली थी, जिसको प्राप्त कर लेने से बाहरी परिस्थितियों में गरीब होते हुए भी मनुष्य अंदर से बड़ा संपन्न एवं परिपूर्ण रहता है । उसकी आवश्यकताएं प्राकृतिक सीमा तक ही प्रतिबंधित रहती हैं, जिसके कारण न तो उसे अभाव खटकता है और न उसमें कोई दयनीयता आने पाती है । आत्मा और मन के पवित्र होने से अहिल्याबाई का मन भगवान के पूजन में बहुत लगता था । वह नित्य प्रति नियम से शिवजी के मंदिर में पूजा करने जाती । अहिल्याबाई का यह अटूट नियम देखकर अनेक बार उसकी सहेलियों ने पूछा-''अहिल्या तुम भोले बाबा से क्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माँगा करती हो ?'' अहिल्या बड़े सरल भाव से उत्तर देती-''मैं तो जल, फूल चढ़ा कर चली आती हूँ, माँगती कुछ भी नहीं । जब मुझे किसी लौकिक चीज की आवश्यकता ही नहीं तब माँगू क्या ?''

और वास्तव में उस सरला एवं संतोष की प्रतिमा को कुछ चाहिए भी न था । लेकिन भक्त की निष्कामता भगवान में कामना बनकर गूँजने लगी । भगवान की इच्छा हुई कि अहिल्या रानी बने । फिर क्या था योग जुड़ गया । नहीं तो कहाँ एक गाँव की किसी झोंपड़ी में पलने वाली अहिल्या और कहाँ इंदौर की राज गद्दी ?

इंदौर के महाराज मल्हार राव होलकर पूना जाते समय मार्ग में पाथड़री गाँव में उसी शिवालय में रुके जिसमें अहिल्या नित्य पूजन करने आती थी ।

प्रभात हुआ, अहिल्याबाई पूजा करने आई । मंदिर के चारों ओर बड़ी चहल-पहल हाथी, घोड़े, रथ और आदमियों की भीड़ ही भीड़ । किंतु अहिल्याबाई बिना किसी ओर देखे सीधे मूर्ति-मंदिर को लक्ष्य किए उपराम भाव से चली आई, लोग मौन होकर मार्ग छोड़ते गए । कन्या ने नित्य की भाँति एकाग्र मन से यथावत् पूजा की और ठीक उसी उपराम भाव से वापस चली गई । उस पर न तो उस भीड़ का कोई प्रभाव पड़ा और न वह दुचिंती हुई और न ही उसके मन में किसी भय अथवा संकोच का भाव आया । वह निर्विकार भाव से आई और निर्लिप्त भाव से ऐसे चली गई जैसे वहाँ कोई था ही नहीं । अहिल्याबाई को सबने आते-जाते देखा किंतु उसने किसी को भी नहीं देखा । यह मन की परिपूर्णता का लक्षण था ।

महाराज मल्हार राव ने भी देखा । किंतु उनका देखा विचार-क्रिया में बदल गया । वे सोचने लगे-'क्या संसार में ऐसा भी संभव है कि किसी महाराज का वैभवपूर्ण शिविर लगा हो, चारों ओर घोड़े हिनहिना रहे हों और हाथी झूम रहे हों और कोई एक सो भी साधारण सी ग्रामीण लड़की आए और बिना किसी प्रभाव के इतने तटस्थ भाव से चली जाए, मानों वहाँ राजा तो राजा एक छोटा-सा प्राणी भी न हो, जबकि अच्छे-अच्छे स्थैर्यवान राज वैभव को भय और विस्मय के भाव से देखने पर विवश होते हैं और कुछ नहीं तो कम से कम राजैश्वर्य असामान्य एवं अस्वाभाविक विशेषता के कारण कौतूहल का विषय तो होता ही है ।' महाराज होलकर के हृदय में अहिल्याबाई की यह तटस्थता, तन्मयता एवं निर्भयता श्रद्धा बनकर बैठ गई । वे बेचैन हो उठे ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इंदौर महाराज ने अहिल्या के पिता को बुलाया और कहा-"सिंधिया ! मैं आपकी सुलक्षणा बेटी को अपनी पुत्र-वधू बनाना चाहता हूँ । आशा है तुम मुझे निराश न करोगे ।

मनकोजी महाराज की बात सुनकर अचंभित रह गए । उन्हें सहसा अपने कानों पर विश्वास न हुआ । पर महाराज मल्हार राव ने आश्वस्त करके वापस कर दिया ।

मनकोजी भागे-भागे घर आये । उस समय अहिल्या गाय का गोबर उठा कर हाथ धोने जा रही थी । पिता ने उसके दोनों हाथ पकड़ कर खुद धुलाते हुए गद्‌गद् कंठ से कहा-"बेटी ! अब तेरे यह हाथ गोबर में कभी न सनेंगे । अब यह इंदौर की राज-सत्ता में हाथ बटायेंगे ।" अहिल्या को तो पिता का यह कथन ही नहीं समझ में आया । उसकी माता भी विस्मय के साथ यह कहती हुई आ गईं कि "आज आप यह क्या कर रहे हैं, यह क्या कह रहे हैं ?"

"हाँ, ठीक ही कह रहा हूँ । इंदौर महाराज मल्हार राव होलकर ने अहिल्या को अपनी पुत्र-वधू बनाने के लिए आज ही तो सबेरे मुझसे माँग लिया है । इसी याचना के लिए ही तो उन्होंने मुझे बुलाया था ।" अहिल्या यह सुनते ही जल्दी से कोठरी में भाग गई और माता-पिता उसे ऐसे देखते रहे मानों वे अहिल्या के माता-पिता होने के योग्य न थे ।

माता-पिता बेटी की बिदाई के विषय में कुछ बात करने ही वाले थे कि तब तक बाहर से आवाज आई-"मनकोजी, कन्या को अभी जैसी बैठी हो, भेज दीजिए । महाराज ने पड़ाव उठा दिया है ।" मनकोजी ने बाहर आकर देखा तो दरवाजे पर चाँदी के डंडों वाली और जरीदार मखमली पर्दे की पालकी द्वार पर रक्खी हुई थी और महाराज का मुख्य प्रबंधक खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था ।

अहिल्या के पास कोई और वस्त्र थे ही नहीं, बदलाये भी क्या जाते । उसी सफेद मोटे गाढ़े की धोती में, जो कि वह पहने थी, पालकी में आदर एवं भद्रता से पूर्ण वातावरण में बिठा दी गईं ।

अहो ! मनुष्य में देवत्व के प्रतिनिधियो ! अभ्युदय के प्रत्यूष-पर्व के समान सौभाग्य के प्रवर्तको ! सात्विकता की संतानो-गण ! तुम्हारी जय हो । तुम्हें अपना कर जमीन का एक जर्रा भी आकाश का चाँद बन जाता है तब अहिल्या तो एक कन्या थी, पवित्र मानवी थी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाराज होल्कर इंदौर लौट चले । अहिल्या के आगे-आगे अपनी सवारी में वे इतनी प्रसन्नता, पुलक तथा उत्साहपूर्वक जा रहे थे मानों दिग्विजय करके लौट रहे हों । इंदौर पहुँचकर मल्हारराव ने अहिल्या का विवाह अपने पुत्र खंडेराव से कर दिया ।

अब अहिल्या इंदौर की युवरानी बन गई थीं । किंतु अहिल्याबाई ने कोई अभिमान अनुभव करने के बजाय उत्तरदायित्व का अधिक अनुभव किया । ऐश्वर्यपूर्ण राजमहल की परिस्थितियों में पहुँचकर भी उसकी सादगी तथा सरलता में कोई अंतर न आया । बल्कि उसके आगमन से राजमहल के वातावरण में सात्विकता का समावेश हो गया ।

अहिल्या की सेवा तथा कर्तव्य-निष्ठा से प्रसन्न होकर मल्हार राव ने उसको राज-काज की दीक्षा देनी शुरू कर दी । वे इस विषय में पुत्र की अपेक्षा पुत्र वधू पर अधिक विश्वास करने लगे । श्वसुर के तत्वावधान में अहिल्याबाई ने राज-काज में इतनी दक्षता प्राप्त कर ली कि जब कभी मल्हार राव किसी काम से बाहर जाते थे, वे राज-काज देखने का काम अहिल्याबाई को सौंप जाते थे और जब वापस आते, तो पाते थे कि अहिल्याबाई ने सौंपा हुआ कार्य इतनी दक्षता से किया जिसकी उन्हें आशा न थी । इस प्रकार धीरे-धीरे मल्हार राव का विश्वास अपनी पुत्र-वधू की योग्यता में बढ़ता गया ।

विवाह के बाद अहिल्याबाई के एक पुत्र तथा एक कन्या, दो संतानें हुईं, जिनका कि नाम मालीराव और मुक्ताबाई रक्खा गया । इस प्रकार नौ वर्ष तक आनंद, उत्साह के बीच जीवन बिताने के बाद अहिल्याबाई की अग्नि परीक्षा का समय आ गया ।

उन दिनों मराठे अपनी सत्ता का विस्तार करने में लगे हुए थे । भारत के लगभग सभी राज्यों से वे चौथ वसूल करते थे किंतु भरतपुर के जाट राजाओं ने चौथ देने से इन्कार कर दिया । अत: पेशवा के परामर्श से मल्हार राव ने अपने पुत्र खंडे राव को साथ लेकर भरतपुर पर चढ़ाई कर दी । जाटों के साथ इस लड़ाई में खंडेराव मारे गए ।

खंडेराव के खेत रहने का समाचार जब इंदौर पहुँचा तो अहिल्याबाई पति के साथ सती होने को तैयार हो गईं । अहिल्याबाई का यह निश्चय सुनकर मल्हार राव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुत्र शोक तो भूल गए और पुत्र-वधू को सती होने से रोकने का प्रयत्न करने लगे । उन्होंने समझाया कि पति भक्ति सती होकर आत्मघात करने में नहीं वरन् ईश्वर प्रदत्त मानव-जीवन अधिकाधिक उज्ज्वल एवं उत्कृष्ट बना कर पति का गौरव एवं यश बढ़ाने में है । अहिल्याबाई को श्वसुर का तर्क एवं विवेकपूर्ण परामर्श शिरोधार्य कर सती होने का अपना निश्चय छोड़ना ही पड़ा ।

कुछ समय बाद उत्तर भारत के एक मुहिम में मल्हार राव की भी मृत्यु हो गई । अहिल्याबाई ने श्वसुर की मृत्यु का आघात भी अपने चिर सिद्ध स्थैर्य एवं धैर्य की सहायता से सहन कर लिया और निराश होकर घर में पड़े रहने के स्थान पर उनका प्रतिनिधित्व करते हुए उनकी आत्मा को संतोष देने का निश्चय कर लिया ।

बाबा की मृत्यु के बाद मल्हार राव का पौत्र मालीराव गद्दी पर बैठा किंतु वह बड़ा विलासी तथा क्रूर था । प्रजा का शोषण और उस पर अत्याचार करना उसका स्वभाव बन गया था । अहिल्याबाई को अपने इस कुपुत्र पर बड़ा दुःख था और इसके पहले कि वे उसे गद्दी से उतार कर किसी सुयोग्य व्यक्ति को शासन सौंपे मालीराव की ही नौ माह बाद मृत्यु हो गई ।

आगे कोई उत्तराधिकारी तथा अन्य कोई उपाय न देखकर इंदौर की बागडोर अहिल्याबाई ने स्वयं अपने हाथों में ली और गंगाधर नामक एक व्यक्ति को मंत्री बनाकर प्रजा की सेवा करने लगीं । किंतु अहिल्या का विश्वास-पात्र गंगाधर बड़ा स्वार्थी और राज्य लोलुप निकला । उसने अहिल्याबाई को किसी बच्चे को गोद ले लेने और राज्य-सत्ता उसके अधिकार में सौंपकर भगवत भजन करने का परामर्श दिया । दूरदर्शिनी ने गंगाधर राव के परामर्श के पीछे उसकी स्वार्थपूर्ण दुरभिसंधि को समझ लिया था । उन्होंने अपना साहस संभाला और गंगाधर राव का प्रस्ताव कठोरतापूर्वक अस्वीकृत कर दिया । गंगाधर राव अपने चाचा रघुनाथराव पेशवा को इंदौर पर चढ़ा लाया किंतु रघुनाथ राव अहिल्या की दृढ़ता, साहस, तैयारी तथा जनता का सहयोग व संगठन देख बिना लड़े ही वापस चला गया ।

इन अनेक आकस्मिक अस्त-व्यस्तताओं के कारण राज्य में अनेक चोर, डाकू बढ़ गए थे । अहिल्याबाई ने उनका दमन करने के लिए घोषणा कर दी कि जो भी व्यक्ति उनका दमन करेगा उसके साथ वे अपनी बेटी मुक्ताबाई का विवाह कर देंगी । अहिल्याबाई की इस घोषणा में उनकी बहुत बड़ी दूरदर्शिता एवं बुद्धिमत्ता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छिपी हुई थी । इस प्रकार एक तो चोर-डाकुओं का दमन हो जायेगा और उनके जामाता के साहस एवं योग्यता की परख भी हो जायगी, साथ ही बेटी के विवाह के लिए राजनीतिक लोलुपता की संभावना भी समाप्त हो जायगी ।

निदान एक साहसी नवयुवक यशवंत राव ने डाकुओं के दमन का बीड़ा उठाया और अपना कर्तव्य पूरा कर मुक्ताबाई को प्राप्त कर लिया । किंतु अहिल्याबाई का यह सुख-चैन ज्यादा दिन न चल सका । कुछ ही समय बाद न केवल उनकी पुत्री तथा जामाता की ही मृत्यु हो गई बल्कि उनकी मातृ तुल्य सास का भी स्वर्गवास हो गया और वे संसार में सर्वथा एकाकी रह गईं । किंतु फिर भी अहिल्याबाई ने धैर्य न छोड़ा और साहसपूर्वक अपना कर्तव्य करती रहीं । जिसने आत्मा को अपना मित्र बना लिया होता है, अपने को कर्तव्य की वेदी पर समर्पित कर दिया होता है, परोपकार एवं परमार्थ को अपना ध्येय बना लिया होता है वह अकेला होने पर भी अकेला नहीं रह सकता । पुण्य उसके साथ होता है और परमात्मा उसकी रक्षा करता है ।

लगभग साठ वर्ष की अवस्था में, प्रजा की सेवा, आत्मा की परीक्षा और परमात्मा की इच्छा पूरी कर महारानी अहिल्याबाई अपने सुयोग्य, विश्वस्त एवं चरित्रवान् सेनापति तुकोजीराव को राज्य का उत्तराधिकार तथा प्रजा का उत्तरदायित्व सौंपकर निर्विकार भाव से देह मुक्त होकर अपने सास, श्वसुर तथा पति, पुत्र, पुत्री के पास चली गईं ।

नारी रत्न-येसुबाई

छत्रपति शिवाजी की मृत्यु के उपरांत उनके द्वारा स्थापित हिंदू महाराष्ट्र पर संकट के बादल छाने लगे थे । अब तक जिन चरित्रवान और देशभक्त नेताओं के हाथ में महाराष्ट्र का सूत्र संचालन रहा था, वे तीनों अपने आप में निष्कलंक थे । समर्थ गुरु रामदास, छत्रपति शिवाजी और माता जीजाबाई-तीनों की छत्रछाया वीर मराठों के सिर से उठ चुकी थी ।

शिवाजी का उत्तराधिकारी संभाजी अपनी विलासिता के कारण शिवाजी के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए भी सिरदर्द बना रहा था । शिवाजी ने उसके आचरणों से तंग आकर उसे पन्हाला के दुर्ग में कैद कर रखा था । यों वीरता और राज्य संचालन कला में वह पूरी तरह निपुण था, पर अपनी इस कमजोरी के कारण वह यशस्वी नहीं बन सका । शिवाजी की मृत्यु के उपरांत उनके उत्तराधिकारियों में देश भक्ति के स्थान पर व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं जागने लगी थीं । महाराष्ट्र की इस बिगड़ती स्थिति को अपने त्याग और तप से जिन थोड़े से व्यक्तियों ने संभाला उनमें संभाजी की पत्नी येसुबाई का नाम शीर्षस्थ है ।

इतिहास में अनेक ऐसे प्रसंग आते हैं जहाँ पथ भ्रमित पति को सती, साध्वी और विवेकशील पत्नी ने सत्पथ पर आरूढ़ किया । संभाजी को भी एक लंपट व्यक्ति से ऊपर उठाकर यशस्वी बनाने में येसुबाई का ही हाथ था । उनके ही सत्प्रयत्नों से संभाजी ने आगे चलकर बलिदान का जो आदर्श प्रस्तुत किया वह हमारे इतिहास में गौरव की वस्तु तो है ही साथ-साथ ही इस तथ्य का परिचायक भी है कि बुरा से बुरा व्यक्ति भी, यदि उसकी आत्मा जाग उठे, तो आदर्श पूर्ण कार्य संपादित कर सकता है ।

शिवाजी की मृत्यु के उपरांत संभाजी छत्रपति बने । उनके और उनके भाई राजाराम के बीच छत्रपति पद को लेकर संघर्ष भी चला । उस अवसर पर संभाजी ने राजाराम के समर्थकों की हत्या करवाने तक का प्रयास किया । अपने पति के इन निंदनीय कार्यों का येसुबाई ने विरोध किया । उन्हें खूब ऊँच-नीच समझाया । उनके पिता के आदर्श स्मरण कराये । अंत में वे संभाजी को इन कुकर्मों से विरत करने में काफी हद तक सफल भी हुईं ।

संभाजी ने छत्रपति बनते ही जिस वीरता और योग्यता का परिचय दिया उसकी सरदारों को आशा नहीं थी । उन्हें आश्चर्य होता था कि संभाजी इस प्रकार परिवर्तित कैसे हो गए । किंतु यह सब सती साध्वी और विवेकशीला येसुबाई के सत्परामर्शों और साहचर्य का फल था कि उनके भीतर का पशुत्व मरता जा रहा था ।

औरंगजेब के लाख सिर मारने पर भी उसे हिंदू महाराष्ट्र को समाप्त करने में सफलता नहीं मिल रही थी । उसे आशा थी कि विलासी संभाजी के छत्रपति बनते ही वह उस पर विजय प्राप्त कर लेगा पर वैसा संभव नहीं हो पा रहा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था । हर ओर से उसे हार ही मिल रही थी ।

येसुबाई संभाजी के पीछे छाया की तरह लगी रहती थीं । उनके मन को खाली बैठने ही नहीं देती थीं कि उसमें विलासिता और लंपटता के विचार अपनी करामात दिखाएं । यों उनके संसर्ग में संभाजी का अंतरंग भी परिवर्तित होता जा रहा था ।

दस वर्ष तक संभाजी विजय यात्राओं में उलझे रहे । इस बीच वे येसुबाई के संपर्क और राष्ट्र देवता की सेवा में निरत रहकर बिल्कुल बदल चुके थे । उन्हें अपने पिछले जीवन पर बहुत पछतावा होता था ।

वे जब पन्हाला और विशालगढ़ के बीच संगमेश्वर नामक स्थान पर अपने थोड़े से साथियों के साथ टिके हुए थे, तभी उनके वहाँ होने की सूचना गुप्तचरों द्वारा औरंगजेब को लग गयी । उसने मुकर्रब खान के नेतृत्व में एक हजार सैनिक उन्हें पकड़ने के लिए भेजे । संभाजी के गुप्तचरों ने इस बात की सूचना उन तक पहुँचा दी थी किंतु संभाजी ने उस पर विश्वास नहीं किया । फल यह हुआ कि वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए भी वे अपने साथियों के थोड़े होने के कारण भागने में सफल नहीं हो सके और मुकर्रब खान द्वारा पकड़ लिए गए ।

उन्हें औरंगजेब के सामने प्रस्तुत किया गया । औरंगजेब ने उन्हें मुसलमान बन जाने की शर्त पर छोड़ने की बात कही । संभाजी ने उसके इस अपमानजनक प्रस्ताव को ठुकरा दिया । क्रूर औरंगजेब ने उन्हें हजारों तरह की शारीरिक यातनाएं दीं पर उन्होंने सब सह ली, 'उफ' तक नहीं किया । उनकी आँखें निकाल ली गयीं, जीभ काट ली गयी पर उन्होंने औरंगजेब के सामने झुकना और धर्म परिवर्तन करना स्वीकार नहीं किया । आश्चर्य होता है कि एक व्यक्ति जो कभी क्षणिक काम तृप्ति के लिए विवेक को ताक पर रख दिया करता था वह इतने शारीरिक कष्ट कैसे सह गया ।

इसका कारण वह ज्ञान था जो उन्हें अपनी धर्मपत्नी येसुबाई से मिला था । येसुबाई ने पितृगृह में अपने कुलगुरु से गीता के कर्मयोग और शरीर तथा आत्मा के भेद को समझा था । श्वसुर गृह में शिवाजी, जीजाबाई और समर्थ रामदास के जीवन में उसे साकार होते देखा था । उसी की घुट्टी उन्होंने कांतासम्मित उपदेश रूप में अपने पति को दी थी । हमारी उसी आध्यात्मिक विरासत के ज्ञान भंडार के एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कण को पाकर संभाजी का जीवन ही परिवर्तित हो गया था । अपने छत्रपति के इस गौरवपूर्ण आचरण की सूचना जब मराठा वीरों को मिली तो वे उनके पिछले आचरणों को भूल गए । संभाजी ने अपनी काम लोलुपता रूपी पाप का प्रायश्चित मानकर इस दंड को सहज स्वीकार लिया था । उनके इस वीरतापूर्ण आचरण ने उन्हें शहीद बना दिया । इस बलिदान ने मराठा सामंतों के हृदयों में छाया व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा का कुहासा छितरा दिया और वहाँ पर देशभक्ति और जातीय स्वाभिमान हिलोरे लेने लगा ।

संभाजी के पकड़े जाने, उनके अंग विच्छेद और तदंतर वध के समाचार येसुबाई को रायगढ़ में मिले । इस विषम स्थिति में एक भावुक और अबला नारी की तरह वे सिर पीटने नहीं बैठ गयीं वरन् उन्होंने उस समय के अपने कर्तव्य को समझा, अपने पद की मर्यादा को समझा और तुरंत ही अपने देवर राजाराम को महाराष्ट्रीय वीरों का नेता बनाकर उन्हें महाराष्ट्र की स्वतंत्रता को अमर रखने के लिए रायगढ़ से बिदा कर दिया ।

उनको अब क्या करना है, यह उन्होंने निश्चय कर लिया । उनके पुत्र शिवाजी और साहू जी अभी निरे बालक ही थे । उनकी रक्षा और महाराष्ट्र की रक्षा का भार उन्होंने अपने कंधों पर अनुभव किया । राजाराम को मराठों का नेता बनाकर उन्होंने जिस त्याग का परिचय दिया था उसने उस समय राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने में महत्वपूर्ण कार्य किया था ।

रायगढ़ पर दस महीने तक औरंगजेब का अधिकार नहीं हो पाया पर अंत में सूर्याजी पिसानड नामक एक सरदार के विश्वासघात के कारण रायगढ़ का पतन हुआ । येसुबाई के सामने ही छत्रपति का सिंहासन तोड़ा गया, नगर लूटा गया, उन्हें पुत्रों सहित बंदी बना लिया गया, पर वे यह सब देखकर भी विचलित नहीं हुईं । उन्हें सत्य, धर्म और ईश्वर पर अटूट विश्वास जो था ।

सोलह वर्ष तक वे अपने पुत्रों के साथ दिल्ली में मुगल सम्राट के द्वारा नजरबंद रखी गयीं । इसमें भी उन्हें महाराष्ट्र का हित ही नजर आ रहा था । उन्हें विश्वास था कि ऐसी स्थिति में स्वाभिमानी मराठे निश्चय ही अपने देश और अपनी राजमाता के लिए संगठित होकर उन्हें छुड़ाने का और महाराष्ट्र को सबल बनाने का प्रयास अवश्य करेंगे ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिल्ली रहते हुए भी उन्होंने अपने दो विश्वस्त सरदारों-भक्ताजी हुलरे व बंकी गायकवाड़ द्वारा संदेश और मार्गदर्शन प्रदान करते हुए महाराष्ट्र को शक्तिशाली बनाया । औरंगजेब टक्कर मारता ही रहा पर उसे कहीं सफलता नहीं मिली ।

उन्होंने राजाराम को विशालगढ़ से हटकर, जिंजी पहुँचकर, राजचिह्न धारण कर और छत्रपति बनकर राज्य रक्षण की प्रेरणा दी । राजाराम छत्रपति बने । औरंगजेब यह देखकर जल कर खाक हो गया कि जिस छत्रपति और महाराष्ट्र को मिटाने की सोचा था वह किसी एक व्यक्ति या वंश में नहीं है । वह तो सारे महाराष्ट्र में फैला है । येसुबाई ने पुनः इस सत्य को उजागर कर दिया था कि जब तक किसी भी देश या जाति के लोग व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं से ऊपर उठकर राष्ट्र व समाज को महत्व देते रहेंगे तब तक उनको कोई पददलित नहीं कर सकेगा ।

छत्रपति राजाराम येसुबाई की उदारता व त्याग से अत्यधिक प्रभावित हुआ, वह उन्हें मातृवत मानने लगा था । संभाजी के दुर्व्यवहार को वह भूल गया । दो बार उसने येसुबाई और राजकुमारों को छुड़ाने का उद्योग भी किया पर सफल नहीं हो सका । १७०० ई० में दस वर्ष तक छत्रपति रहकर राजाराम दिवंगत हुए । रामचंद्र पंत नामक एक सुयोग्य सरदार येसुबाई के पुत्र साहूजी के नाम पर महाराष्ट्र की स्वतंत्रता को कायम रखते हुए मुगलों से लोहा लेते रहे ।

औरंगजेब शिवाजी के उत्कर्ष के समय से ही महाराष्ट्र को मटियामेट करने के लिए प्रयास कर रहा था । उसका यह प्रयास सफल नहीं हो रहा था । हर असफलता पर चोट खाये साँप की तरह वह और भी क्रुद्ध होकर आक्रमण करता था पर हर बार उसे असफलता ही हाथ लगती थी । हिंदुओं का कट्टर दुश्मन होने के साथ ही वह विशाल साम्राज्य का स्वामी भी था । उसके बल पर उसने दक्षिण में उठ खड़े हुए एक समर्थ भारतीय राज्य को कुचलने के लिए अपना सारा जीवन खपा दिया पर वह अपने इस कुप्रयास में असफल ही रहा ।

नजरबंद रहकर भी येसुबाई ने अपने पुत्र साहू का विवाह कुलीन कन्या से करवाने में सफलता पायी । औरंगजेब की बड़ी पुत्री रोशन आरा और बेगम जहांनआरा उनके चरित्र और व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित हुई थीं । उनका सहयोग भी येसुबाई को कम नहीं मिला था ।

सत्रह वर्ष की नजरबंदी भोगने के बाद साहू जी की मुक्ति हुई पर येसुबाई को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बंधक रखा गया । छत्रपति साहू के अथक प्रयत्नों के फलस्वरूप १७१९ में उनकी मुक्ति हुई । औरंगजेब जैसे कुटिल सम्राट से वर्षों तक स्वदेश की स्वतंत्रता को बचाए रखने के लिए जिन भारतीयों ने बलिदान दिए, अपने जीवन समर्पित किए उनमें येसुबाई का नाम अग्रगण्य रहेगा । वे एक वीर माता, देश भक्त महिला और विवेकशील कर्मयोगिनी के रूप में इतिहास में अमर हो चुकी हैं ।

उन्नीस वर्ष तक अपनी मातृभूमि से दूर नजरबंदी का जीवन बिताते हुए भी जिस महिला ने कभी यह न जाना कि उदासी क्या है, हर ओर से बँधी रहने पर भी परिवार और राष्ट्र के लिए सतत् सेवारत रहकर उन्होंने जिस निष्काम भाव से दूरदर्शिता पूर्ण कर्म किया, वह महाराष्ट्र को बनाये रखने के लिए संजीवनी बूटी सिद्ध हुआ । सत्तर वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ । उनका यह कर्तृत्ववान जीवन भारतीय महिलाओं के लिए युगों तक आदर्श का काम करेगा ।

महाराणा प्रताप की जननी

महाराणा उदयसिंह अरावली की दुर्गम घाटियों में भटक रहे थे । भूख-प्यास से स्वयं तथा अश्व दोनों जर्जर हो उठे थे । प्यास के मारे तो प्राण निकले जा रहे थे । ऐसी स्थिति में एक-एक कदम पहाड़ हो रहा था ।

अकबर की विशाल सेना से चित्तौड़ का बचा रहना संभव नहीं लगा तो उन्होंने वहाँ का भार जयमल व पत्ता सिसोदिया पर छोड़ स्वयं इस उद्देश्य से निकल आए थे कि अन्यत्र जाकर, सैन्य संगठित करके फिर चित्तौड़ छुड़ा लेंगे । पर अब तो जान के ही लाले पड़ गए थे ।

अंधकार में प्रकाश की एक किरण फूटी । उसी समय उन्हें एक किसान कन्या आती दिखाई दी । उनके मुख पर आशा की मुस्कान फूट पड़ी ।

उसके सिर पर बड़ी सी टोकरी थी जिसमें दस व्यक्तियों की रोटियां, दाल की बड़ी सी हंडिया और खेती में काम आने वाले औजार रखे थे । हाथ से गाय के सात-आठ बछड़े पकड़ रखे थे तथा बिना किसी कठिनाई के वह कठिन चढ़ाई चढ़ रही थी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पास आकर महाराणा को देखा तो उनकी वेश-भूषा तथा मुर्झाए मुख से उनकी दशा का अनुमान लगाने में कठिनाई न हुई । उसने इनसे अपने साथ चलने का आग्रह किया ।

आशा जागी तो मन में उत्साह अँगड़ाई लेने लगा । वे उसके पीछे चल दिए । उनके मन में विचार आया कि इस सिंहनी से उत्पन्न होने वाला बालक कितना बलिष्ठ तथा योग्य होगा ? उन्हें इस कृषक कन्या का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य अपूर्व लगा । उन्होंने निश्चय किया कि इस असाधारण कृषक कन्या से वे विवाह करेंगे ।

थोड़ी दूर जाने पर पहाड़ियों के बीच मैदान निकल आया जिस पर उसके पिता के खेत थे । यही इसके परिवार की आजीविका का साधन था ।

किसान ने महाराणा का स्वागत किया । परिचय पाकर तो वह फूला न समाया । उसने अपने पाचों पुत्रों को भी यह बात बताई । महाराणा को पानी पिलाया और उनके अश्व को भी पानी पिलाकर हरी दूब पर चरने छोड़ दिया । महाराणा ने इस परिवार के साथ बैठकर भोजन किया । आज तो मक्का की रोटियां व चने का साग उन्हें अमृत-तुल्य लगा ।

महाराणा ने अपने मन की बात जब किसान को बताई तो वह बोला-"वैसे तो हम भी देवड़ा राजपूत हैं पर कहाँ आप और कहाँ हम ।"

महाराणा ने उसे समझाया कि मनुष्य अपने गुणों से बड़ा होता है पद से नहीं ।

महाराणा का विवाह हो गया । रानी जैसा सुयोग्य सहायक पाकर उनमें नवीन उत्साह जाग उठा । उन्होंने मिलकर अरावली पर्वत श्रेणियों के बीच उदयपुर नगर की नींव डाली । सेना एकत्रित की और पुनः अपना राज्य सुव्यवस्थित किया ।

इस रानी की कोख से ही नर-रत्न राणा प्रताप का जन्म हुआ जिनकी शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक क्षमता अपूर्व थी । मिट्टी से कुम्हार जैसे मूर्ति गढ़ता है वैसे ही रानी ने राणा को बड़े मनोयोग व सावधानी से गढ़ा था ।

सामंतों के कहने पर उदयसिंह दूसरा विवाह भी कर चुके थे । इस महारानी के भी दो पुत्र थे । इन दो पुत्रों की माता जहाँ राज्य के लोभ में पड़ी रही वहीं वीर जननी ने अपने बालकों को मातृभूमि की सेवा का पाठ पढ़ाया । एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधारण राजकुमार से उन्हें महान देशभक्त बनाया ।

विवाह का आदर्श जीवन के महत प्रयोजन हेतु एक सच्चे साथी को पाना है । जब यह आदर्श महाराणा उदयसिंह ने अपनाया तो कितना शुभ परिणाम हुआ परंतु जहाँ वे मान और यश के फेर में पड़ गए वहीं राजद्रोही पैदा हुए । दूसरी रानी का पुत्र शक्ति सिंह अकबर से जा मिला था और अपनी ही मातृभूमि के साथ विश्वासघात कर बैठा ।

दुर्ग रक्षिका राजकुमारी रत्ना

मरुप्रदेश के महाराज रत्नसिंह के सदा खिले रहने वाले मुख मंडल पर आज चिंता की रेखाएं पड़ी हुई थी । वे किसी गहन चिंतन में निमग्न थे । कोई समस्या ग्रंथि बन कर उनके मस्तिष्क को चुनौती दे रही थी । उन्हें अपने भरे-पूरे जीवन में एक अभाव खटक रहा था । जब वे समस्या को सुलझा नहीं सके तो उनके मुँह से दीर्घ नि:श्वास निकल गयी ।

उसी समय उनकी एकमात्र पुत्री रत्ना ने उनके कक्ष में प्रवेश किया । अपने पिता के मुख से निकला यह दीर्घ नि:श्वास और चिंतित मुख मुद्रा देखकर रत्ना गहरे सोच में पड़ गयी । उसने अपने पिता से पूछा-"महाराज ! किस सोच में डूबे हैं आप । क्या मुझे उस समस्या का सुनने का अधिकार नहीं है जो आपको व्यथित किए हुए है ।"

"कुछ नहीं राजकुमारी ।"

"नहीं महाराज, कुछ तो है, आपको मेरी सौगंध जो आप मुझसे कुछ छिपाएं ।"

"हमारे गुप्तचरों ने सूचना दी है कि हमारे राज्य पर दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति मलिक काफूर आक्रमण करने वाला है । वह जोधपुर के महाराज को परास्त कर जैसलमेर राज्य की ओर बढ़ रहा है । उसके पास विशाल वाहिनी है । आमने-सामने युद्ध करने की स्थिति में हमारी पराजय निश्चित है । यहाँ जैसलमेर दुर्ग में रहकर लोहा लें तो खाद्यान्नों की समस्या सामने आएगी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभी हमारा अन्न भंडार बहुत कम है । और फिर इस विकट मरु प्रदेश में अन्न का एक दाना उपलब्ध होना भी कठिन है । तुरंत ही तो ऐसी कोई व्यवस्था नहीं हो सकती । दुर्ग में जो सामग्री है वह सौ सैनिकों के लिए ही पर्याप्त है । यदि सारे सैनिकों को दुर्ग में रखा जाय तो हम भूख से मर जाएंगे क्योंकि मलिक काफूर आसानी से घेरा नहीं उठायेगा ।''

रत्ना अपने पिता की समस्या सुनकर कुछ क्षण गहन चिंतन में डूबी रही फिर बोली-''तो इसमें चिंता करने की क्या बात है ? आप अपने सैनिकों के साथ दुर्ग से बाहर निकल जाइए और दुर्ग अपने किसी नायक को सौंप दीजिए । दुर्ग की रक्षा के लिए सौ सैनिक छोड़ दीजिए ।''

''यही मेरी भी योजना है किंतु वह नायक मुझे नजर नहीं आ रहा है जो दुर्ग की रक्षा करने की वीरता व बुद्धिमत्ता दोनों रखता हो । काश ! मेरे कोई पुत्र होता ।''

''मैं दुर्ग की रक्षा करूँगी महाराज ! आपकी रत्ना आपके पुत्र की तरह ही दुर्ग की रक्षा करेगी । उसकी धमनियों में भी वही राजपूती रक्त बह रहा है जो राजपूत वीरांगनाओं को समरांगण में शत्रु से लोहा लेने के लिए और समय पड़ने पर हँसते-हँसते जौहर करने के लिए प्रेरित करता है । आप ही तो कहते थे मेरी रत्ना बेटी नहीं बेटा है । पालन-पोषण भी तो आपने उसी ढंग से किया है । क्या आप मुझ पर विश्वास नहीं करते ।''

''करता हूँ बेटी ! सचमुच मैं तुम्हारा उचित मूल्यांकन नहीं कर सका था । तुमने मेरी परेशानी समाप्त कर दी है । मैं कल ही दुर्ग से प्रस्थान करता हूँ ।''

दूसरे दिन सूरज की पहली किरण के साथ ही रणबाँकुरे राजपूतों की वाहिनी जैसलमेर दुर्ग से निकलकर मरु प्रदेश की ओर बढ़ रही थी । रत्ना ने वीर वेश में सजे अपने पिता के मस्तक पर चंदन का टीका लगाकर आरती उतारी और उन्हें युद्ध क्षेत्र में जाने के लिए बिदा किया । महाराज रत्न सिंह आज बड़े प्रसन्न दीख रहे थे । अपनी पुत्री की नारी सुलभ ममता, सरसता और पुरुष सुलभ दृढ़ता, बुद्धिमत्ता ने उनके पुत्राभाव के गड्ढे को पूर दिया था । उनके जाते ही रत्ना ने दुर्ग की रक्षा का भार अपने कंधों पर सम्हाल लिया ।

इस घटना को एक सप्ताह भी नहीं बीता था कि जैसलमेर के पूर्वाकाश में धूल का एक बवंडर उठता दिखाई पड़ा । मरुभूमि में आधियाँ उठती ही रहती हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसलिए दुर्गवासियों ने उस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया । यह धूल मलिक काफूर के नेतृत्व में जैसलमेर विजय के लिए आ रही सेना के कारण उड़ रही थी । सेना ने आते ही दुर्ग को घेर लिया । जैसलमेर का विकट दुर्ग यों ही उनके अधिकार में आ जाना संभव नहीं था । अत: मलिक काफूर को विवश हो घेरा डालना पड़ा । वह उसे जीतने का उद्योग करने लगा ।

मलिक काफूर अपनी वीरता व कूटनीति के कारण सारे भारत में प्रसिद्ध हो गया था । साधारण से गुलाम से सेनापति वह अपने उन्हीं गुणों के कारण बना था । उसने कई राजाओं को हराया था । मदोन्मत्त काफूर ने अपने सैनिकों को दुर्ग पर प्रबल आक्रमण करने की आज्ञा दी । किंतु रत्ना भी कम नहीं थी । वह पुरुष वेश में कमर में तलवार बाँधे, हाथ में धनुष बाण लिए, पीठ पर तरकश बाँधे किले में घूमती रहती । अपने थोड़े से सैनिकों से ही ऐसी मोर्चा बंदी की थी कि टिड्डीयों की तरह उमड़ कर आने वाले शत्रु दल को हर बार पीछे हटना पड़ता ।

एक दिन शत्रु के सैनिक किले की दीवारों पर चढ़ने लगे । ऊपर से बरसने वाले तीरों की परवाह न करते हुए वे ऊपर ही चढ़े चले आ रहे थे । उसी समय ऊपर से गर्म तेल, पत्थर, मिर्च से घोला हुआ खौलता पानी गिराया गया । फलत: वे अपने इस दु:साहस का अच्छा फल पा गए ।

मलिक काफूर को घेरा डाले कई दिन हो गए । उसे दुर्ग विजय के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे । उसकी हर चाल का उत्तर रत्ना इस कुशलता व तत्परता से देती थी कि वह अपना सा मुँह लेकर रह जाता । उसने देखा कि उसे यों युद्ध करते हुए तो दुर्ग पर अधिकार करने में कई वर्ष लग जाएंगे । तब उसने दूसरा रास्ता अपनाया । वह कूटनीतिक चालें खेलने पर उतर आया ।

साँझ धीरे-धीरे मरुभूमि पर उतर रही थी । सूरज किसी अज्ञात प्रदेश की यात्रा पर जा रहा था मरु धरती को छोड़कर । ऐसे ही समय एक मनुष्य की छाया दुर्ग की ओर अग्रसर हुई और दीवार पर चढ़ने लगी । रत्ना बुर्ज पर खड़ी उसके क्रिया-कलाप देख रही थी । उसने कड़क कर पूछा-"कौन है ?"

"आपके पिता का संदेश वाहक ।"

"क्या संदेश लाए हो, बोलो ।"

"नहीं, वहीं आकर बताऊँगा ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"बताओ, नहीं तो प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा ।"

उसकी यह चेतावनी अनसुनी करके वह छाया दीवार पर चढ़ती ही रही । रत्ना ने ऊपर से निशाना साधकर तीर छोड़ा । वह धरती पर गिर पड़ा और मर गया । सबने देखा, वह शत्रु का सैनिक था ।

मलिक काफूर ने एक द्वार रक्षक को घूस देकर अपनी ओर मिलाने का प्रयास किया । उसे काफी सोना दिया गया । द्वार रक्षक पूरी तरह ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ था । उसने राजकुमारी के सामने जाकर सभी बातें कह दीं-"मलिक काफूर ने यह सोना मुझे इसलिए दिया है कि मैं रात्रि में द्वार खोल दूँ जिससे काफूर अपने चुने हुए सैनिकों के साथ दुर्ग में प्रवेश कर सके ।"

राजकुमारी ने उसकी कर्तव्यनिष्ठा की सराहना करते हुए कहा कि तुम उस समय द्वार खोल देना और मलिक काफूर और उसके चुने हुए सैनिकों को भीतर लेकर फिर द्वार बंद कर देना और गुप्त द्वार से मेरे पास आ जाना । उसने ठीक वैसा ही किया जैसा राजकुमारी ने उसे आदेश दिया था । मलिक काफूर व उसके सैनिकों को भीतर लेकर उसने द्वार बंद करके ताला लगा दिया और अंधेरे में ऐसा लोप हुआ कि उन्हें कुछ पता ही न चला । इस प्रकार काफूर अपने सैनिकों सहित चूहेदानी में फँस कर रह गया ।

जैसलमेर का घेरा डाले महीनों बीत गए और किला हाथ नहीं आया वरन् उसका चतुर और वीर सेनापति एक लड़की से मात खाकर बंदी हो गया है-यह समाचार जब अलाउद्दीन खिलजी तक पहुँचा तो उसने जैसलमेर विजय करने का इरादा ही छोड़ दिया । जिस देश में ऐसी वीर और बुद्धिमती कन्याएं हों, उसे जीत पाना उसके बस में नहीं था । अत: उसने महाराज रत्न सिंह के पास दूत भेज कर संधि कर ली ।

मलिक काफूर जो एक गुलाम था, उसे स्नेह, सहानुभूति व मानवतापूर्ण व्यवहार कहीं नहीं मिला था । इसी कारण वह क्रूर हो गया था । उसने रत्ना का दुर्ग की रक्षा करते समय जो रूप देखा था उससे कुछ भिन्न स्वरूप अपने बंदी काल में देखा । बंदी होते हुए भी उसके व उसके सैनिकों के साथ राजकुमारी ने सहृदयतापूर्ण व्यवहार किया था । उन्हें वही भोजन दिया जाता था जो दुर्ग के अन्य सैनिकों को दिया जाता था । जब घेरा लंबा होने लगा, दुर्ग की खाद्य सामग्री कम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़ने लगी तो राजकुमारी ने उन्हें अपने सैनिकों की अपेक्षा अधिक ही भोजन दिया । उसके इस मानवीय व्यवहार से वह बहुत प्रभावित हुआ था । राजकुमारी ने उसके शरीर को ही बंदी बना कर पराजित नहीं किया था वरन् उसके मन को भी पराजित किया था । तलवारों की भाषा जानने वाले इस सेनापति ने यहाँ आकर यह भी देखा कि मनुष्यता में, मानवीय व्यवहार व भावनाओं में भी एक शक्ति होती है जो शस्त्रों से कई गुना श्रेष्ठ होती है ।

रत्ना ने दुर्ग की रक्षा के साथ-साथ अपने दुर्ग में रहने वालों को भी परिवार के कर्त्ता-धर्ता की तरह पाला था । अन्न की कमी होने पर उसने दुर्ग में सबसे कम अन्न खाना आरंभ कर दिया था । दुर्गवासियों के लाख आग्रह करने पर भी उसने उस निश्चित मात्रा में किंचित मात्र भी वृद्धि नहीं की थी । इस कमी करने से उसका शरीर कुछ दुर्बल हो गया था किंतु चेहरे की कांति व आत्मिक तेज और भी बढ़ गया था ।

एक दिन उसने दुर्ग की प्राचीर पर खड़े-खड़े देखा कि सुल्तान की सेना अपने डेरे-डंडे उखाड़कर जा रही है । सुदूर मरु प्रदेश से भगवा ध्वज फहराती हुई राजपूत सेना दुर्ग की ओर बढ़ी चली आ रही है । निकट आने पर देखा महाराजा रत्न सिंह सबसे आगे चपल अश्व पर बैठे गर्व से सीना फुलाए जैसलमेर लौट रहे थे । रत्ना के हर्ष का पारावार न रहा उसने जो वचन अपने पिता को दिया था, वह पूरा हो चुका था ।

दुर्ग में स्वागतसूचक तुरही बज उठी । दुर्ग के द्वार खोल दिए गए । रत्ना ने श्रद्धावनत हो पिता को प्रणाम किया तो उन्होंने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा- "सचमुच तूने देश की लाज रख ली । तू बेटी भी है और बेटा भी । आज मेरा मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया । लोग व्यर्थ ही पुत्र के लिए आग्रह रखते हैं जबकि पुत्री पुत्र से किसी कदर कम नहीं होती ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महारानी लक्ष्मीबाई

बिठूर (कानपुर) में पेशवा बाजीराव के दत्तक पुत्र नाना साहब तथा उनके मित्रगण हाथी पर चढ़कर हवाखोरी के लिए जा रहे थे । सात वर्ष की आयु की बालिका लक्ष्मीबाई ने भी हाथी पर चढ़ने की जिद की । बाजीराव ने नाना साहब से बार-बार लक्ष्मीबाई को भी साथ में बैठा लेने को कहा पर वे न माने ।

यह देखकर लक्ष्मीबाई के पिता मोरोपंत ने नाराज होकर अपनी पुत्री को डाँटा और कहा-"क्या तेरी तकदीर में हाथी पर बैठना लिखा है ? क्यों व्यर्थ में हठ करती है ।" लक्ष्मी देवी ने तड़ाक से उत्तर दिया-"मेरी तकदीर में तो दस हाथियों पर बैठना लिखा है ।"

उस समय तो सबने इस बात को उसकी बालसुलभ चपलता ही समझा, पर एक-दो वर्ष बाद ही उसका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ हो गया और वह वास्तव में दस हाथियों की स्वामिनी बन गई ।

रानी लक्ष्मीबाई (सन् १८३४ से १८५७) पेशवाओं के एक सामान्य मरहठा कर्मचारी की पुत्री थीं । उनके पिता मोरोपंत बाजीराव के भाई चिमनाजी अप्पा के यहाँ सामान्य लिखा-पढ़ी और हिसाब-किताब का काम किया करते थे । जब अंग्रेजों ने पेशवा के राज्य पर कब्जा कर लिया तो चिमना जी भी काशी जाकर रहने लगे । मोरोपंत भी उनके साथ काशी आये और वहीं उनकी पत्नी भागीरथी बाई ने १६ नवंबर १८३४ को लक्ष्मीबाई को जन्म दिया । पर वह अधिक समय तक मातृ प्रेम का उपभोग न कर सकीं । जब उनकी आयु ३-४ वर्ष की थी, तभी भागीरथी बाई का स्वर्गवास हो गया । चिमना जी का शरीरांत इसके पहले ही हो चुका था । ऐसी परिस्थिति में मोरोपंत बिठूर आये और बाजीराव के आश्रम में वहीं निवास करने लगे ।

जिस समय बालिका लक्ष्मीबाई बिठूर में पेशवाई राजमहलों में रहने लगी उस समय बाजीराव के दत्तक पुत्र नाना साहब, उनके भाई बाला साहब और भतीजे रावसाहब भी वहीं रहते थे । बाजीराव ने इन सब बालकों की शिक्षा की अच्छी व्यवस्था कर रखी थी । उनको पढ़ना-लिखना सिखाने के साथ ही अस्त्र-संचालन और घुड़सवारी की शिक्षा भी दी जाती थी । लक्ष्मीबाई (जिसका नाम उस समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुबाई था) यद्यपि आयु में छोटी थी, पर पेशवा के बालकों के साथ सब प्रकार की शिक्षा प्राप्त करती रहती थी । उस समय से उसे घुसड़वारी और हथियार चलाने का शौक लग गया, जो आगे चलकर उसे आदर्श वीरांगना बनाने वाला सिद्ध हुआ । पेशवा बाजीराव उसकी सुंदर और भोली आकृति को देखकर बड़े प्रसन्न होते थे और उसे 'छबीली' कहकर पुकारते थे ।

जिस समय बिठूर में लक्ष्मीबाई इस प्रकार शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करते हुए बड़ी हो रही थी, उसी समय झाँसी में महाराज गंगाधरराव गद्दीनशीन हुए । यद्यपि अंग्रेज सरकार उनको गद्दी का हकदार नहीं मानती थी और सन् १८३८ से १८४१ तक, चार वर्ष उसने अपना प्रतिनिधि रखकर झाँसी का शासन-कार्य चलाया भी था, पर फिर कुछ सोच-विचार कर गंगाधर राव को गद्दी दे दी गई । तो भी अब वे पूर्ण रूप से अंग्रेज सरकार के आश्रित हो गए थे । उनको यह शर्त स्वीकार करनी पड़ी कि वे अपने यहाँ अंग्रेजी सेना की एक टुकड़ी रखेंगे और उसके खर्च के लिए प्रति वर्ष सवा दो लाख रुपया वार्षिक देते रहेंगे ।

अंग्रेजों की उन दिनों यही नीति थी कि एक-एक करके यहाँ के देशी राज्यों को आत्मसात् कर लिया जाय । पहले तो वे राजाओं से मित्रता करने का बहाना करते थे, उनके यहाँ अपना प्रतिनिधि नियुक्त करते थे और बाद में जब किसी कारण उन्हीं राजाओं की स्थिति कमजोर पड़ती दिखाई देती तो कोई बहाना निकालकर उसे हड़प जाने की कोशिश करते । झाँसी के साथ भी उन्होंने इसी नीति का प्रयोग किया । पहले उन्होंने झाँसी के राजा शिवराम भाऊ से बराबरी की शर्तों पर संधि की थी । पर उसके देहांत होने पर जब उसके उत्तराधिकारियों में वैमनस्य होने लगा तो ये वहाँ अपना प्रभाव बढ़ाने लगे और गंगाधर राव के समय तक उसकी स्थिति पूर्ण रूप से अपने आश्रित राज्य की तरह बना दी ।

गंगाधर राव एक दयालु और प्रजा-हितैषी राजा थे । जनता के सुख-दु:ख का उनको सदा ध्यान रहता था । लोग प्रेम से उनको 'काका साहब' कहकर पुकारते थे । झाँसी राज्य के भविष्य की उनको सदा चिंता रहती थी, क्योंकि वे अंग्रेजों की स्वार्थयुक्त नीति को भली प्रकार समझ गए थे । खासकर जब लक्ष्मीबाई के विवाह को ८ वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी उनको कोई संतान नहीं हुई तब तो उनकी चिंता और भी बढ़ गई । वे जानते थे कि यदि कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्तराधिकारी न हुआ तो अंग्रेज अवश्य झाँसी पर अधिकार कर लेंगे ।

अब उनका ध्यान धार्मिक कार्यों की तरफ अधिक जाने लगा । वे तीर्थयात्रा के लिए रवाना हुए और कई महीने तक अनेक तीर्थों में जाकर खूब दान-पुण्य किया । जब वे तीर्थयात्रा से लौटे तो लक्ष्मीबाई गर्भवती हो गईं और सन् १८५१ में उसने एक पुत्र को जन्म दिया । इससे राजा और प्रजा सबको बड़ी खुशी हुई, पर वह बालक तीन मास की आयु में ही जाता रहा । गंगाधर राव को तो इससे इतना शोक हुआ कि उनका स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरने लगा और दो साल बाद ही उनका देहांत हो गया । मरने से एक दो दिन पहले उन्होंने अपने वंश के एक बालक दामोदर राव को दत्तक लिया और अंग्रेज अधिकारियों को सूचित किया कि उनके पश्चात उसे राज्य का उत्तराधिकारी माना जाय ।

पर झाँसी की निर्बल दशा देखकर अंग्रेजों के मन में बेईमानी का भाव उत्पन्न हो गया था । उनके झाँसी स्थित प्रतिनिधियों ने महाराज के मरते ही खजाने और किले पर अधिकार कर लिया और महारानी लक्ष्मीबाई को नगर स्थित राजमहल में रहने का आदेश दिया । उन्होंने उनके खर्च के लिए केवल ५ हजार रुपया सालाना की पेंशन मंजूर की ।

जिस समय की यह घटना है उन दिनों भारतवर्ष का शासन सूत्र लार्ड डलहौजी के हाथ में था । उसकी नीति स्पष्ट रूप से देशी-राज्यों का अस्तित्व मिटाकर उन सबको अंग्रेजी शासन के अंतर्गत ले आने की थी । दो-चार वर्ष के भीतर ही उसने केवल झाँसी को ही नहीं, वरन् नागपुर, सतारा, लखनऊ आदि कितने ही बड़े-बड़े राज्यों को 'उत्तराधिकार' की शर्त के नाम पर जप्त कर लिया था । पेशवा बाजीराव के मरने पर उनके दत्तक पुत्र नाना साहब को अनाधिकारी बतलाकर उनकी ८ लाख की पेंशन भी बंद कर दी गई थी ।

महारानी लक्ष्मीबाई ने सरकारी आज्ञा का कड़ा विरोध किया और दृढ़तापूर्वक कहा-"मैं झाँसी नहीं दूँगी ।" उन्होंने ५ हजार की पेंशन न लेकर अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव की तरफ से इंग्लैंड की सर्वोच्च न्याय संस्था तक अपील की । पर जब उसका कोई परिणाम नहीं हुआ, तो वे उचित समय की प्रतीक्षा में चुप होकर बैठी रहीं ।

इधर अंग्रेज अधिकारियों की नीति के विरुद्ध समस्त देश में असंतोष की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भावना दिन पर दिन गहरी होती जाती थी । उधर भारतीय सेना में जो नई तरह के कारतूस आये उनके लिए यह अफवाह फैली कि उनमें गाय और सूअर की चर्बी लगी है और उन्हें चलाते समय दाँतों से काटना पड़ेगा । इससे हिंदू-मुसलमान दोनों धर्मों के सिपाहियों ने क्रोधित होकर उनको व्यवहार में न लाने का निश्चय किया । अंग्रेजों के विरुद्ध इस देशव्यापी असंतोष को देखकर कुछ भारतीय राजनीतिज्ञों ने, जिनमें प्रमुख नाम नाना साब पेशवा का था, विद्रोह की योजना बनाई । सन् १८५७ की १० मई को मेरठ छावनी के भारतीय सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया जिसका कठोरपूर्वक दमन किया गया । इससे देश भर में असंतोष की अग्नि भयंकर रूप धारण करने लगी और ४ जून को कानपुर और झाँसी दोनों स्थानों की सेनाओं ने विद्रोह करके अंग्रेज अफसरों को मार डाला ।

महारानी लक्ष्मीबाई का आरंभ में इस विद्रोह से प्रत्यक्ष में कोई संबंध न था । इतना ही नहीं जब विद्रोही सिपाहियों ने झाँसी के किले में ७० अंग्रेज पुरुष-स्त्रियों को घेर लिया तो वे तीन दिन तक उनके खाने के लिए छिपे तौर पर रोटियाँ भेजती रहीं । पर उसके पश्चात जब उन्होंने झाँसी नगर को सब प्रकार से अरक्षित देखा तो खाली किले पर अधिकार करके उसे फिर से युद्धोपयोगी बनाया । सेना में कई हजार नई भर्ती की गई, बहुत-सी तोपों को ठीक करके बुर्जों पर लगाया गया और सब प्रकार की युद्ध-सामग्री संग्रह करके भावी संघर्ष की तैयारी कर ली गई ।

इस तरह नौ महीने तक लक्ष्मीबाई ने बड़ी योग्यता और दूरदर्शिता के साथ झाँसी का शासन किया । इस बीच में उन्होंने दो आक्रमणकारियों को, जो झाँसी को बिना मालिक का समझकर उस पर अधिकार जमाने को आये थे हराकर भाग जाने पर विवश किया । पर जब अंग्रेजों की नई सेनायें इंग्लैंड से आ गईं और सेनानायक-सर ह्यूरोज एक-एक करके कितने ही विद्रोही राजाओं को हराते हुए झाँसी पहुँचे तो वहाँ बड़ा कठिन संग्राम हुआ । इसमें लक्ष्मीबाई ने जो वीरता और प्रबंध कुशलता दिखाई उससे उसका नाम चारों तरफ फैल गया । १८ दिन तक अंग्रेजों की सुसंगठित सेना झाँसी के किले से टक्कर मारती रही पर हर बार उसे पीछे ही वापस आना पड़ा । अंत में जब ३ अप्रैल १८५८ को किले पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया तब लक्ष्मीबाई मर्दानी पोशाक पहनकर कुछ सिपाहियों के साथ अंग्रेजी सेना के घेरे को तोड़कर बाहर निकल गईं और काल्पी पहुँचकर स्वतंत्रता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संग्राम के अन्य नेताओं के साथ मिलकर अंग्रेजों का मुकाबला करने लगीं ।

काल्पी और ग्वालियर के युद्धों में महारानी लक्ष्मीबाई ने जिस अप्रतिम साहस और रण कुशलता का परिचय दिया, उससे उसका नाम भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में अमर हो गया । जबकि अन्य विद्रोही नेता कठिन अवसरों पर पीछे हट गए, रानी लक्ष्मीबाई ने ऐसी वीरता के साथ घमासान युद्ध किया कि शत्रु और मित्र दाँतों तले अँगुली दबाने लगे । अंत में ग्वालियर के युद्ध में १७ जून को अंग्रेजी सेना के व्यूह में घुसकर उसने ऐसी तलवार चलाई कि जो सामने आया उसी का सर धड़ से अलग होता चला गया । पर अंग्रेज सिपाहियों की गोलियों से उसका घोड़ा इतना घायल हो गया कि वह मैदान से भाग खड़ा हुआ । स्वयं रानी भी बहुत अधिक घायल हुई थीं जिससे कुछ दूर जाकर वह भी गिर गईं ।

इस प्रकार इस वीर महिला का अंत हो गया, पर उसने वीरता का अनुपम आदर्श दिखाकर भारतीय नारियों पर अबला और डरपोक होने के आक्षेपों का पूरी तरह निराकरण कर दिया । इसी प्रकार उन्होंने अपनी शासन संबंधी योग्यता से भी यह सिद्ध कर दिखाया कि स्त्रियों को अवसर दिया जाय तो वे भी सब तरह के सार्वजनिक कार्य सफलतापूर्वक कर सकती हैं । विजयी अंग्रेजी सेना के प्रधान सेनापति सर ह्यूरोज ने उसके मरने का समाचार पाकर कहा कि "अगर विद्रोही नेताओं में कोई 'मर्द' था वह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ही थी ।"

वीरांगना-वेलु नाचियार

एक और एक ग्यारह होना तो सामान्य बात है पर कभी-कभी एक और एक ग्यारह सौ भी हो जाते हैं । मद्रास राज्य के शिवगंगा रियासत का अधिपति मुथु बटुकनाथ और उसकी वाग्दत्ता वेलु नाचियार ऐसे ही दो व्यक्ति थे जो मिलकर ग्यारह नहीं ग्यारह सौ हो जाते हैं । ऐसे वीर साम्राज्यवादियों का सिर दर्द भी कम नहीं होते । वेलु नाचियार और मुथु बटुकनाथ भी ईस्ट इंडिया कंपनी सरकार के लिए अच्छे खासे सिर दर्द बन चुके थे ।

दक्षिण भारत से उठती हुई उस आँधी को मराठों ने भले ही न जाना हो पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंग्रेजों ने बखूबी समझा था । हैदर अली भी खूब समझा था इस व्यापारी कौम को, जो भारत पर राज्य करने नहीं रक्त चूसने के लिए आयी थी । यहाँ पर यह आँधी उसी की उठायी हुई थी । यह बात दूसरी है कि इतिहासकार उस तथ्य को भूल गए हों या उन्होंने जान बूझकर उन तथ्यों को नकार दिए हों कि १८५७ के पहले ही एक क्रांति दृष्टा ने क्रांति का अलख जगाया था । उसके लिए अपना सारा राजपाट होम दिया था और साथ में सुख-वैभव भी ।

हैदर अली, गुलबर्ग के एक सामान्य से सिपाही का पुत्र था और अपनी प्रतिभा-योग्यता के बल पर निजाम का राजा बना था । उसने अंग्रेजों का नामो निशान ही मिटा देने की शपथ खायी थी । मराठे उसकी बात की गहराई को समझे नहीं थे । इसी कारण उन्होंने हैदर का साथ न देकर अंग्रेजों का साथ दिया था उस युद्ध में । तब वे लोग शिवाजी के और समर्थ के 'देव महत की धरावा अवधा हल कल्लोल कराया । मुलख बड़वा वुडवाया धर्म संस्थापना साठी ।' के आदर्श भुलाकर राज्य लिप्सा में डूब चुके थे । वे भला समझते भी कैसे हैदरअली के उस उद्योग को ।

हैदर का पुत्र टीपू सुल्तान उसी के पद चिह्नों पर चल रहा था । क्रांति कभी मरती नहीं है । उसके उपासक अकेले चलने का साहस भी रखते हैं और चलते हैं । उन्हें समझने वाले भी मिलते हैं और साथी भी । हैदर अली को न सही टीपू सुल्तान को साथी मिल चुका था-शिव गंगा रियासत का अधिपति मुथु बटुकनाथ । अंग्रेजों से कम से कम दक्षिण को तो स्वतंत्र करा ही लिया जाय इस आशय से भीतर ही भीतर तैयारियाँ चल रही थीं ।

वेलु नाचियार समरांगण में दमकने वाली दामिनी थी, मात्र पुरुष के पीछे चलने वाली अबला नारी नहीं । अत: वह भी पूरे उत्साह के साथ इस क्रांति के अभियान में भाग ले रही थी । उसने तो प्रतिज्ञा भी कर ली कि जब तक दक्षिण भारत से अंग्रेजों का राज्य समाप्त नहीं हो जाएगा वह विवाह नहीं करेगी । टीपू सुल्तान उसका धर्म बंधु था । हिंदू और मुसलमान मत के मानने वाले होते हुए भी वे संकीर्णमना नहीं थे, अपने धर्म को बखूबी समझते थे-क्रांति धर्म को, राष्ट्र धर्म को ।

गुपचुप तैयारियाँ चल ही रही थी पर मुथु बटुकनाथ और वेलु नाचियार को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्या पता कि स्वार्थ जाने कब किसे अंधा बनाकर रख दे । उन्हीं के एक साथी के सिर पर स्वार्थ चढ़ बैठा । उस देशद्रोही का नाम था कट्टू । जहाँ टीपू, वेलु और मुथु भारत की स्वतंत्रता का उच्च स्वप्न देख रहे थे, उस कृतघ्न के मन में संकीर्ण एषणा जागी, शिवगंगा का राज्य पाने की । फिर क्या था उसने रुख किया अंग्रेजों की ओर ।

वह मद्रास के कलेक्टर जेक्सन के पास पहुँचा । अंग्रेजों की यही नीति रही थी कि भारतवासियों को एक होकर सोचने नहीं दिया जाय । एक को स्वार्थ की खातिर दूसरे से लड़ा दिया जाय । कट्टू ने जब जेक्सन से महत्वपूर्ण सूचना देकर शिवगंगा स्टेट का अधिपति बनने की अभिलाषा प्रकट की तो उसने तुरंत ही उसे आश्वासन भी दे दिया । साथ ही वेलु के अपहरण की योजना भी बना डाली ताकि शिवगंगा का अधिपति टीपू सुल्तान के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजों की अभिलाषाओं को धूल में मिलाने का उद्योग करे, उसके पहले ही उसे अकेले घेर लिया जाय । वेलु का अपहरण उसी दुश्चक्र की एक कड़ी था ।

कट्टू की आँखों में तो शिवगंगा स्टेट का अधिपति होने के सपने तैर रहे थे । उसने अपने स्वामी के साथ विश्वासघात किया । एक दिन अवसर देखकर कंपनी के कुछ छद्मवेशधारी सैनिकों की सहायता से उसने वेलु को बंदी बना लिया । उसके हाथ-पाँव बाँधकर घोड़े पर डालकर वह चल दिया जेक्सन के पास । वेलु अपने इस सहयोगी की इस गद्दारी पर बहुत दुःखी थी और क्रुद्ध भी, पर क्या करती, हाथ-पाँव जो बंधे थे, उसे इस दुष्टता का मजा चखाती भी तो कैसे ? किंतु विवशता को विवशता मान लेना भी तो कमजोरी ही होती है और वेलु उस कमजोरी से मुक्त थी । उसने दांतों से अपने हाथों के बंधन काट डाले । फिर क्या था उसी की कमर में लटकती कटार निकाल कर विद्युत की सी त्वरा से कट्टू के सीने में उतार दी । उसे मिल गयी देशद्रोह की सजा । कट्टू के साथी भाग निकले ।

उन भागे हुए सैनिकों से मद्रास के कलेक्टर जेक्सन ने कट्टू के मारे जाने और वेलु के पराक्रम की कहानी सुनी तो उसने तुरंत ही कुछ करने का निश्चय कर लिया । उसने अपने उच्च अधिकारी से सैन्य सहायता की माँग की । बाजोर नामक सेनापति के नायकत्व में उसे इच्छित सहायता मिल गयी । वह अचानक शिवगंगा स्टेट पर चढ़ बैठा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी सेना से पाँच गुनी सेना के साथ अचानक चढ़ आयी अंग्रेजी सेना का मुकाबला मुथु बटुकनाथ ने बड़ी वीरता से किया । युद्ध में सैनिकों की संख्या बल और शस्त्रास्त्र बल की नहीं, मनोबल की विजय होती है । मुथु बटुकनाथ ने इस युद्ध में अपूर्व वीरता और साहस का परिचय दिया । उससे उसके सैनिकों के हौसले आकाश छूने लगे । किंतु इस युद्ध में वह वीरगति को प्राप्त हुआ । वेलु भी उसके साथ ही मर्दाने वेश में लड़ रही थी । राजा के मरते ही सैनिकों में भगदड़ मच गयी । पर तभी वेलु ने सबको ललकारा और स्वयं दूने वेग से युद्ध करने लगी । उसे देखकर सैनिकों ने भी पुनः अंग्रेजों के दाँत खट्टे करना आरंभ कर दिया । देखते ही देखते जेक्सन और बाजोर जैसे कुशल सेनापतियों को भाग खड़ा होना पड़ा और उनकी करारी हार हुई । अंग्रेज सेना पाँच गुनी होते हुए भी देशी रियासती सैनिकों से हारकर भाग खड़ी हुई ।

वास्तव में यह विजय मुथु बटुकनाथ और वेलु नाचियार के पराक्रम के कारण मिली थी । स्वयं वेलु इस युद्ध में इतनी घायल हो चली थी कि उसके बचने की कोई आशा नहीं थी । अंग्रेजों के भाग खड़े होने तक तो वह जाने किस होश से लड़ती रही पर बाद में वह मूर्छित होकर गिर पड़ी । उपचारादि की व्यवस्था हुई पर सब व्यर्थ । उसकी हालत बिगड़ती ही चली गयी ।

अंग्रेजों द्वारा अचानक अपने सहयोगी और मित्र पर आक्रमण किए जाने की सूचना जब टीपू सुल्तान को मुथु के संदेश वाहक से मिली तो वह अपनी धर्म बहन और उसके पति की सहायता करने के लिए बड़ी सी सेना लेकर आ पहुँचा युद्ध क्षेत्र में । पर यहाँ पहुँचकर उसने जो दृश्य देखा वह अद्‌भुत था । मुथु के शव पर सिर रखे उसकी बहन की निष्प्राण काया तो पड़ी थी पर उसमें निहित आत्म ज्योति परमात्मतत्व में विलीन हो चुकी थी । विजय और मृत्यु दोनों एक साथ ।

एक बार इतिहास फिर अपने को दोहरा रहा था । कर्मादेवी की सहायता को आया हुमायूँ भी अपनी बहन को नहीं पा सका था और न टीपू ही । पर अंतर इतना था कि वेलु विजय श्री वरण करने के अनंतर मरी थी । टीपू की आँखों में आँसू आ गए । अपने सहयोगियों की मृत्यु के कारण नहीं, वेलु की वीरता और स्वातंत्र्य भावना के लिए किए गए प्राणोत्सर्ग को देखकर, साथ ही बहन की ममता खो जाने की वेदना से भी । क्रांति का स्वरूप भले ही बदला हो पर उसकी आवश्यकता तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज भी उतनी ही है जितनी उस समय थी । वीरांगना वेलु की आत्मा हमें भी वह शक्ति प्रदान करे कि हम अपने उस धर्म को निभा सकें । जब-जब भी समाज में और राष्ट्र में दु:स्थितियां, विपन्नताएं और विकृतियाँ पैदा होती हैं, जन साधारण का जीना दूभर हो जाता है तब क्रांति की आवश्यकता होती है । वर्तमान की परिस्थितियाँ भी कुछ ऐसी ही हैं जिनमें की वेलु नाचियार जैसी वीरांगना की आवश्यकता है ।

वीरांगना भीमा बाई

होल्कर स्टेट इंदौर रियासत के साथ दो नारी रत्नों के नाम जुड़े हुए हैं । इतिहास के ये दो उज्ज्वल रत्न अपनी कभी लुप्त न होने वाली आभा से आज भी दिप-दिप करते चमक रहे हैं । उनमें से एक हैं कुशल प्रशासक और प्रजा वत्सला रानी अहिल्या बाई होल्कर और दूसरी हैं भीमा बाई होल्कर-वीरता, कौशल, संगठन और गुरिल्ला युद्ध के माध्यम से अंग्रेजों के नाकों दम करने वाली भीमा बाई होल्कर ।

भीमा बाई उन्हीं वीरवर यशवंत राव होल्कर की यशस्वी पुत्री थी जिन्होंने १८०४ में मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तरप्रदेश को जोड़ने वाली उलट प्रवाही सलिला-चंबल के तट पर ईस्ट इंडिया कंपनी के सेनानायक कर्नल मोन्सुन को करारी हार का कड़वा घूंट पीने को विवश किया था । पर यशवंत राव की मृत्यु के बाद उनका पुत्र जो होल्कर स्टेट का अधिपति बना, वह उतना वीर और योग्य नहीं था । अत: १८१७ में महीदपुर की लड़ाई में अंग्रेजी सेना नायक कर्नल मालकम कर्नल मोन्सुन के समय की पराजय का बदला लेने में सफल हो गया ।

इस देश का दुर्भाग्य ही कहना होगा कि सम्राट् हर्ष के पश्चात भारतवर्ष को एक सुदृढ़ शासन के रूप में संगठित करने का प्रयास इने-गिने लोगों ने किया । उसका तात्कालिक प्रभाव भी हुआ । पर फिर थोड़े समय में वही ढर्रा चलने लगा, अलग-अलग रहने का । अकेला चाहे कितना ही धीर, वीर, सुयोग्य क्यों न हो, अंतत: अकेला है । सामूहिकता का लाभ उठाने के बजाय पृथकता की हानिकारक नीति अपनाकर हम भारतवासी आज तक दु:खी होते आ रहे हैं जबकि इतिहास इस बात को चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा है-व्यक्तिवादी नहीं समाजवादी बनो । शक्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्ति में भी है पर समाज की शक्ति उससे हजार गुना बड़ी है । उठना है तो समाज को उठाओ । अकेले उठने से कुछ अधिक बनता-बिगड़ता नहीं ।

सत्रहवीं शताब्दी में समर्थ गुरु रामदास ने ऐसी जन चेतना पैदा की जिससे भारत एक समर्थ महा राष्ट्र बने । शिवाजी ने उस चेतना से लाभ उठाया । समर्थ अपने लिए संन्यासी नहीं बने थे, अपने श्री, सम्मान और उत्कर्ष के लिए या आत्म कल्याण के लिए वे विवाह की वेदी से नहीं उठ भागे थे और न उनके शिष्य शिवाजी ने अपने यश और श्री के लिए राज्य का गठन किया था । वरन् वे तो शक्तिशाली भारत महाराष्ट्र के स्वप्न को साकार करने के लिए कर्मरत हुए थे । उनके उद्योग का फल तो निकला । उनके वंशधर इतने शक्ति संपन्न हुए कि सोये भारत में पुन: एक जाग्रति दिखाई देने लगी । कभी भारत भर में उनकी तूती बोलती थी । वे सभी राजाओं से चौथ वसूलते थे । पर जहाँ संगठन शक्ति और महाराष्ट्र के महान उद्देश्य को भुलाना आरंभ हुआ वहीं से पराभव होने लगा-भारत महादेश का भी और मराठों का भी । पहले वे एक थे और अब चार हो गए । बँटकर-होल्कर, सिंधिया, भोंसले और गायकवाड़ हो गए, मराठे नहीं रहे । नाम से भले ही कहलाते रहे हों पर उद्देश्य से तो च्युत हो चुके थे ।

इसी बँटकर बिखर जाने की भूल का परिणाम हर एक को भुगतना पड़ा । होल्कर स्टेट के यशवंत राव पराक्रमी थे तो वे अंग्रेजों के दांत खट्टे करते रहे पर उनके दिवंगत होते ही इंदौर स्टेट पर अंग्रेजों का वर्चस्व स्थापित हो गया । किंतु भीमा बाई इस पराजय को भला कैसे स्वीकार कर सकती थी । महीदपुर में हुई पराजय के समय वह पतिगृह में थी । वह कभी पराजय और परतंत्रता को स्वीकार करने वाली नहीं थी सो उतर पड़ी मैदान में, सब सुख-सुविधाओं को छोड़कर ।

उसने वहीं से गिनना आरंभ किया जहाँ से महाराष्ट्र का शुभारंभ हुआ था । छत्रपति शिवाजी की छापामार युद्ध कला का मार्ग अपनाया भीमा बाई ने भी । उसने थोड़ी सी सेना संगठित करके छापामार युद्ध करना आरंभ किया । अंग्रेजी खजाने, चौकियाँ और रसद लूटी जाने लगी । इंदौर स्टेट पर अधिकार करके भी वे उसे भोग नहीं सके जब तक भीमा बाई जीवित रही ।

एक महिला द्वारा वर्षों तक ईस्ट इंडिया कंपनी सरकार को नाकों दम किए रखने, छिपकर रहने और पुरुष दल का संगठन-संचालन करने की यह अनोखी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिसाल है हमारे इतिहास में । अंग्रेज हैरान थे, परेशान थे कि जाने कहाँ से भीमा बाई के साथी छापामार योद्धाओं की टुकड़ी आती है और किसी भी चौकी पर, जाते हुए खजाने पर, रसद पर एकाएक आक्रमण करके उसे लूट ले जाती है । उनका राज्य होते हुए भी उनकी कोई बात चलती नहीं थी । किसी भी चौकी पर वे अपना स्थायी प्रभुत्व नहीं रख सके थे ।

सर मालकम की रातों की नींद हराम हो गयी । ठीक औरंगजेब के लिए शिवाजी के, आतंक की तरह भीमा बाई के छापामार युद्ध से कर्नल मालकम परेशान था । उसने प्राण पण से प्रयत्न किया कि वह भीमा बाई को पकड़ सके, पर भीमा उस मिट्टी की नहीं बनी थी कि वह अंग्रेजों के हाथ आ जाती । वह तो उन्हें स्टेट से भगाना चाहती थी पर पर्याप्त शक्ति न होने से उसने इस लंबे तरीके को हाथ में लिया था ।

भीमा बाई की शक्ति बढ़ती ही जा रही थी, मालकम को लगने लगा था कि उसे भागना पड़ेगा यहाँ से । उसने राज्य में गुप्तचरों का जाल सा बिछा दिया, उसे पकड़ने के लिए । पर जब तक उसकी उपस्थिति की सूचना उस तक पहुँचती तब तक तो वह स्थान बदल चुकी होती थी । भीमा बाई का यह वन-वन भटकना महाराणा प्रताप द्वारा अपनायी गयी वन साधना जैसा ही दुष्कर और दुर्वह कार्य था जिसे वह अपना स्वातंत्र्य धर्म समझ कर पाल रही थी । इस प्रकार के जीवन में शारीरिक दु:ख-कष्टों का आना तो सहज स्वाभाविक है । पर इसमें भी एक आत्मिक सुख मिलता है जो इन कष्ट-कठिनाइयों से कई गुना महत्वपूर्ण होता है । इस सुख का स्वाद आदर्शों के पथ पर चलने वाले ही जान सकते हैं । सत्य तो यह है कि सुख और दु:ख तो मन की वस्तु हैं । एक जिसे सुखकारक मानता है वही किसी अन्य के लिए दु:खकारक भी हो सकता है । अत: इस संबंध में विवेक से काम लेना ही हितकर होता है ।

एक दिन दुर्योग से भीमा बाई और उनके एक साथी पर, आखेट के लिए गए हुए सर मालकम की दृष्टि पड़ गयी । सर मालकम ने देखा कि अब वे अपने सिर दर्द से छुटकारा पा सकेंगे । यही सोचकर उन्होंने तुरंत उनके चारों ओर घेरा डाल दिया । भीमा बाई के संकेत पर उनका साथी सैनिक भाग खड़ा हुआ । मालकम भीमा के आत्म समर्पण को सुनिश्चित जान अत्यधिक प्रसन्न हो उठा । उसने सोचा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि वह अंग्रेजी राज्य की इस सिर दर्द को जीवित ही पकड़ लेगा । इसी आशय से अपना घेरा निरंतर तंग करता गया । भीमा अविचलित भाव से खड़ी हुई मालकम की तैयारी को तोल रही थी । निरंतर सिमटते सिपाहियों का घेरा जब बहुत संकुचित हो गया तो उसके लगाम के संकेत पर घोड़े ने ऐड़ लगाई । घोड़े की टाँगे ठीक मालकम के सिर की ओर उठी । उससे बचने के लिए हड़बड़ी में मालकम इधर-उधर हुआ तब तक तो उसका घोड़ा छलांग लगाकर घेरे से बाहर निकल चुका था । बाहर निकल कर वह जो सरपट भागा कि मालकम के सिपाही उसकी छाया भी न छू सके ।

भीमा बाई जब तक जीवित रही, वह विदेशी साम्राज्य लिप्सु अंग्रेज कंपनी सरकार के अफसरों के लिए सिर दर्द बनी रही । स्वतंत्रता के लिए उसके और उसके साथियों ने अपार दुःख और कष्ट झेला किंतु अपने प्रयासों द्वारा स्वातंत्र्य ज्योति को उस समय भी प्रज्ज्वलित रखा जिस समय सब ओर अंधकार ही अंधकार था । भीमा बाई के द्वारा जलायी गयी यह ज्योति भविष्य में प्रखर प्रकाश के रूप में उद्‌भासित होकर रही । उनका बलिदान व्यर्थ नहीं गया । महाकवि रवींद्र के 'एकला चलो.....' का मंत्र भी आदर्शोन्मुख व्यक्तियों के लिए कम प्रेरक नहीं है । आज के समय में भी ऐसी स्थिति हो सकती है-किसी क्रांति धर्मी के, आदर्शोन्मुख आत्मवादी के सामने । जब वह देखता है कि जमाना किसी और ही दिशा में जा रहा है, उसकी टेर सुनते हुए भी अनसुनी की जा रही है तो वहाँ भीमा बाई का व्यक्तित्व और कृतित्व उसे सहारा देता है, प्रेरणा-प्रकाश देता है ।

रानी चेन्नम्मा

प्रसंग सन् १८२४ का है । कंपनी सरकार अपनी सत्ता स्थापित करने के अंतिम चरण में चल रही थी । उस समय दक्षिण की एक छोटी सी रियासत किन्नूर अजगर गति से बढ़ते अंग्रेजों के लिए एक ऐसा अवरोध बन गई कि उन्हें सोचना पड़ा कि भारत भूमि कोई साधारण भूमि नहीं है ? इसे विजित करने में कदम-कदम पर रक्तदान करना होगा । छोटे से लेकर बड़े और साधारण से लेकर आसाधारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्ति में ज्वलंत देश-भक्ति और अखंड स्वाधीनता की भावना भरी हुई है । भारतीय जितने धर्मधीर हैं उतने ही तलवार के धनी भी हैं ।

किन्नूर कोई बड़ा राज्य नहीं था । यह तीन-सौ अट्ठावन गाँवों का एक सामूहिक संगठन था, जो आत्म-निर्भरता के आधार पर अपना सुख-समृद्धिमय जीवनयापन कर रहा था । छोटा होने पर भी यह राज्य दक्षिण के किसी भी बड़े राज्य से किसी बात में कम न था । किन्नूर की जनता बड़ी धर्म परायण तथा राष्ट्रनिष्ठ थी । किन्नूर का वणिक वर्ग ईमानदार था, जिससे व्यापार में दिन-दिन उन्नति होती थी । किसान, मजदूर इतने परिश्रमी थे कि भोजन, वस्त्र तथा जीवन की अन्य आवश्यकताओं के लिए किन्नूर को किसी दूसरे पर निर्भर नहीं होना पड़ता था । सहकारिता तथा संगठन किन्नूर की विशेषता थी । ग्राम-ग्राम में अखाड़े और व्यायामशालाएं चलती थीं, जिसमें तरुणों को शस्त्र शिक्षा भी दी जाती थी । शिक्षा तथा कला-कौशल का इतना प्रचार था कि किन्नूर उस समय संस्कृति तथा सभ्यता में अपना उच्च-स्थान बनाए हुए था और अपनी विशेषताओं के कारण बड़े-बड़े राज्यों के समकक्ष गिना जाता था । वीरता किन्नूर की परंपरा थी ।

यही तो सब कारण थे जिससे कंपनी सरकार को संपूर्ण दक्षिण भारत पर निष्कंटक प्रभुत्व स्थापित करने में किन्नूर हिमालय जैसी बाधा लगता था । जिस अंग्रेज शक्ति ने टीपू जैसे प्रचंड सुल्तान को पराजित कर लिया था, मराठों को दो बार युद्ध में हरा दिया था, उसको अपने संगठन तथा सतर्कता के कारण किन्नूर दुर्लंघ्य-सा लगता था । किंतु अंग्रेज अपने स्वभाव के कारण किन्नूर के विरुद्ध दुरभिसंधि में लगे ही रहे और बड़ी से बड़ी हानि उठा कर भी किन्नूर को विजित करने की तैयारी करते रहे थे ।

जब से हीरेमल्ल शेट्टी नामक एक वीर पुरुष ने अपनी योग्यता तथा वीरता के बल पर किन्नूर राज्य की स्थापना की थी, तब से ढाई सौ वर्ष या बारह पीढ़ियों से किन्नूर स्वाधीन चला आ रहा था । किन्नूर के स्वाधीनता प्रिय रणबाँकुरों की ज्वलंत देश-भक्ति ने किसी भी राजा अथवा नवाब को अपनी मातृभूमि की ओर आँख उठाकर भी न देखने दिया । तत्कालीन राज सत्ताओं ने किन्नूर की इस पवित्र मातृभूमि का सम्मान किया और संधिपूर्वक रहते हुए कोई छेड़छाड़ करने की मूर्खता नहीं की । किंतु अंग्रेज तो उस समय संपूर्ण भारत पर एकछत्र साम्राज्य का स्वप्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देख रहे थे । भोग-विलास से जर्जर राजा-महाराजाओं तथा नवाब-सुल्तानों के लोभ, अयोग्यता तथा असंगठन का लाभ उठाकर उन्हें अपने वश में कर लेने के अभ्यास से उन्मत्त अंग्रेज किन्नूर को स्वतंत्र कैसे देख सकते थे ? लाभ प्रति लाभ से उत्पन्न होने वाले लोभ को न रोक सकने वाले मनुष्य इसी प्रकार स्वार्थी, शोषक तथा अनीतिवान हो जाया करते हैं ।

उस समय मल्ल सर्ज नाम का राजा किन्नूर का शासक था । वृद्धावस्था के कारण वह राज-काज का भार भली भांति से वहन नहीं कर पाता था । किंतु उसकी रानी चेन्नम्मा बड़ी ही कुशल, वीर तथा उत्साही महिला थी । गुरु सिद्दप्पा, मल्लप्पा शेट्टी तथा वेंकटराम नाम के तीन मंत्रियों की एक परिषद् को साथ लेकर रानी चेन्नम्मा शासन तथा प्रशासन का सारा काम स्वयं चलाती थीं । राजा की शिथिलता के कारण उसने राज्य प्रबंध में कोई कमी अथवा अव्यवस्था न आने दी । वह सबेरे तीन बजे उठतीं, नित्यकर्म, पूजा-प्रार्थना तथा जलपानादि से निवृत्त होकर आठ बजे राज-कार्यों में लग जाती थीं और रात के नौ-दस बजे तक काम करती रहती थीं । कभी-कभी कार्य व्यस्तता के कारण दोपहर का भोजन तथा विश्राम उल्लंघित हो जाता था । किंतु रानी चेन्नम्मा इन व्यक्तिगत कष्टों की जरा भी परवाह नहीं करती थीं । वह चारों ओर से दिन-दिन बढ़ते हुए अंग्रेजों के खतरे को स्पष्ट देख रही थीं । वह राज्य को अंग्रेजों से बचाए रखने के लिए हर तैयारी के साथ सदा तत्पर रहना चाहती थीं और चाहती थीं कि उसकी संपूर्ण जनता भी उस खतरे के प्रति सावधान रहे और पूरी तरह तैयारी करती रहे ।

राजा को निर्बल समझकर राज्य में अवांछनीय तत्वों ने सिर उठाने का प्रयत्न किया । चोर, डाकू भी बढ़ने लगे । किंतु चेन्नम्मा ने सबका बुरी तरह दमन कर दिया । उसने सीमाओं तथा अरक्षित स्थानों पर चौकियां स्थापित कर दीं, जिनकी जाँच वह जब-तब वेश बदल कर स्वयं करने जाती थीं । नगरों में तो नागरिकों के से पुरुष वेश में घूमकर जनता की दशा और अवांछनीय तत्वों का पता लगाना उनका नित्य प्रति का मनोरंजन बन गया था । ग्रामों में सुरक्षा दलों और नगरों में सेवा-सैनिकों के संगठन बनाकर पूरे राज्य में सैनिक प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया । शस्त्रागारों तथा सेना की नई व्यवस्था की ।

शिक्षा संस्थाओं का उनने स्वयं निरीक्षण किया । उनका पाठ्यक्रम निश्चित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किया और वीर भावना से ओत-प्रोत ज्वलंत राष्ट्रीयता का एक नवीन पाठ्यक्रम बढ़ा दिया । विद्यालयों से लेकर सैनिक छावनियों तक में एक राष्ट्रीय प्रार्थना को अनिवार्य कर दिया, जिसके अंत में सारे सैनिक तथा विद्यार्थी इस सामूहिक संकल्प को नित्य दोहराते थे-"हे परम पावन जननी जन्मभूमि ! हम सब तेरे बच्चे तेरी शपथ लेकर यह संकल्प करते हैं कि यदि किसी ने तेरी भूमि पर आक्रमण करने का दु:साहस किया तो हम प्राण-पण से तब तक लड़ते रहेंगे, जब तक एक-एक शत्रु का सिर धराशायी न हो जायेगा । हमारे रक्त में तेरा अन्न-जल समाया हुआ है, उसका आभार हम सब संकट के समय प्राण देकर भी चुकायेंगे ।"

इस प्रकार बुद्धिमती तथा उद्योगशीला रानी चेन्नम्मा ने सामयिक परिस्थितियों तथा दूर-आगत भविष्य को दृष्टि में रखकर अपने राज्य को कील-कांटों से दुरुस्त कर दिया । रानी चेन्नम्मा राज्य की न केवल महत्वपूर्ण इकाई ही बन गई प्रत्युत वह सर्वाधिकार संपन्न शासिका मानी जाने लगी ।

सारी सावधानी तथा सतर्कता रखने पर भी साधु हृदया रानी चेन्नम्मा यह बात अवसर निकल जाने पर जान सकी कि उसकी मंत्रि-परिषद् के दो मंत्री मल्लप्पा शेट्टी और वेंकटराम आस्तीन के सांप बनते जा रहे हैं । वे स्वार्थ के वशीभूत होकर विश्वासघाती और देशद्रोही बन रहे हैं । नि:संदेह यदि यह दो अभाग्य-भोगी मंत्री विश्वासघात न करते तो राष्ट्र-नायिका का वह गौरव रानी चेन्नम्मा को मिलता जो तैंतीस वर्ष बाद रानी लक्ष्मीबाई ने पाया । भारत का स्वातंत्र्य संग्राम जो १८५७ में प्रारंभ हुआ वह १८२४-२५ में प्रारंभ हो गया होता और अवध-राज्य की तरह वह महासंपन्न, सुदूर दक्षिण के वेलगांव और धारवाड़ नगरों के बीच बसा छोटा-सा किन्नूर राज्य बरबाद न होता, जिसकी बरबादी और लूट के बाद भी जहाँ से अंग्रेजों को तीन हजार घोड़े, आठ सौ हाथी, दो हजार ऊँट, छत्तीस तोपें और पाँच हजार से ऊपर बंदूकों के साथ अतुल समर-सामग्री मिली थी और जिसके राज-कोषों की हीरे जवाहरातों से भरी संपत्ति बड़े-बड़े चार सौ छकड़ों पर लाद कर ले जाई गई थी ।

राजा मल्ल सर्ज की मृत्यु हुई और आयु तथा अनुभव में अपरिपक्व युवराज रुद्रसर्ज गद्दी पर आया । दोनों दुष्ट मंत्रियों ने उसे अपने मायाजाल में फँसा कर प्रभाव बढ़ा लिया और राजनीति को मनमाने ढंग से घुमाने लगे । उन्हीं दिनों अंग्रेजों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा मराठों के बीच द्वितीय युद्ध छिड़ गया । मराठों के नायक पेशवा ने सहायता के लिए रानी चेन्नम्मा को लिखा । रानी ने तुरंत मल्लप्पा शेट्टी और वेंकटराय के नेतृत्व में सहायता कुमुक रवाना कर दी । किंतु इन दोनों विश्वासघातियों के प्रपंच से उस सहायता का लाभ अंग्रेजों को पहुँचा । मराठे हार गए और अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ गया । अंग्रेजों ने उन दुष्ट मंत्रियों के हमराह आई हुई किन्नूर की बहुत-सी ताकत अपने नीचे दबा कर रानी चेन्नम्मा के सामने संधि की शर्तें रख दीं । रानी विवश थी, उसे संधि का प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा । किंतु जब कुछ समय बाद अंग्रेजों ने अपना राजनीतिक प्रतिनिधि रखने और उसके परामर्श से शासन चलाने का संशोधन रक्खा, तब रानी से सहन न हो सका । इसको वह किन्नूर की प्रभुसत्ता में हस्तक्षेप मानती थी, निदान उसने क्रुद्ध होकर पूरी संधि ही रद्द कर दी । अंग्रेजों को अपनी सेना हटानी पड़ी । किन्नूर फिर पूरी तरह स्वाधीन हो गया ।

किंतु यह अंग्रेजों तथा किन्नूर के संघर्ष की विशाल भूमिका थी । रानी इससे अनभिज्ञ न थी । रुद्रसर्ज इतना बीमार हो गया कि उसके बचने की कोई आशा नहीं रही । उसके कोई संतान न थी । इसलिए उसने रानी चेन्नम्मा के परामर्श से गुरुलिंग मल्लसर्ज नामक एक बालक को गोद ले लिया । इस समारोह के दूसरे दिन ही रुद्रसर्ज स्वर्ग सिधार गया ।

किन्नूर के राजा की मृत्यु और उसके दत्तक लेने का समाचार दक्षिण के कंपनी प्रतिनिधि थैकरे के पास पहुँचा । तत्काल उसने अनाधिकारी होते हुए भी उस दत्तकता को अवैध घोषित कर दिया और चेन्नम्मा को लिख भेजा कि राज्य का सारा शासन भार दीवान मल्लप्पा शेट्टी को सौंप दिया जाये । रानी ने थैकरे को स्पष्ट लिख दिया-"थैकरे को कोई अधिकार नहीं है कि वह हमारे राज्य प्रबंध अथवा उत्तराधिकारी के संबंध में कोई हस्तक्षेप करे ।"

मुँह तोड़ उत्तर पाकर थैकरे ने कप्तान ब्लैक, कप्तान सिविल और लेफ्टीनेंट डेटन के नेतृत्व में एक बड़ी सेना किन्नूर को घेरने के लिए भेज दी । रानी तो प्रतीक्षा कर ही रही थी । उसने नगर-नगर में युद्ध घोषित कर दिया और राष्ट्रीय प्रार्थना के बाद वाली प्रतिज्ञा देश-भक्त नागरिकों तथा सैनिकों के बीच गूँज उठी-"हम लोग तब तक लड़ेंगे जब तक ब्रिटिश लोगों के सिर धराशायी नहीं हो जाते । हे माता ! तेरा अन्न खाया, तेरा रक्षण पाया है । इसलिए उसको आज प्राण देकर उऋण होंगे ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वीर पुरुष के वेश में रानी का नेतृत्व पाकर किन्नूर के रणबाँकुरे अंग्रेजों पर टूट पड़े । घमासान युद्ध हुआ और शत्रु पराजित होकर भाग खड़ा हुआ । किंतु तभी समाचार पाकर सेनापति थैकरे स्वयं एक बड़ी सेना लेकर आ पहुँचा । पुनः घमासान युद्ध प्रारंभ हो गया । इधर रानी, उसके सरदारों तथा सैनिकों की बंदूकें व तलवारें शत्रु का सफाया कर रहीं थी और किले में चेन्नम्मा की सजाई तथा मोर्चा पर जमाई तोपें दुश्मन पर गजब ढा रही थीं । रानी के विश्वस्त सरदार रामण्या की गोली से सेनापति थैकरे का काम तमाम हो गया । उप-सेनापति चैपलिन घबराकर भागने को हुआ कि सहसा किले की तोपों ने दहाड़ना बंद कर दिया । चैपलिन का साहस बँध गया किंतु रानी आश्चर्य से जड़वत हो गई । वह सहसा किले का निरीक्षण करने चल पड़ी । रानी को जाते देखकर सरदार हताश हो गए और सैनिक निराश । फिर भी वे किले की ओर हटते हुए युद्ध करते रहे ।

यद्यपि रानी मल्लप्पा शेट्टी और वेंकटराय जैसे गद्दारों को फाँसी दिलवा चुकी थी लेकिन अंग्रेजों ने राज्य के लालच देकर अनेक देशद्रोही तथा विश्वासघाती पैदा कर रक्खे थे । रानी जब किले में पहुँची तब पता चला कि समर-भंडारी शिवसप्पा ने बारूद में गोबर तथा बालू मिलवा दी है । इसी के कारण तोपें बेकार हो गई हैं । रानी ने तलाश किया किंतु उस अव्यवस्था में वह विश्वासघाती न मिला । रानी जौहर की भावना से किले से बाहर की ओर चली ही थी कि अंग्रेज सेना किले में घुस आई । देशद्रोही शिवसप्पा ने अंग्रेजों से राज्य पाने के लालच में किले का सिंह द्वार खोल दिया था । एक गद्दार के कारण सुखद नाटक का उपसंहार दुखांत हो गया ।

रानी अपने सरदारों के साथ कैद कर ली गई । सरदारों को तो तत्काल फाँसी दे दी गई किंतु रानी चेन्नम्मा को पूरे परिवार के साथ कुछ दिन कैद रखकर और बाद में विष देकर मार डाला गया । इस प्रकार यद्यपि किन्नूर की वीर रानी चेन्नम्मा तो बहुत पहले चली गई किंतु उसका यश आज भी विद्यमान है और आगे भी रहेगा । वह भारत की पुत्री-रत्न महान् लक्ष्मीबाई से किसी प्रकार कम न थी । अस्तु उन्हीं के समान श्रद्धा एवं आदर की पात्री हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बेगम हजरत महल

अवध के नवाब वाजिदअली शाह की सैकड़ों बेगमों में से बेगम हजरत महल भी एक थी । अपने रंग-रूप तथा व्यवहार कुशलता के कारण हजरत महल पर नवाब की विशेष कृपा दृष्टि थी । उसे अन्य बेगमों की तुलना में अधिक सुविधाएं प्राप्त थीं । उसे केसर बाग में एक अलग कोठी, पचासों दास-दासियाँ, सजाव-शृंगार तथा विलास सामग्री के अतिरिक्त ढाई-तीन हजार मुद्राएं अपने निजी खर्च के लिए अलग से मिलती थीं ।

वाजिदअली शाह का संपूर्ण जीवन भोग-विलास की विभीषिका कहा जा सकता है । स्त्रियों के संग नाच-रंग और शराब-कबाव में डूबा रहना उसका दिन-रात का काम बना हुआ था । हास-परिहास, व्यंग्य-विनोद, नाटक-स्वांग और भाड़ों की लीलाएं उसके नवाब जीवन की शान-शौकत बन गई थीं । प्रजा की क्या दशा है, राजनीति किधर जा रही है, आसपास सारे देश में क्या हो रहा है, राज्य प्रबंध का क्या हाल है-इन सब बातों की न तो वाजिदअली शाह को खबर रहती थी और न वह इसकी आवश्यकता अनुभव करता था । उसी के अनुसार उसके दरबारी, मंत्री, सरदार, सैनिक तथा महल की सारी बेगमें भी दिन-रात इन्हीं खुराफातों में रहती थीं । भोग-विलास तथा हास-परिहास के सिवाय किसी को दीन-दुनियाँ की कुछ खबर ही नहीं थी । पूरा अवध आलस्य, विषय-विलास और अज्ञान में डूबा हुआ था ।

किंतु अवध के इस अंधेरे और बेखबरी के माहौल में एक व्यक्ति ऐसा भी था जो सबसे अधिक सुविधा-सामग्री उपलब्ध होने पर भी इससे ऊपर उठा हुआ था और वह थी बेगम हजरत महल । हजरत महल वाजिदअली शाह की बहुत प्यारी बेगम थी । वह उसकी प्रसन्नता के लिए सर्वस्व निछावर कर देने को तैयार रहता था । उसने इस बेगम के लिए नाच-गाना सीखने के लिए विशेष प्रबंध कर दिया था । किंतु हजरत महल के अधरों पर वह मादकताभरी मुस्कान कभी नहीं आ पाती थी, जिसे देखने के लिए वाजिदअली शाह सदा लालायित रहता था । हजरत महल प्रायः गंभीर रहकर कुछ सोचती-सी रहती थी । भोग-विलास और हास-परिहास में उसे जरा भी रुचि नहीं थी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब अन्य सारी बेगमें रात के नाच-रंग और शराब-कबाव की खुमारी में सबेरे धूप चढ़ जाने तक सोती रहती थीं, तब बेगम हजरत महल अलस सुबह ही उठकर नित्य कर्मों से निवृत्त होकर नमाज-नियाज में लग जाती थी । उसकी चिंता तथा गंभीरता का कारण बहुत बार अन्य बेगमें पूछती और कहतीं कि क्या मुर्दों जैसी जिंदगी बनाए रहती हैं ? खुदा का दिया जब सब कुछ पास है, तो दुनियां के मौज-मजे लूट । छोटी-सी जिंदगी को इस तरह की फिक्री और परेशानियों में गँवा डालने में कौन-सी अक्लमंदी है ?

इस पर हजरत महल का एक ही उत्तर होता जिसे सुनकर सारा हरम उसकी मजाक बनाता और मखौल उड़ाता । वह कहती-"जब अवध की सल्तनत पर काले बादल मँडरा रहे हैं, पूरे मुल्क में फिरंगी अपने पैर जमाने जा रहे हैं, आजादी, इज्जत और हकूक खत्म होते जा रहे हैं, जगह-जगह जुल्म और लूट-खसोट का बाजार गर्म है, मजहब और ईमान के सामने खतरा खड़ा हुआ है, तब हिंदुस्तानियों और खासतौर से शाही खानदानों के लिए जिन पर कि रियाया की खुशहाली, बहबूदी और हिफाजत मुनहस्सिर है, इस तरह ऐशो-इशरत की गंदी जिंदगी जीना किसी तरह भी मुनासिब नहीं है । अंग्रेज आज हिंद का गनीम (लुटेरा) बन गया है । कंपनी सरकार अजदहे की तरह पूरे मुल्क को निगलती चली जा रही है । ऐशो-इशरत की गंदी जिंदगी एक तो यों भी इन्सानी जिंदगी नहीं है । फिर जिस वक्त मुल्क को चारों तरफ से खतरा घेरे हुए हो, विकास और विरासत खतरे में पड़ी हो तब तो यह नाच-रंग और हँसी-खेल का वक्त नहीं हो सकता । यह वक्त है लड़ने-मरने और मुल्क में एका पैदा करने का जिससे कि पूरे पैर जमने से पहले ही फिरंगी को हिंद से बाहर निकाला जा सके । खुदा न करे, अगर अवध और अवध के शाही खानदान की यही हालत रही और उसने वक्त रहते आँखें न खोलीं तो हो सकता है कि आज का यह शाही विकार किसी बड़े खौफनाक खतरे का कारण बन जाए ।"

हरमसरा का पूरा अमला हजरत महल की बात सुनता, उसकी खिल्ली उड़ाता और कहता-"लो यह तो बेवक्त ही बूढ़ी हो गई । इस पर तो खुदा की मार ही समझो जो उन सब फिक्रों को अपने सिर पर ले बैठी है जिनसे हम बेगमों का कोई सरोकार नहीं है । अपनी सल्तनत खुदा बचाये रखे, हमें सारे मुल्क से क्या लेना-देना, चाहे बचे या फिरंगियों के पेट में चला जाए । ऐसे शानदार और गरीब परिवर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिगालम अपने बादशाह सलामत की तरफ, ऐसी किसकी जुर्रत है जो नजर उठाकर देखे । खुदा की कसम, जिस दिन यह फिरंगी अवध की तरफ मुँह करेंगे इन पर ऐसा कहर बरपा हो जाएगा कि जमीन-आसमान कहीं भी तो ठिकाना न मिलेगा ।" बुद्धिमती हजरत महल उन मूर्खाओं पर एक हसरत भरी नजर डालती और मन ही मन रोकर परमात्मा को याद कर लेती ।

बेगम हजरत महल ने अपने लिए भोग-विलास और हास-परिहास के सारे द्वार बंद कर दिए और भयानक भविष्य से जिसको कि वह अपनी दूर दृष्टि से देख रही थी, टक्कर लेने की तैयारी करने में जुट गई । वह नित्य प्रति घंटों पढ़ती, बाहर की गतिविधि जानने के लिए अपने आदमी भेजती, फिरंगियों की चालों को लिखती और उन पर विचार करती । दरबारियों, सरदारों तथा शाही खानदान के लोगों को राष्ट्रीय प्रेरणा देती । सरकारी कागजात पढ़ती, राज-काज में दिलचस्पी लेती, सेना और शक्ति का अनुमान लगाती और राजनीतिक गतिविधियों का अध्ययन करती । वह हरम की चहारदीवारी और घने परदे में रहकर राज्य और जनता के हित में जो कुछ कर सकती थी, करती रहती थी । किसी विद्वान् की इस उक्ति को कि "नारी अबला कदाचित् प्रकृति से नहीं परिस्थितियों से अधिक हो जाती है और यही परिस्थितियाँ उसे सबला भी बना देती हैं । उन परिस्थितियों में नारी अपने सारे बंधनों से मुक्त होकर आग-पानी और तूफान से भी संघर्ष लेने में पीछे नहीं हटती"-बेगम हजरत महल ने अपने जीवन से चरितार्थ कर दिखाया ।

सन् अठारह सौ छप्पन-सत्तावन के उस उथल-पुथल के समय में जो होना था वह वाजिदअली शाह का भी हुआ । अंग्रेजों ने मौका पाते ही नवाब वाजिदअली शाह को कैद कर लिया और अवध का राज्य कंपनी साम्राज्य में मिला लिया । अंग्रेजों के इस अन्याय से बेगम हजरत महल का हृदय भयानक रोष से भर गया और समय की धैर्य पूर्वक प्रतीक्षा करती और स्वतंत्रता के लिए तैयारी करती रही ।

समय आया और पूरे भारत में सन् अठारह सौ सत्तावन का इतिहास प्रसिद्ध स्वातंत्र्य संग्राम आरंभ हुआ । हजरत महल तो इसी समय की प्रतीक्षा कर ही रही थी । उसने शासन सत्ता अपने हाथ में लेने की घोषणा के साथ २० मई १८५७ को लखनऊ के किले पर विद्रोह सूचक तोप लगवा दी । सबसे पहले हजरत महल ने जनता के लिए इस आशय का एक फरमान निकाला-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"हर हिंदू-मुसलमान को मालूम हो कि हर इन्सान को तीन चीजें सबसे ज्यादा प्यारी होती हैं । धन, धर्म और इज्जत । इन चीजों की रक्षा आजादी और स्वदेशी शासन में ही हो सकती है । फिरंगी इन चीजों के दुश्मन हैं । इसलिए हर हिंदू, मुसलमान को चेतावनी दी जाती है कि यदि अपने धर्म, ईमान की रक्षा चाहते हो तो फिरंगियों को अपने देश से मार भगाओ । उन्हें अपने पास पनाह मत दो और हमारी सरकार की फौज में शामिल होकर उनसे युद्ध करो ।"

बेगम हजरत महल के इन उद्‌गारों का बड़ा प्रभाव पड़ा और अवध की जनता संगठित होकर अंग्रेजों के साथ लड़ने को तैयार हो गई । अनंतर उसने लखनऊ के पुराने सरदारों, मंत्रियों तथा दीवानों को फिर बुला लिया और राज्य प्रबंध तथा सेना में उन्हें समुचित सम्मान के साथ स्थान दिया । उसने अनुभवी तथा तपे हुए सरदार रघुनाथसिंह, घमंडीसिंह, रामभजन, गजाधरसिंह, शाहबुद्दीन खाँ, मखदुमबख्श आदि को क्रांति सेना का सेनानी तथा विचार एवं संचालन सभी का पार्षद बनाया । साथ ही उसने अवध की वह सारी सेना फिर वापस बुला ली थी जिसको अंग्रेजों ने वाजिदअली शाह की गिरफ्तारी के बाद बर्खास्त कर दिया था ।

इस प्रकार पूरी लड़ाई के बाद बेगम हजरत महल ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई शुरू कर दी और आप सेना का संचालन करने लगी । उसने अपनी ताकत बढ़ाने के लिए अवध के मातहत जमींदारों तथा जागीरदारों को एक भाव भरा युद्ध-निमंत्रण भेजा जो इस प्रकार था-"खुदा ताला ने हमारे बाप-दादा का मुल्क हमें फिर वापस दे दिया है । अब फिरंगियों को मुल्क के बाहर मार भगाना आप लोगों का काम है । सब लोग मिलकर मैदान जंग में आयें और जगह-जगह छिपे फिरंगियों को ढूँढ़-ढूँढ़कर मुल्क से बाहर खदेड़ दें । हमारी सरकार पहले से ज्यादा आप लोगों की इज्जत करेगी और हो सका तो जल्दी ही लगान की माफी कर अपने इलाके में आप लोगों को आजाद कर देगी । इसलिए आप लोग आइए और मुल्क की आजादी की लड़ाई में हमारा साथ दीजिए ।"

बेगम हजरत महल के इस आह्वान पर गुसार गंज, गोंडा, सैदपुर, नानयारा व महमूदाबाद आदि क्षेत्रों के जमींदार व जागीरदार सोना तथा सामान लेकर बेगम की मदद को लखनऊ आ पहुँचे । इस प्रकार अपनी ताकत संगठित कर उसने अंग्रेजों के विरुद्ध भयानक अभियान प्रारंभ कर दिया ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बेगम हजरत महल अपनी कोठी में सप्ताह में तीन बार दरबार लगाती, क्रांति तथा युद्ध की स्थिति पर विचार-विमर्श करती, युद्ध को आगे बढ़ाने की योजना बनाती, सरदारों तथा सेना में अपने मार्मिक वक्तव्यों द्वारा प्रेरणा तथा विश्वास बढ़ाती और मोर्चों की स्थापना करती । इतना ही नहीं, वह परदानशीन बेगम केवल महल में बैठकर ही यह सब प्रबंध करती हो, ऐसा नहीं था बल्कि वह हाथी पर खुले हौदे में बैठकर और एक हाथ में क्रांति का झंडा और एक हाथ में तलवार लेकर खुद मोर्चों पर जाती और रणक्षेत्र में सेनाओं का संचालन करती । बेगम हजरत महल की इस वीरता का इतना प्रभाव पड़ा कि पूरा अवध प्रांत जागरूक होकर उठ खड़ा हुआ और लखनऊ से अंग्रेजों के पैर उखड़ गए ।

उसके इस हौसला, पुरुषार्थ, वीरता और सम्मान को देखकर अन्य बेगमें ईर्ष्या से जलने लगीं । उन्होंने उसका विरोध किया और कलकत्ता में कैद अपने पति को लिखकर भेजा कि हजरत महल ऐसी आफत की परकाली है कि खुद हाथी पर खुले हौदे में बैठकर बिना किसी परदे में तिलंगों के आगे-आगे फिरंगियों से जंग लड़ने जाती है । उसकी आँखों का पानी मर गया है । उसे शाही इज्जत तथा विकार का मुतलक (थोड़ा) भी ख्याल नहीं रह गया है । मरदाने कपड़े पहनकर मर्दों की तरह मर्दों के बीच आती-जाती, बैठती और बात करती है । उसने हुकूमत की बागडोर भी अपने हाथों में ले ली है । किंतु महामना हजरत महल ने इसकी तनिक भी परवाह नहीं की और साफ कह दिया कि हया औरत के दिल में रहने वाला सवाल है । उससे कपड़ों और जरूरत के काम करने से कोई सरोकार नहीं है । जब इस तरह की मुसीबत आई हुई हो तब मैं परदे में छिपकर किसी तरह भी नहीं बैठ सकती । मैं अपना फर्ज पूरा करूँगी और जरूर पूरा करूँगी, इससे मुझे कोई ताकत या ताकीद नहीं रोक सकती ।

लखनऊ से पैर उखड़ते देखकर अंग्रेजों ने चारबाग, बेलीगारद, आलमबाग और गोलगंज आदि मोर्चों पर अपनी सारी ताकत झोंक दी लेकिन बेगम हजरत महल ने उनके पैर टिकने न दिए । उसकी शक्तिशालिनी तोपें गरजती रहीं और स्वाधीनता से प्रेरित सिपाही जी-जान से जूझते रहे ।

अंत में फैजाबाद तथा दिल्ली से मौलवी अनेमअली तथा फिरोज शाह के साथ असमद अल्लाह शाह ने क्रांति के लखनऊ संगठन में फूट डालकर बेगम की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ताकत कमजोर कर दी । बेगम को लखनऊ छोड़कर बूँदी आना पड़ा । रानी लक्ष्मीबाई की तरह बेगम हजरत महल का भी पीछा किया गया और बूँदी में घेर लिया गया । नेपाल के राणा बहादुर जंग ने उस वीर बाला को आश्रय दिया, जहाँ वह इज्जत से जीती हुई अप्रैल सन् १८५७ में स्वर्ग सिधार गई ।

कहना न होगा कि बेगम हजरत महल ने देश के लिए जो कुछ किया जा सकता था, कर दिखाया और सिद्ध कर दिया कि नारी जब अपना स्वरूप सम्भालती है तो अबला से सबला बनकर बड़े से बड़ा काम कर दिखाती है ।

क्रांतिकारिणी कामा

वह क्रांतिकारिणी वीरांगना भारत के राजनीतिक क्षितिज पर उस समय उदित हुई जब गाँधी जी अप्रसिद्धि के सागर में थे, अन्य अनेक मोतियों और जवाहरों की तरह खोये हुए एक साधारण वकील थे । श्री जवाहरलाल नेहरू किसी स्कूल में पढ़ रहे थे । उस समय इस महिला ने बड़े धैर्य एवं वीरता से भारत की स्वतंत्रता के हेतु संघर्ष आरंभ किया । देश से दूर देश-निकाले की दीर्घकाल तक वेदना सही, जेल में रहीं और अगणित कष्ट झेले । उन्होंने संपूर्ण यूरोप का दौरा किया और भारतीय स्वातंत्र्य के पक्ष में न केवल जनमत तैयार किया, प्रत्युत सहायता भी एकत्रित की । उन्होंने मानों संपूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य को ही चुनौती दे डाली थी । अनेक भारतीय क्रांतिकारियों को उन्होंने बम बनाना भी सिखाया और इन सबसे ऊपर जो काम उन्होंने किया, वह था भारत को राष्ट्रीय-ध्वज के रूप में तिरंगे झंडे का दान । यह वही तिरंगा था, जिसने विगत वर्षों में हमारे सैकड़ों स्वातंत्र्य-सेनानियों को राष्ट्रीय-गौरव की रक्षा के हेतु अपने प्राणों तक को उत्सर्ग कर देने की प्रेरणा दी थी ।

प्राय: शहीदों के बारे में कहा जाता है :-

शहीदों की मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले ।
वतन पर मिटने वालों का यही कायम निशां होगा ॥

लेकिन कुछ शहीद ऐसे भी होते हैं, जिनका न कोई मजार बनता है और न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस पर मेले ही लगते हैं । कुछ ऐसे ही अनजाने, अनगाये और अनरोये शहीदों में हमारे भारत के राष्ट्रीय-ध्वज तिरंगे की जननी श्रीमती भीकाजी कामा भी थीं ।

श्रीमती भीकाजी कामा का जन्म बंबई में मध्यम श्रेणी के एक पारसी परिवार में हुआ था । उनके पिता सोराब जी फ्रामजी पटेल एक सफल व्यापारी और अत्यंत दूरदर्शी, अनुभवी एवं जीवन के पारखी थे । उन्होंने जहाँ कु० कामा को पूर्ण सुख-सुविधाओं से पाला-पोसा, वहाँ जीवन का वास्तविक मूल्यांकन करने और स्वयं को परिस्थितियों के अनुसार ढाल लेने की योग्यता भी प्रदान की ।

भिक्कू जैसा कि उनको घर में पुकारा जाता था, बचपन से ही सामाजिक कार्यकलापों में बहुत रुचि लेती थीं । सन् १८८५ में कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ । भिक्कू अभी शैशव से बाहर कदम ही रख रही थीं, किंतु उन्होंने अनुभव किया कि यह नवीन चेतना भारतीय जनता को निकट भविष्य में विद्रोह करने और साम्राज्यवादी सत्ता का जुआ उतार फेंकने के लिए तैयार करेगी ।

उस समय स्त्रियाँ घूँघट से बाहर मुँह निकालना भी अपराध समझती थीं, रसोई घर ही उनका एकमात्र कार्यक्षेत्र था । ऐसे समय में भिक्कू ने रूढ़िवादी परंपराओं को तोड़कर महिलाओं का संगठन किया । उनके इस कार्य से स्त्री-वर्ग में जिस राष्ट्रीय चेतना का उद्भव हुआ, वह आज के नारी-स्वातंत्र्य का बीज था ।

भिक्कू अब युवा हो चुकी थी । पिता उनके इस सामाजिक एवं राजनीतिक कार्य से आतंकित से हो उठे थे । अत: उन्होंने एक धनी एवं योग्य वर श्री रुस्तम जी कामा से उनका विवाह कर दिया । किंतु धनी घराने में विवाह और विपुल भोग-सामग्री की उपलब्धि भी उनके मिशन को रोक नहीं सकी । अंतत: उनकी बढ़ती हुई कार्यवाहियों ने उन्हें पति से अलग होने पर मजबूर कर दिया ।

वक्त गुजरता गया । अचानक श्रीमती कामा बीमार पड़ीं और चिकित्सा के लिए लंदन चली गईं । वहाँ उनका आपरेशन हुआ और वह पुन: स्वस्थ हो गईं । वह शीघ्र ही भारत लौटने वाली थीं, लेकिन परिस्थितियों के गर्भ में कुछ और ही छिपा था । उसी समय संयोगवश उनकी भेंट प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा से हो गई । उन दिनों वे ब्रिटिश प्रगतिवादी वर्गों में भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम के पक्ष में प्रचार कर रहे थे । उनकी अद्भुत वक्तृता से प्रभावित होकर श्रीमती कामा की देश भक्ति भी पुन: जागृत हो उठी । बहुत शीघ्र ही लंदन निवासी हाइड पार्क में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रीमती कामा के भाषण भी सुनने लगे । वह भारत की ब्रिटिश सत्ता पर लगातार कटु प्रहार करती रहती थीं ।

ब्रिटिश अधिकारी श्रीमती कामा के इस अभियान को किसी भी मूल्य पर कुचलने के लिए सन्नद्ध हो गए । इससे पूर्व कि ब्रिटिश अधिकारी अपने षडयंत्र में सफल हो पाते, श्रीमती कामा ब्रिटिश चैनल को पार कर फ्रांस जा पहुँची । फ्रांस में उन्होंने एक छोटा-सा बोर्डिंग हाउस खोल लिया और लगातार ३५ वर्ष तक यही उनका स्थायी निवास रहा । यहाँ से वे समय-समय पर स्वातंत्र्य-सेनानियों को प्रेरक संदेश भेजती रहतीं, पुस्तिकायें वगैरह प्रकाशित करतीं और कभी-कभी भागे हुए क्रांतिकारियों को आश्रय दिया करतीं ।

ब्रिटिश सरकार ने फ्रांसीसी सरकार पर दबाव डालना शुरू किया कि वह श्रीमती कामा को ब्रिटिश सत्ता को सौंप दें, किंतु फ्रांसीसी सरकार ने इस अनुरोध को स्वीकार नहीं किया । ब्रिटिश सरकार ने श्रीमती कामा का भारत-प्रवेश निषिद्ध कर दिया । इस कार्यवाही का उत्तर श्रीमती कामा ने 'वंदे मारतरम्' नामक पत्र का फ्रांस से प्रकाशन करके दिया ।

उन्हीं दिनों श्यामजी कृष्ण वर्मा के पत्र 'इंडियन सोशियालाजिस्ट' में उनका एक संदेश एक खुले पत्र के रूप में प्रकाशित हुआ । इसमें उन्होंने भारतीय युवकों को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उभाड़ा था और भारतीय युवकों ने इस पत्र का उत्तर दिया था संपूर्ण भारतवर्ष में बम-विस्फोटों की एक क्रमबद्ध शृंखला द्वारा ।

१९०८ में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन जर्मनी में हुआ । इसके संयोजकों में प्रसिद्ध फ्रांसीसी क्रांतिकारी समाजवादी नेता जीन जोर भी थे, जिन्होंने श्रीमती कामा को भी सम्मेलन में उपस्थित रहने का निमंत्रण दिया । सम्मेलन में उनका परिचय भारत की विशिष्ट प्रतिनिधि की हैसियत से दिया गया ।

जब स्वस्थ शरीर और मंझले कद की, पूरी बाँहों की ब्लाउज और साड़ी में लिपटी श्रीमती कामा भाषण देने खड़ी हुईं, तब दर्शक उत्सुकता से उनका वक्तव्य सुनने के लिए आतुर हो उठे । श्रीमती कामा ने भारत में ब्रिटिश सत्ता के पक्षपात, अत्याचार एवं अन्याय के विरुद्ध उत्तेजक भाषण देते हुए एकाएक साड़ी की लपेट में से एक बंडल निकाला, जिसमें भारत का गौरव तिरंगा झंडा छिपा हुआ था ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच १८ अगस्त १९०८ को प्रथम भारतीय तिरंगा ध्वज, वह ध्वज जिसने भविष्य में भारत के स्वतंत्रता प्रेमियों को संगठित हो, स्वराज्य संग्राम में जूझ पड़ने के लिए प्रेरित किया था, श्रीमती कामा ने सूटगर्ट नामक जर्मनी के उस नगर में गौरव से लहरा दिया और तालियों की गड़गड़ाहट का उत्तर दिया श्रीमती कामा ने इस गर्जना के साथ-"अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है । यह ईश्वरीय आज्ञा है, आदेश है ।"

लगातार ३५ वर्ष तक श्रीमती कामा देश से बाहर निष्कासित कठोरतम जीवन व्यतीत करती रहीं । जब वृद्धावस्था ने उन्हें असक्त बना दिया तभी उन्होंने भारत लौटने का निश्चय किया । सन् १९३५ के अंतिम दिनों में श्रीमती कामा ने भारत के वायसराय के पास एक प्रार्थना-पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने लिखा था कि "मैं पराधीन भारत में जीवित नहीं रहना चाहती परंतु जिस पर मेरा जन्म हुआ, उस पवित्र भूमि पर मैं मरना अवश्य चाहती हूँ । अतएव मुझे भारत आने की अनुमति दी जाय ।"

गौरांग प्रभुओं ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार किया एक शर्त पर-श्रीमती कामा लिखकर दें कि वह किसी भी राजनीतिक कार्य में भाग न लेंगी । उन्होंने लिख दिया क्योंकि वह अपने देश में मरना चाहती थीं ।

उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, वह रुग्णा थीं । उनके रोग की गंभीरता देखते हुए उन्हें बी० डी० पारसी अस्पताल में भर्ती कर दिया गया । वहाँ लगातार आठ महीनों तक वे मौन कष्ट सहन करती रहीं । अंततः १६ अगस्त १९३६ के दिन मृत्यु ने उनको अपने अंक में समेट लिया । किसी ने नहीं जाना कि इस वीरांगना ने भारत की कितनी अमूल्य सेवायें की हैं । इस महान् तपस्विनी, क्रांतिकारिणी और सबसे ऊपर भारतीय राष्ट्रीय-ध्वज की जननी का नाम भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम में कहीं भी अंकित नहीं किया गया, यह अत्यंत खेद का विषय है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रानी गिंडालो

महान क्रांतिकारिणी गिंडालो का जन्म नागालैंड की पर्वतीय उपत्यकाओं के मध्य बसे कोलाई परिवार के एक पुरोहित के यहाँ हुआ था । कोलाई जाति शिक्षा के प्रचार-प्रसार से बहुत दूर थी । अधिकतर लोग अपने बच्चों को परंपरागत व्यवसाय में या कृषि में लगा देते थे । गिंडालो के पिता पुरोहित थे इसलिए परिवार का प्रत्येक सदस्य शिक्षा के महत्व से परिचित था । बालिका गिंडालो की रुचि बचपन से ही पढ़ाई-लिखाई की ओर थी । अत: पिता ने उसे मिशन स्कूल में भर्ती करा दिया था । अपनी परिश्रमशीलता के परिणाम स्वरूप उसने मैट्रिक की परीक्षा बड़े अच्छे अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की ।

अब वह सोचने लगी कि मुझे कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कार्य अपने हाथ में लेने चाहिए जिनसे समाज और देश की कुछ सेवा हो सके । देश को पराधीनता से मुक्त कराने के लिए उसकी आत्मा छटपटाने लगी । छोटे बच्चे तो गीली मिट्टी के लोंदे के समान होते हैं, उसे किसी भी सांचे में ढाला जा सकता है । शिक्षण संस्थाओं का वातावरण और वहाँ के अध्यापकों द्वारा चलाई गई गतिविधियाँ छात्र-छात्राओं को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकतीं । जीवन के प्रारंभिक वर्षों में नन्हें-मुन्नों के कोमल मन पर जो संस्कार डाले जाते हैं वह बड़े स्थायी तथा अमिट होते हैं ।

गिंडालो का विद्यालय ऊपर से देखने में तो सामान्य श्रेणी का था पर उसमें जो गतिविधियाँ चल रही थीं उनके संबंध में विशेष कार्यकर्ताओं को ही जानकारी थी । यह विद्यालय भीतर ही भीतर क्रांतिकारियों का निर्माण कर रहा था । सामान्य जनता के मन में अंग्रेजी राज्य के प्रति वैसे ही विद्रोह की भावना जाग्रत हो चुकी थी । यह ऐसी आग थी जिसे दबाने के प्रयत्न ने उसे और भड़का दिया था । जब पूरा देश असहयोग आंदोलन को समर्थन दे रहा हो तब नागालैंड इससे वंचित कैसे रह सकता था ? लुक-छिपकर प्रचार कार्य जारी था । गुप्त सभाएं भी हो रही थीं । एक दिन उस विद्यालय के प्राचार्य ने अपने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा- "यह वह समय है जब मातृभूमि हमसे बलिदान माँग रही है । अब तक तुमने इस विद्यालय में जो कुछ ग्रहण किया है उसका उपयोग मातृभूमि की रक्षा के लिए होना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए । जो ज्ञान केवल मस्तिष्क की वस्तु बना रहे और व्यवहारिक जीवन में कार्यान्वित न किया जाये, वह अपूर्ण है, एकांगी है । यदि वास्तव में तुम्हारा मातृभूमि के प्रति प्रेम है तो उठो ! उन शृंखलाओं को तुरंत तोड़ डालो जिनसे मातृभूमि अपमानित हो रही है । अपने जीवन की सार्थकता स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा हेतु आत्मार्पण करने में ही है । यदि हम संगठित हैं तो बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकते हैं ।"

प्राचार्य के इस उद्‌बोधन का बालिका गिंडालो के मन पर विशेष प्रभाव पड़ा । आज वह समझ पाई कि पिछले दिनों से उसके मन में कौन सी अदम्य इच्छा बलवती होती जा रही थी । आज उसे सही दिशा मिली और मिला एक कार्यक्रम-भारत माँ की सेवा करने के लिए । उसका कोमल मन इन क्रांतिकारी विचारों से उद्वेलित हो उठा । वह समवयस्क तरुणियों से एक संगठन बनाने के लिए चर्चा करने लगी । कुछ ही दिनों में बीस तरुण बालाओं का संगठन बनकर तैयार हो गया । वे ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे गईं । सबने एक दूसरे का हाथ पकड़ कर संकल्प लिया-"जब तक शरीर में रक्त की एक भी बूँद शेष है तब तक मातृभूमि की आजादी के लिए संघर्ष जारी रहेगा ।" प्रवाहित होती हुई सरिता ने अविराम गति से कर्म करने और अविचल पर्वतों ने अंग्रेजों द्वारा दी जाने वाली प्रत्येक यातना को सहर्ष झेलने का मूक आशीर्वाद दिया ।

इस किशोरी दल के मस्तिष्क में अंग्रेजों के विरुद्ध अनेक प्रकार की योजनाएं बनने और बिगड़ने लगीं । गिंडालो खाने-पीने और विश्राम करने की बात को भूलकर क्रांतिधर्मी संगठन तैयार करने में लगी रहीं । इस दल के विद्यार्थी सदस्यों को स्वतंत्रता पास दिखाई देने लगी । पर बिना कुर्बानी दिए भला आज तक किसी भी देश को स्वतंत्रता मिली है ? इस बात को सभी सदस्य अच्छी तरह जानते थे । गिंडालो ने नागालैंड का दौरा शुरू कर दिया । उसने अशिक्षित व्यक्तियों के घर-घर जाकर पराधीनता का आभास कराया । कितनी ही प्रौढ़ पाठशालाएं खोलीं जिनके माध्यम से स्वतंत्रता का वातावरण तैयार किया गया । विभिन्न संगठन निर्मित किए गए । गिंडालो अपने साथियों के साथ जिस गाँव में जातीं वहीं क्रांति की आग लगाकर आती । लोग मर-मिटने को तैयार हो जाते । इस क्रांति की आग को जैसे ही खुली हवा मिलती कि दावानल भभक उठता था । गाँव-गाँव अंग्रेजों के विरुद्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभाएं होने लगीं । विदेशी वस्तुओं की होली जलाकर स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग की प्रतिज्ञाएं की जाने लगीं । छोटे-छोटे संगठनों को अस्त्र-शस्त्रों का अभ्यास कराया जाने लगा । अंग्रेजी ध्वजों को जला दिया जाता था । इस तरह गिंडालो ने पूरे नागालैंड में सशस्त्र क्रांति की आग फूँक दी । सिर पर कफन बाँधे देश भक्त अंग्रेजों को बाहर निकालने के लिए उतावले होने लगे ।

नागालैंड में जितने भी कबीले संगठित किए गए उन्हें शस्त्र पहुँचाने का कार्य गिंडालो चोरी छिपे करने लगी । यह सेना की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ गोरिल्ला युद्ध के लिए तैयार हो गईं । जब कभी उन्हें पुलिस की कोई टुकड़ी दिखाई देती तो यह दल उस पर टूट पड़ता और लड़ाई छिड़ जाती । इस जन क्रांति की ओर अंग्रेज सरकार का ध्यान आकर्षित हुआ । गुप्तचर विभाग का जाल फैला दिया गया । जब उन्हें पता चला कि इस आंदोलन के पीछे एक सोलह वर्षीय तरुणी का हाथ है तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि छोटे मस्तिष्क में इतनी बड़ी योजनाएं कार्य कर रही हैं । उस खतरनाक किशोरी को पकड़ने का वारंट निकाल दिया गया ।

कितने ही समय तक गिंडालो पुलिस तथा अंग्रेज अधिकारियों के लिए भी सिर दर्द बनी रही । उसका तथा उसके साथियों का पता लगाना मुश्किल हो गया । पर उस समय शासन के क्रूर पंजों से निकल भागना बड़ा कठिन कार्य था । लुका-छिपी के खेल में भी चोर बनने वाला बच्चा आखिर एक बार तो पकड़ा ही जाता है । गिंडालो भी अपने दल के सदस्यों के साथ पकड़ी गई । उन कोमल किशोरियों को अमानुषिक यातनाएं दी गईं । आंदोलन को कुचलने के लिए सारी शक्ति का उपयोग किया गया । बस्तियों में आग लगा दी गई । सैकड़ों क्रांतिकारियों को निर्दयतापूर्वक मौत के घाट उतार दिया गया ।

जनता की प्रिय देश भक्त गिंडालो के कैद होने का समाचार नागालैंड में ही नहीं पूरे देश में बिजली की तरह फैल गया । जनता द्वारा आयु में छोटी पर कार्य में महान् गिंडालो को 'रानी गिंडालो' की उपाधि से विभूषित किया गया । सचमुच वह रानी थी, नागालैंड की सारी जनता के हृदय मंदिर उसके राज सिंहासन थे । उसके संकेत पर प्रत्येक व्यक्ति मर-मिटने को तैयार था । अंग्रेज सरकार तक उसके क्रांतिकारी कारनामों से इतनी डर गई थी कि उसे आजन्म कारावास की सजा दी गई ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तत्कालीन नेताओं ने उसकी मुक्ति के लिए अनेक प्रकार के प्रयत्न किए । हरिपुरा कांग्रेस में प्रस्ताव पास किया किया । संसद में चर्चाएं हुईं । पर परिणाम कुछ नहीं निकला । अंग्रेज सरकार को उससे बहुत डर था । वह उसके नाम से ही इतना चौंकती थी कि किसी भी तरह मुक्त करने की बात पर तैयार न थी । आखिर वायसराय ने संसद में तथा आसाम विधानसभा में उससे संबंधित प्रश्न पूछने पर प्रतिबंध लगा दिया ।

स्वच्छंद वातावरण में विचरण करने वाली गिंडालो अब काल कोठरी में बंद थी । वह मूक होकर सारे कष्टों को सह रही थी, पर उसके हृदय में आशा की किरणें अभी भी शेष थी । वह जानती थी कि उसके दल के बचे हुए क्रांतिकारी सैनिक मातृभूमि के बंधनों को अवश्य काटने में जुटे रहेंगे और एक दिन ऐसा आयेगा जब देशवासी स्वतंत्र वातावरण में सांस लेंगे । जेल में रहकर भी वे अपने साथियों में सूक्ष्मरूपेण आत्मविश्वास की भावना को जगाती रहीं ।

अंततोगत्वा रानी की प्रतिज्ञा पूर्ण हुई । उन्हें अपने त्याग और बलिदान का परिणाम देखने को मिला । जीवन के मूल्यवान १८ वर्ष जेल में व्यतीत करने के पश्चात जब वह बाहर आई तो १९ जुलाई १९४९ को सारे देश ने उसे बधाई दी और नागालैंड के निवासियों ने अपनी इस तपस्विनी के शुभागमन पर विशाल समारोह का आयोजन किया । कारावास से मुक्ति के पश्चात उन्होंने देश के विकास में अनेक रूप से सहयोग दिया तथा नागालैंड के लिए उन्होंने कई योजनाएं बनाईं । भारत सरकार ने उनकी सेवाओं को सम्मानित करते हुए आजीवन पेंशन देने का प्रस्ताव उनके सामने रखा तो उन्होंने उस धन को देश सेवा के कार्य में लगा दिया । देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए रानी गिंडालो के त्याग और पराक्रम की गाथा हमें सदैव प्रेरणा प्रदान करती रहेगी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पार्वती देवी

अमृतसर के जलियांवाला बाग में क्रूर विदेशी शासकों द्वारा गोलियों से निरपराध, निहत्थे लोगों को असमय ही मृत्यु के मुख में जाते देख उनके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला प्रज्ज्वलित हुई । उसी क्षण से उन्होंने बत्तीस वर्ष की अल्पायु में ही अपना संपूर्ण जीवन देशवासियों को इस क्रूर शासन से मुक्ति दिलाने के संग्राम में ही लगा दिया ।

अपने देश बंधुओं पर हुए अत्याचारों को देखकर उनकी आत्मा रो उठी थी । उन्होंने जीवन की संपूर्ण अभिलाषाओं का दमन कर मुक्ति संघर्ष का मोर्चा सम्हाल लिया । हँसते-हँसते तप और त्याग का वह कंटकाकीर्ण मार्ग अपनाया जिस पर चल कर वे स्वयं भी धन्य हुईं तथा अपने अनेक भाई-बहनों का पथ-प्रदर्शन किया ।

त्याग और तपस्या की यह मूर्तिमान प्रतीक हैं श्रीमती पार्वती देवी । उन्होंने अमृतसर के स्वराज्य आश्रम में कई वर्षों तक अपनी सेवाएं निस्वार्थ प्रदान कीं थी । वहीं आश्रम में इनकी भेंट महात्मा गांधी से हुई । देश-सेवा की उत्कट इच्छा तो उनके तन-मन में बसी ही थी । गांधी का मार्गदर्शन पाकर ये आंदोलन में भाग लेने के लिए कटिबद्ध हो गयीं ।

कुछ समय उपरांत अपने भाई के साथ लाहौर आ गयीं । वहाँ से अंग्रेजों के विरुद्ध जनमत तैयार करने हेतु पंजाब का दौरा करती रहीं ।

इनका विवाह क्वेटा में डा० मिलखीराम के साथ हुआ था । किंतु दुर्भाग्यवश विवाह के ढाई वर्ष पश्चात ही डा० साहब अचानक दुर्घटना के शिकार होकर असमय ही परलोक सिधार गए । इस वज्रपात को भी उन्होंने धैर्य के साथ सहा ।

पत्नी के लिए अपने पति की मृत्यु से बढ़कर और कोई दु:खद घटना नहीं होती । किंतु इस समय उन्होंने धैर्य तथा विवेक से काम लिया तथा इस घटना में मनुष्य जीवन की नश्वरता की एक झांकी देखी । उन्होंने सोचा-'पंच तत्व से बना यह मिट्टी का शरीर एक दिन मिट्टी में मिलेगा ही । गिनी-चुनी सांसे ईश्वर ने मनुष्य को दी हैं, न मालूम कब समाप्त हो जायें । जितना जल्दी इस शरीर को परमार्थ प्रयोजन में लगा दिया जाय उतना ही अच्छा है । समाज का इतना अनुदान मिला है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्यों न इसका ऋण चुकाया जाये और मानव जीवन का सदुपयोग किया जाय । सुर दुर्लभ मानव शरीर पाकर भी पेट-प्रजनन तक ही सीमित रही तो यह जीवन व्यर्थ हो गँवा दूंगी ।' यह सोचकर उन्होंने अपना भविष्य का पूरा जीवन देश-सेवा में ही बिताने का निर्णय ले लिया ।

अपना खर्च जुटाने के लिए शिक्षिका पद पर नौकरी कर ली तथा बाकी बचा हुआ समय वे अन्य कार्यों के उपयोग में लगातीं ।

इस समय महिलाओं को प्रेरित एवं उत्साहित कर उन्हें मार्गदर्शन देने वाली यह प्रथम तथा अकेली महिला थीं । उनके इस प्रकार देश प्रेम से प्रेरित हो आंदोलनों में भाग लेने से अन्य महिलाओं में भी जागृति आने लगी थी । अब तक वे अपनी नौकरी से त्याग-पत्र दे चुकी थीं । कुछ ही वर्षों में इन्होंने राष्ट्रीय महिला समिति और कुमारी सभा की स्थापना कर मजबूत संगठन तैयार कर लिया । सन् १९२२ से लेकर १९४२ के बीच इन्होंने छः बार जेल की लंबी तथा कठोर यंत्रणाएं सहन कीं । फिर भी प्रत्येक बार और भी अधिक उत्साह एवं जोश से कार्य में जुट जाती थीं ।

व्यर्थ बैठे रहना और समय बर्बाद करना इन्हें बहुत अखरता था । थकना तो जैसे वे जानती ही न हों । निरंतर नयी-नयी योजनाएं बनाना व उन्हें कार्यान्वित करना ही इनका प्रमुख उद्देश्य था । अनीति एवं अन्याय का विरोध करने के लिए यदि कोई साथ नहीं देता तो ये अकेली ही डटकर मुकाबला करने को उद्यत हो जातीं ।

१९२२ के बाद यह प्रथम महिला थीं जिन्होंने गांधीजी के आंदोलनों में भाग लिया । ब्रिटिश शासन को जड़-मूल से उखाड़ने के लिए कई विशाल आयोजन एवं आंदोलन करती रहीं । इनमें सिस्टर निवेदिता तथा मीरा बहन की तरह अटूट आत्म-बल था ।

अपने देशवासियों में स्वाधीनता के भाव भरने एवं ब्रिटिश सत्ता के विरोध में ये खुले आम भाषण देतीं और गिरफ्तार होकर जेल की सख्त सजाएं भुगततीं । फिर भी इनके उत्साह में रत्ती भर भी कमी नहीं आई । दिन दूना और रात चौगुना होकर इनका उत्साह बढ़ता ही जाता था ।

मद्यपान के विरुद्ध आंदोलन छिड़ा तो ये शराब की दुकानों पर जाकर धरना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देतीं । विदेशी कपड़ों की होलियां जलाने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी ।

इनके साहसिक कार्यों को देखकर जनता बहुत प्रभावित होती थी । उनके हृदय में इनका गहरा स्थान था । महिलाओं के लिए तो जैसे ये अग्रदूत सेनानायिका की भूमिका ही अदा कर रही थीं । उनके निकट संपर्क में जो भी महिला आती वह प्रभावित हो जाती थी ।

सन् १९३२ तक तो इनकी कई सहयोगी महिलाएं तैयार हो गयीं थीं । इनके उत्साह में और भी वृद्धि हो गयी । उन्हें अपने सुनहरे स्वप्न पूर्ण होने की आशा की किरणें नजर आने लगी थी । उन्हें विश्वास था कि इसी गति से यदि महिलाओं की संख्या बढ़ती गयी तो शीघ्र ही ब्रिटिश सत्ता को नष्ट करने में सफलता मिलेगी ।

अपने व्यस्त दैनिक कार्यक्रमों में से भी ये कुछ समय निकाल लेती थीं और चंदा इकट्ठा करके क्रांतिकारियों के परिवारों को आर्थिक सहायता देने का काम भी साथ-साथ ही करती जाती थीं ।

कई बार उन्हें बस मालिकों से भी सत्याग्रह करना पड़ा था । जब उनके पास स्वयंसेवकों की भरमार हो जाती और एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए बस मालिक इन्कार कर देते तो ऐसी परिस्थितियों में उन्हें विवश होकर सत्याग्रह करने पड़ते थे । अनीति एवं अन्याय के विरुद्ध वे कभी सिर नहीं झुकाती थीं । आखिर बस मालिकों को पराजित होना पड़ता और वे अपनी बसों में उन सबको ले जाने के लिए तैयार हो जाते । ऐसे अवसरों पर भी वे कई बार जेल गयीं ।

बार-बार उन्हें जेल जाते देख लोग यहाँ तक कहने लग गये कि पार्वती जी की अस्थियाँ भी जेलों में ही गलेगीं । किंतु पार्वती जी भला ऐसी छोटी छोटी बातों से चुप बैठने वाली कहाँ थीं । उनके हृदयकुंड में निरंतर प्रतिशोध की जो अग्नि जल रही थी वह एक क्षण भी विश्राम नहीं करने देती ।

अनेक अवसरों पर उनके साहस की कठोर परीक्षा होती थी । यदि ऐसे समय में वे साहस एवं विवेक से काम न लेतीं तो हो सकता था उनके सहयोगी निरुत्साहित हो जाते, आंदोलन मिट्टी में मिल जाता व भविष्य की सभी योजनाएं गुड़-गोबर हो जातीं । यह तो उन्होंने निश्चय कर लिया था कि चाहे कितनी ही बाधाओं का सामना करना पड़े अपने कार्यों से विमुख नहीं होएंगीं ।

उनके अंतर्मन में बार-बार यह प्रश्न उठता था कि आंदोलनों में सभी पुरुष ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुरुष भाग लेते हैं । क्यों ? ईश्वर ने तो नर और नारी को समान प्रतिभाएं दी हैं । क्यों नहीं वे अपने भाइयों का हाथ बँटाकर सहयोग देती हैं । अत: उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि वे महिलाओं को भी तैयार करेंगी । इसके लिए प्रथम वे ही आगे बढ़ीं और अपनी बहनों को तैयार कर अपना संकल्प पूर्ण करने में सफल हुईं ।

अपने लक्ष्य प्राप्ति की उत्कट इच्छा रखने वाले निंदा, आलोचना एवं उपहासों की चिंता नहीं करते, निरंतर अपने कर्तव्य पथ पर ही आरूढ़ रहते हैं । लोगों ने विशेषकर महिलाओं ने ही उन्हें तरह-तरह के उलाहने दिए "इस तरह गाँव-गाँव व घर-घर में जाने तथा पुरुषों के साथ काम करने से तुम्हें क्या मिलेगा ?" परंतु इन सभी उपहासों को वे अपनी परीक्षा मानकर सहन करती रहीं एवं अपने मार्ग से विचलित नहीं हुईं ।

अपनी बहनों के उत्थान के लिए उन्होंने कई कार्य संपादित किए । इसके लिए उन्हें द्वार-द्वार खटखटाना पड़ा था तथा रूढ़िवादी महिलाओं की विभिन्न प्रकार की कटु आलोचनाएं सुननी पड़ी थीं ।

पर्दा प्रथा का इन्होंने घोर विरोध किया था तथा उसका अंत करने के लिए भरसक प्रयत्न किया था । महिलाओं को घर की चहारदीवारी में बंद देख उनका हृदय छटपटा रहा था । उन्होंने दृढ़ संकल्प लिया कि वे महिलाओं को वस्तुस्थिति का ज्ञान कराएंगीं एवं उन्हें अपनी दीन-हीन स्थिति से ऊपर उठाने में कोई कसर नहीं रखेंगीं ।

युगों-युगों से पददलित रही नारी का एकदम आगे आना तो असंभव था । जो महिलाएं काम तो करना चाहती थीं किंतु अग्रणी नहीं हो सकती थीं वे पार्वती जी को अग्रमागी देख उनके कार्यों में सहयोग देने को तैयार हो गयीं ।

पर्दा प्रथा विरोध के साथ ही वे शिक्षा प्रसार कार्य भी करती रहीं । निरक्षर नारियों को वस्तुस्थिति समझने तथा तदनुरूप ही स्वयं को ढालने में देर लगती है ।

राष्ट्रीय महिला समिति में निरंतर महिलाओं की संख्या बढ़ती जा रही थी । अब तक कुमारी सभा के संगठन में भी मजबूती आ गयी थी । कुछ ही समय में उनमें ऐसी परिपक्वता आ गयी थी कि असंख्य नारियां पार्वती जी के नेतृत्व में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर आंदोलनों में कूद पड़ीं । टोलियां बना-बनाकर पिकेंटिग करतीं, धरना देतीं । यह देख पार्वती जी की कार्य क्षमता और भी बढ़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गयी । इस प्रकार उन्होंने कर्मनिष्ठ महिलाओं को एक सूत्र में पिरोकर मजबूत संगठन तैयार कर लिया ।

सन् १९२२ में इन्होंने एक विशाल महिला सभा का आयोजन किया था जिसमें अपने ओजस्वी एवं विचारोत्तेजक भाषणों द्वारा ब्रिटिश शासन की तीव्र भर्त्सना की थी । इस आयोजन का प्रभाव नारियों पर इतना अधिक हुआ कि उनमें जागरूकता पैदा हो गयी । वे निर्भीकता से आंदोलनों में भाग लेने लगीं । सभी के रोम-रोम में देश प्रेम की लहर प्रवाहित हो गयी ।

किंतु इस आयोजन से अंग्रेजी सरकार की क्रोधाग्नि भड़क उठी । उनकी आँखें तो इनकी ओर लगी हुई थीं ही । परिणाम स्वरूप इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया ।

जब इनको गिरफ्तार किया गया था तब नारियों ने मिलकर इतना विशाल जुलूस निकाला जिसे देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गए । यह जुलूस करीब आधा मील लंबा था ।

इस अवसर पर लाठियाँ भी चली थीं । वे लाठियों की बौछारों को भी हँसते-हँसते सहन करती रहीं । उनके हृदय में जो देश-भक्ति समा गयी थी, देश-प्रेम का जो भूत सवार हो गया था उससे वे निडर होकर बढ़ती जा रही थीं । उस समय का वह हृदयद्रावक दृश्य देखते ही बनता था ।

अपने जीवन काल में उन्होंने पौने सात वर्ष की कठोर जेल यंत्रणाएं झेला था । इतने संघर्षमय जीवन एवं विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी उनके चेहरे पर कभी उदासी देखने को नहीं मिली, न उनके उत्साह में किसी प्रकार की कमी आई ।

वर्षों की दासता का कुप्रभाव इन थोड़े से वर्षों में मिटता दिखाई नहीं देता है । आज भी महिला जागरण के लिए कई अग्रणी महिलाओं की आवश्यकता है । कौन नारी ऐसी है जो अपनी बहनों की वीर गाथाएं सुनकर चुप बैठी रहेंगी । यदि नारियों का खून पानी नहीं हुआ है तो उनके विषय में पढ़-सुन कर रक्त में उबाल आए बिना न रहेगा । इनके चरण चिह्नों पर चलकर प्रत्येक नारी देश-सेवा के कार्यों में भाग लेने का साहस जुटा सकती है एवं अपने समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में सक्रिय सहयोग दे सकती है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वतंत्रता सेनानी शहीद-प्रीति लता

इच्छा तो बहुत थी गर्ल गाइड संस्था में भर्ती होकर समाज और देश की सेवा के लिए कुछ काम करें परंतु बाधा एक थी । पिता से सुन रखा था कि भारत में इस समय विदेशियों का शासन है जो देशवासियों को गुलाम बनाकर उनके प्रगति और सुख के अवसर छीन रहा है । इस शासन के प्रति घृणा के भाव प्रीति लता के मन में बचपन से ही घर कर गए थे । बालचर संस्था के नियमानुसार सभी स्काउटों को अपने देश के वर्तमान शासक और सरकार के प्रति निष्ठा रखने की शपथ लेना पड़ती थी । प्रीति लता का मानस इस शपथ के लिए किसी भी प्रकार तैयार नहीं हो रहा था । अपने सहपाठियों तथा साथियों के जोर देने पर प्रीति लता बालचर तो बन गयी परंतु उसने कभी अपनी मान्यता के विरुद्ध शपथ नहीं ली, भले ही अनुशासन भंग करने का दंड सहना पड़ा हो ।

किशोरावस्था में ही पड़ा देश प्रेम का बीज धीरे-धीरे अंकुरित होता गया और आगे चलकर एक पल्लवित-पुष्पित वृक्ष बन गया, जो विदेशी सरकार की नींद हराम करने लगा । सन् १८५७ में भी स्वातंत्र्य युद्ध का नेतृत्व करने वाली एक भारतीय महिला-रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के दांत खट्टे किए थे । इस वीर महारानी को ही अपना आदर्श मानकर प्रीति लता ने भी अपने समय में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए । जब वे प्रारंभिक कक्षाओं में ही थीं-तब उन्हें इतिहास के वे ही प्रसंग पढ़ना अच्छा लगता जिनमें स्वदेश भक्ति, वीरता, शौर्य, पराक्रम और साहस की प्रेरणाएं भरी पड़ी हों । कुछ बड़ी होने पर यह तो समझ में आ गया कि खून, आतंक, हत्या, डकैती और लूटमार मानवीय दृष्टि से अपराध हैं । परंतु जिन लोगों के अत्याचार समाप्त करने के लिए ये ही उपाय कारगर हों उन्हें दूसरे तरीकों से समझाया भी तो नहीं जा सकता ।

झांसी की रानी को अपनी प्रेरणा स्रोत मानने वाली, अविवाहित रहकर देश सेवा का व्रत निभाने के लिए कृत संकल्प कुमारी प्रीति लता का जन्म चटगाँव के एक साधारण परिवार में हुआ था । उनके पिता जोगबंधु नगरपालिका में एक छोटे से पद पर कार्य करते थे । पूरे परिवार की जीविका का साधन यही था । प्रीति लता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनकी विशेष प्रीति भाजन थी । इसी कारण वे उसे पुत्री होते हुए भी अपना बेटा ही कहा करते थे । प्रीति लता ने अपने पिता के द्वारा लाड़-प्यार से कहे गए इन शब्दों को भावी जीवन में साकार कर दिखाया ।

स्वयं को अभावों और गरीबी में रखते हुए भी जोगबंधु ने अपनी इस लाड़ली बेटी की शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबंध किया । स्कूल जाने योग्य होते ही वहीं की पाठशाला में भर्ती करवा दिया । जोगबंधु समय-समय पर अपनी बेटी को देश की स्थिति और गतिविधियों के विषय में भी बताया करते थे । प्रीति लता के मन में विदेशी शासन के प्रति आक्रोश का भाव यहीं पैदा हुआ ।

हाईस्कूल और इंटर की परीक्षाएं पास कर लेने के बाद वे आगे के अध्ययन के लिए कलकत्ता गयीं । बी० ए० की परीक्षा उन्होंने यहीं से उत्तीर्ण की और फिर पिता के नौकरी से अवकाश ग्रहण करने के बाद परिवार का उत्तरदायित्व सम्हालने के लिए वे वापस चटगाँव आ गयीं । वृद्ध होने के कारण जोगबंधु और दूसरा काम करने में भी असमर्थ थे । फिर भी उन्होंने अपनी बेटी को पढ़ने और किसी न किसी प्रकार स्वयं गृह व्यवस्था चलाने की बात कही । प्रीति लता जानती थी कि उनके पिता शारीरिक दृष्टि से इतने कमजोर हो गए हैं कि बुढ़ापे में अधिक परिश्रम करने से संभव है उनके स्वास्थ्य को गंभीर खतरा पहुँचे । प्रीति लता ने उन्हें घर बैठने और आराम करने के लिए बाध्य सा कर दिया । ममता पूरित हृदय से जोगबंधु के नेत्र सजल हो आये । उनका सीना गर्व से फूल उठा कि मेरी बेटी वास्तव में पुत्राभाव को महसूस नहीं होने दे रही है ।

प्रीति लता रोजगार की तलाश में व्यस्त हो गयी । इस तलाश में भी उन्होंने अंग्रेजों के सामने कभी न झुकने का निर्णय लिया । उस समय अधिकांश उच्च पदों पर अंग्रेज ही नियुक्त किए जाते थे । अच्छी नौकरी पाने के लिए अंग्रेजों की जी हुजूरी और चापलूसी करना आवश्यक था । वे चाहतीं तो स्वभाव से ही खुशामद प्रिय अंग्रेजों के सामने झुककर, उनकी प्रशंसा कर अच्छे पद पर नियुक्त हो सकती थीं । परंतु स्वाभिमानी कुमारी प्रीति लता ने इस प्रकार कभी अपने आत्माभिमान का सौदा नहीं किया और चटगाँव नगरपालिका के एक प्राथमिक विद्यालय में अध्यापिका बनकर ही संतोष कर लिया ।

एक बार चटगाँव में उस समय के पख्यात क्रांतिकारी नेता सूर्यसेन का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आगमन हुआ । सूर्यसेन देश भक्त और विप्लव की योजना के सूत्रधारों में से थे । प्रीति लता को इसकी खबर हुई तो वह सूर्यसेन से मिलने गयीं और अपनी आकांक्षा तथा भावनाएं व्यक्त कीं । सूर्यसेन प्रीति लता की स्वदेशनिष्ठ भावनाओं से बड़े प्रभावित हुए । उन्होंने कहा-"निश्चय ही तुम देश के लिए बहुत कुछ कर सकती हो ।"

प्रीति लता ने अपनी मूल समस्या सामने रखते हुए कहा कि मैं करना तो बहुत चाहती हूँ परंतु न तो कोई साथी मिलता है और न ही पारिवारिक उत्तरदायित्वों के सामने अवकाश है । बताइये ऐसी दशा में क्या किया जा सकता है ।

"साथी तो एक नहीं अनेक हैं, बहन"-सूर्यसेन ने बहन संबोधित कर जैसे प्रीति लता का हृदय जीत लिया । उन्हें आज तक इस संबोधन से किसी ने नहीं पुकारा था । उनके कान इस पवित्र संबंध की अभिव्यक्ति के शब्द सुनने के लिए तरसते रहते थे । पारिवारिक उत्तरदायित्वों के संबंध में उनके उस नये वयस्क भाई ने कहा-"जब सारे देश पर छाये संकट को दूर करना है तो परिवार की इतनी चिंता नहीं करनी चाहिए । फिर भी कुछ न कुछ व्यवस्था तो हो ही जायगी ।"

प्रीति लता को जैसे दिशा मिल गयी । उन्होंने निश्चय कर लिया कि भारतीय समाज को ही अपना परिवार मान कर काम करना पड़ेगा । कुछेक गिने चुने आत्मीय स्वजनों की चिंता में घुलते रहना और उसके लिए देशवासियों पर हो रहे अत्याचार, अन्याय तथा शोषण, दासता की दुर्दशा के प्रति उपेक्षा भाव रखना उन सरीखी निष्ठावान और व्रतशील नारी के लिए असह्य ही होना चाहिए । पारिवारिक उत्तरदायित्वों से मुक्त होकर क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने की बात जब उन्होंने अपने पिता से कही तो वे आश्चर्यचकित रह गए । स्वतंत्रता की माँग करने वाले कई व्यक्तियों का हश्र तथा परिवार की चिंता इन दोनों कारणों से वे दु:खी हुए और एकदम उबल पड़े ।

प्रीति लता ने अपने पिता की नाराजगी की कोई चिंता नहीं की । यदि कोई और अवसर होता तो शुरू से प्यार करते आ रहे, कभी नाराज न होनें वाले पिता की बात अपनी आकांक्षाओं को दबाकर भी मानती परंतु इस समय प्रश्न उनके जीवन लक्ष्य और देश सेवा का था । इन प्रश्नों पर वे अपने पिता तो क्या स्वयं से भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझौता नहीं कर सकती थीं । दृढ़ निश्चय के साथ उन्होंने अपना संकल्प बता दिया और सूर्यसेन के क्रांतिकारी संगठन में भर्ती हो गयी ।

इस संगठन में रहकर उन्होंने सभी अस्त्र-शस्त्रों का संचालन सीखा । निशानेबाजी और बंदूक चलाने का इतना अच्छा अभ्यास कर लिया कि वे शीघ्र ही संगठन के कार्यों तथा अभियानों में भाग लेने योग्य बन गयीं । सूर्यसेन और प्रीति लता के संगठन को पता चला कि चटगाँव के पास ब्रिटिश सेना का एक गुह्य और कठोर प्रबंध से सुरक्षित शस्त्रागार है तो उन दोनों ने निश्चय किया कि जैसे भी हो उसे लूटना चाहिए । इस लूट में काफी खतरों का सामना करना था । संगठन के पास वैसे ही कम आदमी थे, काम दुष्कर था । थोड़े से आदमी शास्त्रास्त्रों से लैस ब्रिटिश सेना का मुकाबला कैसे करेंगे ? फिर भी चलने का निश्चय कर ही लिया गया ।

संघर्ष का अभी तक कोई अनुभव न होने के कारण सूर्यसेन तथा उनके दल के कई व्यक्तियों ने प्रीति लता को वहीं रुकने के लिए कहा परंतु उन्होंने दृढ़तापूर्वक इन्कार कर दिया और कहा-"दल के पास वैसे ही कम साधन और संख्या बल है । इस पर भी आप लोग मुझे साथ न ले जाकर उसे और अशक्त बना रहे हैं । किसी भी दशा में मैं यहाँ रुकने के लिए तैयार नहीं हूँ । मरूँगी तो सबके साथ और काम करूँगी तो अभी ही ।"

जिद करने पर प्रीति लता को भी साथ ले जाना पड़ा । खतरे से न घबराने और साहस तथा धैर्य के साथ अपना कार्य करने वाली प्रीति लता ने इस अवसर पर अद्‌भुत शौर्य और पराक्रम का परिचय दिया । इस लूट में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही जिसके परिणाम स्वरूप शस्त्रागार सफलतापूर्वक लूटा जा सका । प्रीति लता के पराक्रम ने उन्हें दल का प्रतिष्ठित सदस्य बना दिया ।

लूट में प्राप्त शस्त्रास्त्रों तथा धन से दल को एक सुदृढ़ आधार मिला और क्रांतिकारियों तथा साहसी युवकों को एकत्रित कर उन्हें संगठन सूत्र में बाँधा गया । अब देश प्रेमी युवकों की एक छोटी सैनिक टुकड़ी सी बन गयी । अप्रैल १९३० की सफल लूट ने क्रांतिकारियों का आत्मविश्वास और मनोबल कई गुना बढ़ा दिया । योजना का अगला चरण बना-ब्रिटिश सेना से खुला सामना । अब प्रीति लता के दल के पास पर्याप्त सैनिक, शस्त्रास्त्र तथा साधन थे । परंतु अंग्रेजी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेनाओं की तुलना में उनका दल बौना ही था ।

ब्रिटिश सेना के पास जितने शस्त्र और संख्या बल था उतना प्रीति लता के दल में नहीं । फिर भी उनका दल अपने मनोबल, निष्ठा और साहस के कारण अंग्रेजों पर भारी पड़ा । वस्तुत: शक्ति का संबंध संख्या या साधनों से नहीं है । उसका स्रोत तो अंत:करण है जिसमें भावना, साहस और ध्येय निष्ठा विद्यमान होनी चाहिए और वह सभी क्रांतिकारियों के पास थी । इस कारण वे ब्रिटिश सेनाओं के लिए भारी पड़े ।

जलालाबाद में ब्रिटिश सेना तथा क्रांतिकारियों की मुठभेड़ में दोनों पक्ष के लोग मारे गये । क्रांतिकारियों का दल आगे बढ़ा और जलालाबाद की पहाड़ी से नीचे उतर कर वहाँ की छावनियों में घुस गया । यहाँ पर अंग्रेज सेना काफी संख्या में थी । इसलिए प्रीति लता ने अपने दल को छापामार पद्धति से लड़ने की सलाह दी । पहाड़ी से उतर कर सब लोग तितर-बितर होकर यत्र-तत्र मोर्चा लेने लगे । प्रीति लता और सूर्यसेन भी इधर-उधर हो गए । पुलिस और सेना को पता चला कि वे सब लोग बिखर गये हैं तो वह उन्हें ढूँढ़ने के लिए ढेरों की संख्या में निकल पड़ी । प्रीति लता ने ब्रिटिश सैनिकों से डटकर मुकाबला किया और नाजुक परिस्थितियों में भी स्वयं को बचाये रखा ।

बाद में पहाड़ तली अभियान में यूरोपीय क्लब पर आक्रमण करने के लिए प्रीति लता को दल का नेता चुना गया । प्रीति लता के नेतृत्व में उनके साथियों ने दृढ़ता और आत्मविश्वास के साथ क्लब पर आक्रमण किया । इस हमले के दौरान प्रीति लता घायल हो गईं और अपने साथियों सहित पुलिस से घिर गईं । उन्होंने अपने साथियों को भाग निकलने के लिए कहा । वे स्वयं तो चलने-फिरने में असमर्थ हो गयी थीं । प्रीति लता को अन्य क्रांतिकारी अपने कंधों पर उठा कर ले जाने की चेष्टा करने लगे । संकट को सिर पर मंडराता देखकर प्रीति लता ने अपनी चिंता किए बिना कहा-'दल की नेत्री होने के नाते मैं तुम लोगों को आदेश देती हूँ कि फौरन यहाँ से भाग निकलो ।' अनुशासन का ध्यान रखते हुए प्रीति लता के साथियों को विवश होकर आँखों में आँसू लिए स्वयं को ही बचा कर भागना पड़ा । प्रीति लता नहीं चाहती थीं कि उनके एक के कारण सब लोग पकड़े जायें ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुलिस का घेरा छोटा होता गया और भारतीय तथा अंग्रेज जवान पास आने लगे । घाव के दर्द से प्रीति लता की वेदना बढ़ने लगी । उन्हें महसूस होने लगा कि अब वे गिर पड़ेंगी तो अपनी जेब में पड़ी विष की पुड़िया निकाल कर मुँह में डाल दी और पुलिस के भारतीय जवानों को दुत्कारते हुए कहा-"देश के गद्दारो ! तुम्हारे गंदे हाथ मेरे जीवित शरीर को छू भी नहीं सकेंगे । मैं जा रही हूँ, परंतु याद रखना जिन लोगों का वफादार बनने के लिए तुम लोग अपना ईमान बेच रहे हो वे ज्यादा दिन नहीं टिकेंगे ।" यह २४ सितंबर १९३२ की बात है । तब एक देशभक्त, साहसी और वीर नारी मातृभूमि के लिए शहीद हो गयी । स्वाभिमान और देश भक्ति के रूप में उन्होंने जो उदाहरण अपने माध्यम से सामने रखा, वह आज के समय में भले ही अनावश्यक प्रतीति हो परंतु भावनाओं और गुणों के रूप में तो अनुकरणीय है ही ।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org